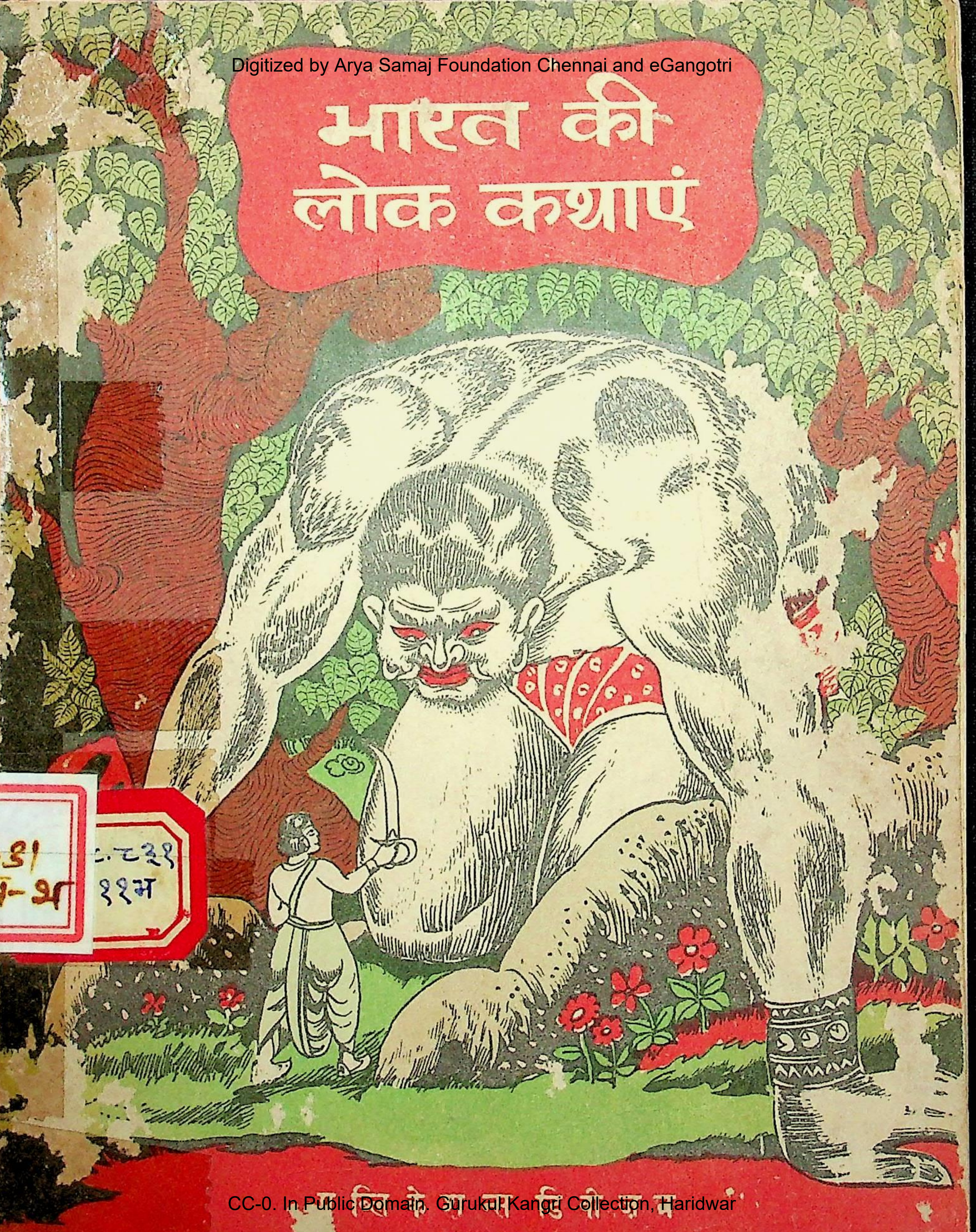
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की लोक कथाएं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Acc. No. 907
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

907 K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की लोककथाएं

सत्यमेव जयते

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

Gurukula Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम प्रकाशित : १९५६
पुनर्मुद्रण : माघ १८८३ (फरवरी १९६२)

P. R. T. C. Library
Gurukula Kangri (Hardwar)
Class No. ८०८.३१
Book No. म ११म
Acc. No. ६०७१

मूल्य : ८५ नए पैसे

निदेशक, प्रकाशन विभाग, पुराना सचिवालय, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय (फोटो लिथो विभाग), नासिक रोड द्वारा मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

भारत लोककथाओं का भण्डार है। हमारे देश में आर्य तथा आदिमवासियों के परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण मिले-जुले रूप में कहानियों का एक जाल-सा छाया हुआ है। उत्तर भारत में यदि कोई कहानी प्रचलित है, वही हमें दक्षिण भारत, काश्मीर या पंजाब में भी नाममात्र के परिवर्तन के साथ सुनने को मिलेगी। ऐसी दशा में यह कहना कठिन है कि अमुक कहानी का जन्म स्थान कौन-सा राज्य है। केवल उसके मूल लक्षण या लोक जीवन की छाप ही उसके जन्म स्थान का निर्णय करने में सहायक होती है। इस विषय में एक विद्वान का कथन है कि "संसार में सब जड़ और चेतन पदार्थ जिस प्रकार ९० के लगभग मूल तत्वों को लेकर बने हैं, उसी प्रकार हम कह सकते हैं कि थोड़े से मूल कथानक और लक्षण हैं, जिनके मिश्रण और पुनर्मिश्रण से हमारी समस्त लोककथाएं बनी हैं और नित्य बनती रहेंगी।

"लोककथाओं की दृष्टि से भारत बहुत भरपूर है। मध्य काल की अनेक लोक-कथाओं का संस्कृत, प्राकृत, पाली और अपभ्रंश तथा प्रान्तीय भाषाओं में भण्डार भरा हुआ है। ये कथाएं पुरानी होती हुई भी नित नई हैं। इसी में जनपद के सामाजिक जीवन व कर्म का इतिहास समाया हुआ है। शनैः शनैः लोक मानस पर कहानियों की नई तह जमती गई और पुरानी कहानियाँ नया कलेवर धारण करके नये समाज की छाप लेकर फिर नवीन रूप में प्रगट हुईं। पुराने कथक्कड़ों, हमारी नानी, दादी तथा बड़े बुज़ुर्गों ने इन्हें सुरक्षित रखने व पुष्ट करने में पूर्ण सहयोग दिया।"

उन्नीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य विद्वान महाभारत, जातक, पंचतन्त्र, जैन कथाएं, कथा सरितसागर का अध्ययन करके चकित रह गये और उनका यह मत था कि भारत की ये पुरातन कथाएं संसार भर की कहानियों की जन्मदाता हैं।

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में लोककथाएं नाना रूपों से लोक जीवन को छापे हुए हैं। आदिकाल से वे हमारे साथ हैं। देश में सर्वत्र उनका निर्बाध निवास है। मानव के सुख-दुःख, प्रीति, शृंगार, वीर भाव और वैर, इन सब ने खाद बन कर लोककथाओं को पुष्ट किया है। रहन-सहन, रीतिरिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा, उपासना, इन सब से कहानी का ठाठ बनता और बदलता रहता है। कहानी मनुष्य के लिये अपूर्व विश्रान्ति का साधन है। मन की थकावट को हटाने के लिये कहानी मानव समाज का प्राचीन रसायन है। आज भी उसकी इस विशेषता और उपयोगिता में अन्तर नहीं पड़ा है।

देखा जाये तो लोककथाएं ही साहित्यिक कथाओं की धात्री हैं। सदियों से ये कथाएं मनुष्यों का मनोरंजन करती आई हैं। मानव के मन में जो शाश्वत बालभाव है, उसे कहानी सुनने-पढ़ने से सन्तोष होता है। आशा है कि यह पुस्तक भी अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

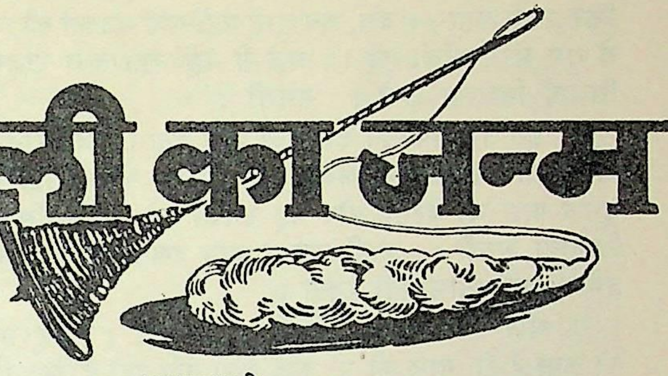
सूचीपत्र



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकली का जन्म



मुबारकअली

स्वर्ग में एक देवी रहती थी। नाम था उसका फिरकी। वह बुनाई का काम इतनी चतुराई से करती थी कि कुछ न पूछिये। जिस वक्त हाथ में तीलियां लेकर बैठती थी, बात-की-बात में बढ़िया-से-बढ़िया स्वेटर, बनियान, मफलर वगैरह बुनकर फेंक देती थी। इसलिए दूर-दूर तक उसकी तारीफ फैल गई थी। फिरकी का यह समाचार होते-होते रानी के कानों तक पहुँचा। वह भी अपनी बच्चियों को बुनाई का काम सिखाना चाहती थी, और बहुत दिन से एक ऐसी ही चतुर देवी की तलाश में थी। उसने अपनी सहेलियों से कहा—"सुनती हूँ, फिरकी बड़ी चतुराई से बुनाई का काम करती है। कहो, तो उसे बुलवा लूँ। वह यहीं रहेगी, तथा राजकुमारियों को बुनाई-सिलाई सिखाया करेगी।"

एक सहेली कुछ सोचकर बोली—"इस बात का क्या भरोसा कि सिलाई-बुनाई के काम में अकेली फिरकी ही सब देवियों से अधिक चतुर है। मेरी बात मानिये। एक जलसा कर डालिये, जिसमें सिलाई-बुनाई का काम जाननेवाली सभी देवियां आवें और अपना अपना हुनर दिखलावें। जो सबसे बाज़ी मार ले जावे, वही पहिला इनाम पावे और हमारी राजकुमारियों को भी हुनर सिखलावे।"

रानी को यह सलाह बहुत पसन्द आई। उसने फ़ौरन जलसा बुलाने का निश्चय कर लिया, और उसी दिन स्वर्ग-भर में डौंडी पिटवा दी। ठीक समय पर जलसे में सिलाई-बुनाई का काम जाननेवाली सैकड़ों देवियाँ आ पहुँची, और लगीं अपने हाथों की सफाई दिखलाने। आखिर फिरकी बाज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार ले गई। रानी ने सहेलियों की सलाह से उसे ही पहला इनाम दिया, फिर उससे कहा—"बस, अब तुम्हें यहाँ-वहाँ भटकने की ज़रूरत नहीं। आज से तुम मेरी सहेली हुई। मज़े से यहीं रहो तथा राजकुमारियों को बुनाई-सिलाई सिखाया करो। समझीं?"

इस तरह फिरकी का भाग्य जाग उठा। वह रानी के पास रहने लगी। राजकुमारियाँ रोज़ तीलियाँ, सूत, कपड़ा, कैंची, सूई, धागा वगैरह लेकर उसके पास जा बैठतीं और वह उनको बड़े प्रेम से सिलाई-बुनाई का काम सिखाया करती। रानी उसका काम देखती तो बहुत खुश होती, और उसे हमेशा खूब इनाम देती रहती।

धीरे-धीरे फिरकी मालामाल हो गई। वह सोचने लगी—"रानी की कृपा है ही, माल की भी कोई कमी नहीं रही है, सिलाई-बुनाई का काम भी मैं सबसे अच्छा जानती हूँ, अब स्वर्ग में ऐसी कौन-सी देवी है, जो मेरा मुकाबला कर सके?" बस, उसका अभिमान जाग उठा। अभिमान से फिरकी का सर फिर गया। वह अब, और तो क्या, रानी की सहेलियों से भी सीधे मुँह बात न करती। फिरकी का यह व्यवहार सहेलियों को बहुत अखरा। एक दिन उन्होंने रानी से शिकायत की—"फिरकी को तो आपने खूब सर चढ़ाया! अब तो वह किसी से भी सीधे मुँह बात ही नहीं करती। जब देखो तब, अभिमान से मुँह फुलाये रहती है। आप ही बतलाइये, वह अब हमारे स्वर्ग में कैसे रह सकती है?"

यह सुनते ही रानी आग-बबूला हो गई। बोली—"ऐं! कहती क्या हो? फिरकी अभिमान करने लगी है? तब तो वह देवी ही नहीं रही, और जो देवी नहीं है, वह स्वर्ग में कैसे रह सकती है? मैं उसे अभी दण्ड दूँगी। ज़रा उसे पकड़ तो लाओ, मेरे सामने।"

फ़ौरन दो-तीन देवियाँ दौड़ी-दौड़ी गईं और फिरकी को पकड़ लाईं। उस पर नज़र पड़ते ही रानी ने बिगड़ कर कहा—"क्यों री फिरकी, यह मैं क्या सुन रही हूँ? तू अभिमान करने लगी है? जानती है, अभिमान करने वाले को क्या दण्ड मिलता है? अभिमान करने वाला फौरन स्वर्ग से बाहर निकाल दिया जाता है। और तो क्या, अभिमान करने के बाद मैं भी स्वर्ग में नहीं रह सकती। यही यहाँ का नियम है।"

फिरकी सहम कर बोली—"अब तो गलती हो ग़ई श्रीमती जी! बस, इस बार मुझे क्षमा कर दीजिये। फिर कभी ऐसी ग़लती करूँ, तो आपकी जूती और मेरा सर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी ने कहा—"तेरे पीछे नियम नहीं तोड़ा जा सकता। तुझे सज़ा ज़रूर मिलेगी और स्वर्ग छोड़कर धरती पर जाना ही पड़ेगा। हाँ, मैं इतनी दया कर सकती हूँ कि तू जो रूप चाहे, उसी रूप में तुझे धरती पर भेज दूँ। बोल, तेरी इच्छा वहाँ किस रूप में जाने की है?" इसी समय वहाँ अचानक एक फ़कीर आ पहुँचा। वह कपड़ों के बदले चोगा पहने हुए था। उसे देख कर सभी देवियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। इतने में रानी ने उससे पूछा—"आप कौन हैं? कहाँ के रहने वाले हैं? रूप तो आपने बहुत अद्भुत बना रखा है। हमने तो आज तक ऐसा अद्भुत रूप देखा ही नहीं।"



फ़कीर ने पूछा—"इसका क्या होगा देवी? यह तो एक बहुत छोटी चीज़ है।"

फकीर ने उत्तर दिया—"मैं एक साधारण मनुष्य हूँ। धरती का रहनेवाला हूँ।"

रानी ने कहा—"अच्छा! आप मनुष्य हैं—धरती के रहने वाले हैं। मनुष्य अभिमानी होते हैं। वह कभी स्वर्ग में नहीं आ सकते। भला आप कैसे यहाँ आ पहुँचे?"

फ़कीर बोला—"मैंने अभिमान छोड़कर बहुत दिनों तक तपस्या की है। अपना सारा जीवन अपने देश-वासियों की सेवा में ही बिताया, इसलिए मैं यहाँ आ सका हूँ।"

रानी ने प्रसन्न होकर कहा—"तब तो आप भले आदमी हैं। आपके दर्शन पाकर मुझे बड़ा आनन्द मिला। यदि मेरे योग्य कोई सेवा-कार्य हो तो कृपा कर बतलाइये।"

फ़कीर बोला—"देवी, धरती पर रहने वाले मनुष्य बड़े दुःखी हैं। वे कपड़े पहिनना भी नहीं जानते। बेचारे शरीर पर पत्ते लपेट-लपेट कर अपना जीवन बिताते हैं। आप कृपा कर कोई ऐसी चीज़ दीजिये, जिसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा वे सूत कात सकें। रूई तो धरती पर बहुत होती है, जहाँ लोगों ने उसका सूत निकाल पाया, तहाँ कपड़े तैयार हुए ही समझिये।"

रानी ने कहा—"अच्छा-अच्छा, आप विराजिये तो सही! भगवान ने चाहा, तो मैं अभी आप की इच्छा पूरी किये देती हूँ।" इसके बाद उसने फिरकी से फिर वही सवाल किया—"हाँ, तो तू किस रूप में धरती पर जाना चाहती है?"

फिरकी ने आँखों में आँसू भर कर जवाब दिया—"श्रीमती जी, मैं तो वहाँ किसी भी रूप में नहीं जाना चाहती। यदि आप मुझे वहाँ भेजना ही चाहती हैं, तो ऐसे रूप में भेजिये, जिससे मैं सभी मनुष्यों की सदा सेवा कर सकूँ, उनका मन बहला सकूँ और उनसे आदर भी पा सकूँ।"

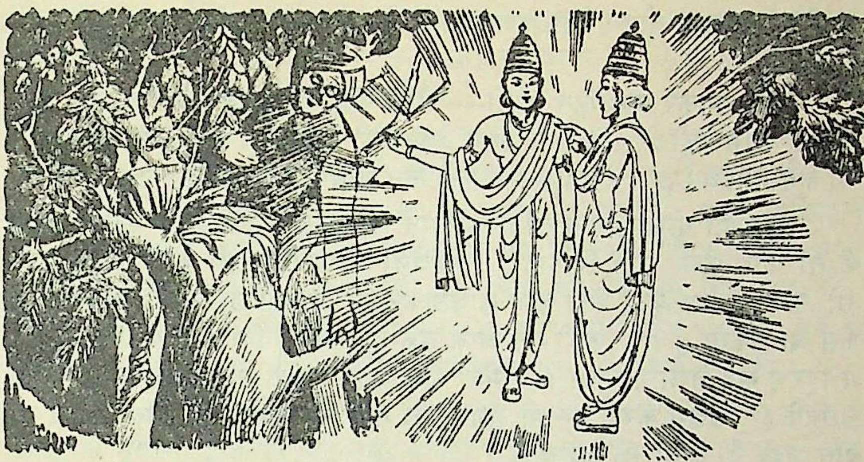
रानी मुसकरा कर बोली—"मैं मानती हूँ, फिरकी, तू सचमुच बड़ी चतुर है। तूने एक साथ तीन ऐसी बड़ी-बड़ी बातें माँगी हैं, जिनसे तू धरती पर भी सदा देवी बनकर रहेगी। खैर, कोई बात नहीं, मैं तुझे अभी ऐसा रूप देती हूँ, जिससे तेरी इच्छा पूरी होने में कोई बाधा न रहेगी।" यह कह कर रानी ने चुल्लू में थोड़ा-सा पानी लिया और कुछ मन्त्र पढ़ कर फिरकी पर छिड़क दिया। फिर क्या था, फिरकी फौरन तकली बन कर खट से गिर पड़ी। रानी ने झपट कर वह तकली उठा ली और फ़कीर को दे दी। फ़कीर ने तकली लेते-लेते पूछा—"इसका क्या होगा देवी? यह तो बहुत छोटी चीज़ है।"

रानी ने उत्तर दिया—"चीज़ छोटी तो ज़रूर है, पर इससे लोगों का बहुत बड़ा काम निकलेगा। इसके द्वारा उनको सूत मिलेगा, जिसके कपड़े बुने जायेंगे। बच्चों को यह खिलौने का काम देगी और फुरसत के समय स्यानों का मन बहलाया करेगी। वह चाहेंगे, तो आपस में खेलते-खेलते या गप-शप करते हुए भी इसके द्वारा सूत निकालते रहेंगे। बस, ले जाइये . ."

कहते हैं उसी तकली से मनुष्य ने कातना सीखा और तकली के विकास के साथ ही साथ सभ्यता का विकास भी हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रात को सपने में उसे दो व्यक्ति दिखाई दिये, उनमें से एक था कर्म, दूसरा था भाग्य ।

बिहार की लोक कथा

जुलाहा और भाग्य देवता

सावित्री देवी वर्मा

एक शहर में एक जुलाहा रहता था । वह अपने काम में बहुत निपुण था । रंग-रंग के धागों में सुनहली और रुपहली तारें मिला कर वह ऐसे सुन्दर-सुन्दर बेल-बूटे डालता था कि जो कोई उसका बुना हुआ वस्त्र देखता, दंग रह जाता । पर उन बढ़िया और मंहगे कपड़ों को केवल राजे-महाराजे ही खरीद सकते थे । इस कारण उसकी बिक्री भी अधिक नहीं होती थी । उसे हमेशा पैसे की कमी बनी ही रहती थी, जिस-किस तरह से उसका गुज़ारा भर हो पाता था ।

एक दिन वह अपनी पत्नी से बोला—"जुलाहिन, देखो हमारे पड़ोसी भाई केवल गाढ़ा खद्दर बुनते हैं, ये लोग काम में भी इतने होशियार नहीं हैं, पर तो भी इनकी आमदनी मुझ से चौगुनी है । इस गाँव में कोई मेरे गुणों का ग्राहक ही नहीं है । अतएव मैं तो परदेश जाकर अपनी किस्मत आज़माने की सोच रहा हूँ । शेर भूखों मर जाता है पर चारा नहीं खाता । मैं एक

2—6PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारीगर जुलाहा होकर साधारण जुलाहों के सदृश मोटा-झोटा कपड़ा तो बुनने से रहा।"

यह सुनकर जुलाहिन बोली—"देखो जी, मेरी बात सुनो, परदेश जाने से कुछ लाभ नहीं। जब तक भाग्य देवता की कृपा नहीं होती, परदेश जाकर भी कुछ नहीं बनेगा। जब अपने अच्छे दिन आयेंगे, तो बनते देर नहीं लगेगी।"

जुलाहा बोला—"तू तो निकम्मेपन की बातें करती है। बिना उद्यम के तो कोई फल नहीं मिलता। व्यंजनों से भारी थाली चाहे सामने धरी रहे, पर जब तक कोई कौर हाथ से उठाकर मुँह में नहीं डालेगा, भोजन पेट में कैसे जा सकता है? कभी तूने आज तक सुना भी है कि सोते हुए शेर के मुँह मे हिरण खुद चला गया हो? मेरी राय में तो प्रत्येक मनुष्य को चेष्टा करनी चाहिये। उद्यम करने पर भी अगर फल नहीं मिले, तो इसमें उस मनुष्य का दोष नहीं है, दोषी तो भाग्य है।"

इस प्रकार अपनी स्त्री को समझा-बुझा कर वह जुलाहा एक बड़े शहर में धनोपार्जन की इच्छा से आया। वहाँ आकर उसका व्यवसाय थोड़े ही दिनों में चमक उठा। उसके बनाये कपड़ों की सेठ-साहुकारों तथा राजे-महाराजों में खूब खपत हुई। मुँहमांगी कीमत पाकर उसने अपना रोज़गार वहाँ अच्छा जमा लिया।

इस प्रकार तीन वर्ष तक उस शहर में रह कर उसने तीन सौ सोने की मोहरें जोड़ लीं।

अब उसने सोचा घर चलना चाहिये। मैं अपनी जुलाहिन को जाकर जब इतना धन दूँगा तब वह कितनी खुश होगी! और तब मैं उसे अपने आते समय की बात याद दिलाऊँगा कि देख अगर मैं तेरे कहे में आकर परदेश न जाता तो इतना धन इसी गाँव में बैठे रहने से तो नहीं मिलता।

इस प्रकार मंसूबे बांधता हुआ वह अपने गाँव की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक जंगल में रात पड़ गई। चोर, डाकुओं तथा हिंसक जानवरों के डर से वह एक पुराने बरगद के पेड़ पर चढ़ गया। यात्रा से थका-हारा तो वह था ही, तने का सहारा लेकर कुछ देर में ही वह सो भी गया।

रात को सपने में उसे दो व्यक्ति दिखाई दिये, उनमें से एक था कर्म, दूसरा था भाग्य।

भाग्यदेव कर्मदेव से बोले—"कर्मदेव! तुम्हें तो मालूम है कि इस जुलाहे के नसीब में केवल रोटी-कपड़े भर का सुख लिखा है, फिर भला तुमने इसे उठा कर तीन सौ सोने की मोहरें कैसे दे दीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मदेव बोले—"भाग्यदेव, मेरा काम तो उद्यमशीलों को उनकी मेहनत का फल देना है। जो प्रयत्न करेगा, उसे उसका फल मिलना ही चाहिये। अब आगे जैसा तुम्हें उचित लगे करो।"

कर्मदेव और भाग्यदेव का यह वार्तालाप सुन, जुलाहा हड़बड़ा कर उठ बैठा। पर जब उसने अपनी थैली खोली तो उसमें फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। यह देख कर जुलाहा कलपने लगा कि हाय! इतनी मुश्किलों से तो धनोपार्जन किया और अब उसे जाते एक क्षण भी नहीं लगा। भला खाली हाथ गाँव जाकर मैं अपनी स्त्री और मित्रों को कैसे मुँह दिखाऊंगा?

यह सोच कर वह फिर उसी शहर में लौट आया और एक ही वर्ष में दुगुने परिश्रम से उसने पाँच हज़ार मोहरें कमा कर फिर जमा कर लीं।

अब वह अपने गाँव की ओर दूसरे मार्ग से चल दिया। परन्तु होनहार ऐसी कि सूर्यास्त होने पर वह उसी बरगद के पेड़ के पास आन पहुँचा। यह देख कर जुलाहा बड़ा ही परेशान हुआ कि हाय! देखो, लाख चेष्टा करी, पर होनहार वहीं ले जाकर छोड़ती है, जहाँ कुछ होने को होता है। यह दूसरा मार्ग भी आकर उसी चौरस्ते से मिल गया और मैं भटकता हुआ फिर इसी जंगल में आ पड़ा। दिखता है, आज की रात भी इसी मनहूस पेड़ पर ही बितानी पड़ेगी।

रात को आंख लगने पर फिर सपने में जुलाहे को भाग्य देवता और कर्म-देवता दिखाई पड़े। उसी दिन की तरह फिर भाग्यदेवता ने कर्मदेवता को उलाहना दिया—"इस जुलाहे को तुमने क्यों इतना धन दिया जब कि इसके भाग्य में केवल रोटी-कपड़ा लिखा है?"

कर्मदेव ने भी उत्तर दिया—"मनुष्य को कर्म का फल देना मेरा धर्म है, वह फल को भोग सके या न, यह तुम्हारी इच्छा पर है।"

घबड़ा कर जब जुलाहे की आँख खुली तो उसने देखा उसकी थैली फिर खाली पड़ी थी। अब तो जुलाहे ने अपना सिर पीट लिया। दूसरी बार भी अपना सर्वस्व खोकर उसे बड़ी निराशा हुई। वह सोचने लगा धन के बिना इस संसार में जीवन ही व्यर्थ है। यह विचार कर अपनी पगड़ी को पेड़ से लटका कर उसने दोनों छोरों को बांध कर फंदा बनाया और जैसे ही वह गले में फांसी लगाने को तैयार हुआ, भाग्यदेव ने सामने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोले—"सुनो भाई! अभी तुम्हारी आयु शेष है। तुम आत्म-घात करने की चेष्टा मत करो। जाओ, तुम अपने घर जाओ। पर मैं तुम्हें एक वरदान दूँगा। कहो तुम्हें क्या चाहिये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाहा बोला—"अगर यह बात है तो आप मुझे धनवान बना दें।"

यह सुनकर भाग्यदेव बोले—"पर तुम धन लेकर भी क्या करोगे ? धन का भोग तुम्हारे नसीब में नहीं लिखा है।"

जुलाहा बोला—"तो भी मुझे धन चाहिये। इस संसार में कितने ऐसे धनी पुरुष हैं जो अपने अस्वास्थ्य या कंजूसी के कारण स्वयं धन का भोग करने में असमर्थ हैं, पर धनी होने के कारण उनका समाज में मान है। सगे सम्बन्धी उन्हें घेरे रहते हैं। लोग उनके अपराध और कमियों की उनके मुँह पर आलोचना करने की धृष्टता नहीं करते। मेरे नसीब में धन का सुख नहीं होगा तो कोई बात नहीं। पर मैं धनी कहलाना चाहता हूँ।"

भाग्यदेव—"अगर ऐसी बात है तो तुम फिर शहर को लौट जाओ। वहाँ तुम्हें एक सौदागर के दो पुत्र मिलेंगे। उनमें से एक तो धन-जोड़ू है, दूसरा धन-उड़ाऊ है। तुम उन दोनों में से जिसकी तरह का बनना पसन्द करोगे, वैसा तुम्हें बना दिया जायगा।"

यह कह कर भाग्यदेव अर्न्तध्यान हो गये।

अब वह जुलाहा शहर आकर धन-जोड़ू का पता पूछता-पूछता एक गली में आया। गलीवालों से जब उसने पूछा—"भाई यहाँ पर कोई धन-जोड़ू सौदागर-पुत्र रहता है ?"

तो एक बोला—"रहता होगा कोई कंजूस-मक्खीचूस। हमें उससे क्या मतलब ?"

दूसरा बिगड़ कर बोला—"तुम परदेशी मालूम होते हो। सबेरे-सबेरे इस मनहूस का नाम सुना दिया, राम जाने आज रोटी भी नसीब होगी कि नहीं ?"

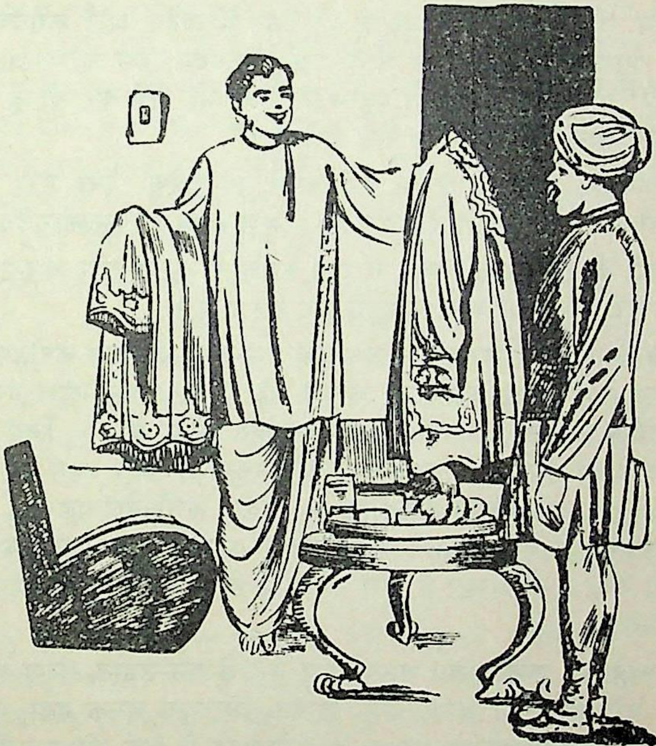
जुलाहे ने सोचा, दिखता है बड़ा कुयश कमाया है इस धनजोड़ू ने ! कोई उसका नाम तक सुनना नहीं चाहता। खैर, मैं खुद ही उसका घर ढूंढ़ने की चेष्टा करता हूँ।

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जुलाहे को आखिर में धनजोड़ू का घर मिल ही गया। धनजोड़ू की स्त्री-बच्चे और नौकर-चाकरों द्वारा दुतकारे जाने पर भी जुलाहा उसके आंगन में जाकर बैठ गया। रात को साहूकार की स्त्री ने बे-मन से उसे भोजन भी करा दिया। वह अपने पति के स्वभाव से भली प्रकार परिचित थी, इस कारण किसी भूखे-प्यासे के प्रति सहानुभूति दिखाने का उसका साहस नहीं होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खैर, रात को जुलाहा वहीं आंगन में सो गया। अब सपने में उसे फिर कर्मदेव और भाग्यदेव दिखाई दिये। भाग्यदेव ने कर्मदेव से पूछा—"कर्मदेव, भला तुमने यह क्या किया, इस धनजोड़ू के नसीब में तो पैसा खर्चना लिखा ही नहीं है, फिर इस जुलाहे को भोजन खिलवा कर तुमने यह फालतू खर्च क्यों करवाया ?"



धन-उड़ाऊ ने जुलाहे की बहुत आवभगत की। और उसे पेट भर भोजन खिलाया, नया जोड़ा वस्त्र पहिनने को दिया।

कर्मदेव बोला—"भाग्यदेव, अब मैंने जो उचित समझा कर दिया, आगे तुम्हारी इच्छा, चाहे जिस तरह इस कमी को पूरा करो।"

बस, दूसरे दिन होनहार के वश होकर धनजोड़ू बीमार पड़ गया और इस प्रकार उसे कई दिन तक फ़ाका करना पड़ा और भूखा प्यासा जुलाहा भी वहाँ से धन-उड़ाऊ की खोज में चल दिया। उसकी गली में घुसते ही बच्चे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे की मुँह से उसने धन-उड़ाऊ की प्रशंसा सुनी और वे उसे सौदागर-पुत्र के घर तक छोड़ आये।

धन-उड़ाऊ ने जुलाहे की बहुत आवभगत की। और उसे पेट भर भोजन खिलाया, नया जोड़ा वस्त्र पहिनने को दिया और उसकी सुख-सुविधा का प्रबन्ध करके वह सोने चला गया।

अब रात को सपने में जुलाहे को फिर भाग्यदेव और कर्मदेव दिखाई दिये। भाग्यदेव कर्मदेव से बोले—"भाई कर्मदेव, इस धन-उड़ाऊ ने तो जुलाहे की आवभगत में अपनी रही-सही पूंजी भी खर्च कर दी है। अब इसका कल खाने-पीने का काम कैसे चलेगा ?"

कर्मदेव बोले—"अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देना मेरा काम है, अब बिगड़ी बात बनाना तुम्हारे हाथ में है। कुछ भाग्य का चमत्कार दिखाओ।"

दूसरे ही दिन राजदरबार से एक कर्मचारी आया और धन-उड़ाऊ को राजा की ओर से रुपयों की एक थैली भेंट कर गया।

यह देखकर जुलाहा सोचने लगा कि धन-जोड़ू के सदृश करोड़पति बनने से धन-उड़ाऊ के सदृश परोपकार करना और मस्त रहना लाख दर्जे अच्छा है। क्योंकि धन की सार्थकता उसके सद्व्यय में ही है। जिस धनी का धन किसी के काम न आवे, उससे तो निर्धन रहना अच्छा। धर्म का आचरण करने से ही मनुष्य धर्मात्मा कहलाता है, केवल धर्मोपदेश पढ़ लेने मात्र से कोई धर्मात्मा नहीं बन जाता ! सो हे भाग्यदेवता ! आप मुझे धन-उड़ाऊ सदृश धनी बना दें तो अच्छा है, मुझे धन-जोड़ू के जीवन में कुछ सार्थकता नहीं प्रतीत होती।

जुलाहे की इच्छानुसार भाग्यदेवता ने उसे धन-उड़ाऊ सदृश धनी बना दिया। वह गाँव लौट आया, वहाँ उसका धंधा खूब चमक गया, पर साथ-ही-साथ वह जितना कमाता उतना ही परोपकार में खर्च भी कर देता था। इस प्रकार वह चाहे धन न बटोर सका हो पर उसने यश खूब बटोर लिया। इसी में जुलाहा और जुलाहिन संतुष्ट थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य की बेटी

रामचन्द्र शर्मा

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा विद्वान् और सदाचारी था। उसकी स्त्री भी बड़ी सुशील और घर के काम-काज में चतुर थी। उनके केवल दो सन्तानें थीं—एक लड़का और एक लड़की। माता-पिता अपने दोनों बच्चों को बड़ा प्यार करते थे और उनको सद्गुणी और सदाचारी बनाने का प्रयत्न करते रहते थे। यद्यपि लड़का बड़ा था, पर लड़की अधिक चतुर थी। माता-पिता का भी उस पर विशेष प्रेम था। लड़की धीरे-धीरे बढ़ने लगी और विवाह योग्य हो गई।

माता-पिता को यह पता न था कि लड़की इतनी जल्दी विवाह-योग्य हो जायगी। उन्होंने कभी ख्याल ही नहीं किया था कि उन्हें लड़की के लिये वर ढूँढ़ना है। एक दिन जब वह अपनी माँ के पास खड़ी थी तो उसे देख कर माँ को ऐसा लगा कि वह कद में उसके बराबर हो गई है, और अब उसके विवाह की फ़िक्र करनी चाहिये। उसी दिन शाम को ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा—"लड़की विवाह-योग्य हो गई है, अब इसके विवाह की फ़िक्र करनी चाहिये।" ब्राह्मण भी लड़की को इतनी जल्दी सयानी होते देख कर दंग रह गया और पत्नी से बोला—"तुम ठीक कहती हो, अब मुझे इसके लिये वर ढूँढ़ना चाहिये।"

यह कह कर ब्राह्मण चिन्ता में डूब गया। उसने पंचांग उठाया। वह यह देखना चाहता था कि विवाह कब शुभ बनता है। पंचांग देखने पर विदित हुआ कि विवाह चालू महीने में ही बनता है। आगे तीन साल तक विवाह शुभ नहीं बनता। यह देखकर उसको बड़ी घबराहट हुई। ब्राह्मणी ने इस घबराहट का कारण पूछा, तो उसने बताया कि कन्या का विवाह इसी महीने में शुभ बनता है, आगे तीन साल तक नहीं बनता, और इस महीने में विवाह के लिये केवल एक ही दिन शुभ है—शुक्लपक्ष की पंचमी। यह सुनकर ब्राह्मणी भी बड़ी बेचैन हुई। परन्तु कुछ देर बाद सोच-समझ कर बोली—"अभी तो १५ दिन बाकी हैं। अगर ठीक तरह से कोशिश की जाय तो इतने दिनों में वर ढूँढ़ा जा सकता है, और इसी महीने विवाह हो सकता है। तीन साल तो हम नहीं रुक सकते। लड़की काफ़ी बड़ी हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण फिर चिन्ता में पड़ गया। उसने सोचा, 'पत्नी ठीक कहती है। तीन साल तक नहीं रुका जा सकता।' उसने नाई को बुलवाया और कन्या के लिये तुरन्त वर ढूँढ़ने के लिये जाने को कहा। उसने नाई को स्पष्ट बता दिया कि लड़की का विवाह तीन साल तक नहीं बनता, इसलिये शीघ्र ही योग्य वर ढूँढ़ना है, और विवाह इसी महीने शुक्लपक्ष की पंचमी को करना है। 'जो आज्ञा' कह कर नाई वहाँ से चला गया और वर की खोज में निकल पड़ा।

नाई चलते-चलते एक गाँव में पहुँचा और वहाँ उसे एक सुपठित और सुयोग्य ब्राह्मण युवक मिल गया। नाई ने उसे योग्य वर समझ कर सम्बन्ध पक्का कर दिया और विवाह के लिये पंचमी का दिन निश्चय करके लौट आया।

इधर नाई के घर से जाते ही ब्राह्मण के मन में तरह तरह के विचार उठने लगे। वह सोचने लगा—'आखिर, नाई ही तो है। न मालूम मेरी सुशील और गुणवती कन्या के लिये कैसा वर देख आये। समय थोड़ा है, अगर गलती हो गई तो सुधारी भी नहीं जा सकेगी। साथ ही, विवाह-सम्बन्ध एक पवित्र सम्बन्ध है, वर-वधू का स्थायी संयोग है, और दो जीवनों का अन्त तक का साथ है। बिना सोचे-समझे चाहे जिसके साथ विवाह कर देना एक अबोध कन्या के साथ खिलवाड़ करना है। मैंने बड़ी गलती की, जो नाई को वर ढूँढ़ने के लिये भेज दिया। जिस कन्या को मैं इतना प्यार करता हूँ, क्या उसके लिये मैं कुछ भी त्याग नहीं कर सकता। नहीं, वर ढूँढ़ने मैं खुद जाऊँगा। कन्या चाहे तीन वर्ष और क्वारी रहे, पर जब तक मेरे मनपसन्द वर न मिल जायगा, तब तक इसका विवाह न करूँगा।'

यह सोचकर ब्राह्मण उठा और अपनी पत्नी को अपना इरादा बता कर वर ढूँढ़ने के लिये चल दिया।

एक गाँव में उसे ऐसा योग्य वर मिल गया जैसा कि वह चाहता था। उसने उसका सम्बन्ध पक्का कर दिया और विवाह की तिथि बता कर चला आया।

इधर ब्राह्मण के घर से जाते ही ब्राह्मणी को बड़ी बेचैनी हुई। वह सोचने लगी—'नाई तो निर्बुद्ध होता है। उसे क्या पता कि हमारा घर कितना प्रतिष्ठित है। मेरी लड़की तो गुलाब का फूल है। अँधेरे घर में भी उजाला कर देने वाली है। अगर नाई कोई निर्धन घर या कुरूप वर देख आया, तो मेरी लड़की तो कुढ़-कुढ़ कर ही मर जायगी। मेरा दिल भी उम्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर जलता रहेगा। मेरे पति ने बहुत बुरा किया जो नाई को वर ढूँढ़ने भेज दिया। अब उन्हें अपनी गलती महसूस हुई है, और अब खुद वर ढूँढ़ने गये हैं। परन्तु इससे भी क्या? वे ही कौनसा मेरी पसन्द का वर देख कर आयेंगे। मैं जानती हूँ, वे अधिक से अधिक यह देखेंगे कि लड़का पढ़ा-लिखा और तन्दुरुस्त हो, चाहे उसके घर में कुछ भी न हो। उन्हें क्या पता कि स्त्रियाँ क्या-क्या चाहती हैं। मैं तो ऐसा लड़का चाहती हूँ, जो सुन्दर और स्वस्थ हो, धनवान हो, उदार और सच्चरित्र हो। यदि पढ़ा-लिखा हुआ पर सुन्दर न हुआ तो दो कौड़ी का। समय बहुत थोड़ा है। जल्दी-जल्दी में गलती हो सकती है। इसलिये मैं स्वयं वर ढूँढ़ने जाऊँगी। मेरे पति ने मेरी सब बातें मानी हैं, तो क्या यह छोटी-सी बात न मानेंगे। मानेंगे क्यों नहीं, ज़बरदस्ती मनवाऊँगी। क्या लड़की पर मेरा कुछ भी अधिकार नहीं है। नहीं, मैं न नाई की मानूँगी और न पतिदेव की। लड़की के जीवन भर का सवाल है।'

यह सोचकर ब्राह्मणी ने अपने लड़के को अपने पास बुलाया, और उसे सब हाल बता कर कन्या के लिये वर ढूँढ़ने चल दी।

वर की खोज में वह एक गाँव में पहुँची। वह जैसा वर चाहती थी, वैसा उसे मिल गया। उसका सम्बन्ध पक्का करके और विवाह की तिथि निश्चित करके वह अपने घर लौट आई।

इधर उसके घर से जाते ही, लड़की का भाई सोचने लगा—'नाई तो अपनी ड्यूटी पूरी कर देगा। उसे वर ढूँढ़ने के लिये कहा गया है, वह वर ढूँढ़ देगा। फिर चाहे वह कैसा ही हो। वर ढूँढ़ने के बाद उसका कर्त्तव्य समाप्त हो जाता है। बाद में भुगतना तो हम ही को पड़ेगा। माता-पिता के ऊपर कुछ ज़िम्मेवारी ज़रूर है, पर अधिक नहीं। वे तो अपने मन का वर ढूँढ़ेंगे। पिता जी यह देखेंगे कि लड़का पढ़ा-लिखा हो, माता जी यह देखेंगी कि लड़का सुन्दर हो, धनवान हो। पर इतने से तो काम नहीं चलता। माता-पिता तो कुछ साल बाद स्वर्ग सिधार जायेंगे, बहनोई साहब और उनके परिवारवालों से बाद में भुगतना तो मुझे ही पड़ेगा। मैं चाहता हूँ कि मेरी बहन के लिये जो वर देखा जाय, वह स्वभाव का अच्छा हो, मिलनसार हो और उसके परिवार वाले सभ्य और शिष्ट हों, जिससे मेरी बहन को ससुराल में जाकर कोई दुःख न हो, और उसकी वजह से मुझे भी कोई दुःख न हो। लड़का पढ़ा-लिखा भी हुआ, सुन्दर भी हुआ और धनवान भी हुआ, पर सभ्य और शिष्ट न हुआ तो घर में सदा क्लेश रहेगा, और बहन का जीवन

3—6PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूभर हो जायगा। इसलिये मैं अपना मनपसन्द वर ढूँढ़ूँगा। माता-पिता नाराज़ हों तो भले हो जायँ, उन्हें कितने दिन इस संसार में रहना है ?'

यह सोचकर वह उठा, घर नौकर के सुपुर्द किया और वर ढूँढ़ने चल दिया।

एक गाँव में उसे भी उसकी पसन्द का वर मिल गया, और वह उसका सम्बन्ध पक्का करके और विवाह की तिथि निश्चित करके घर लौट आया।

नाई, ब्राह्मण, ब्राह्मणी और लड़का चारों एक ही दिन घर वापस पहुँचे। आपस में बातचीत करने के बाद मालूम हुआ कि चारों चार गाँवों में चार वर तलाश कर आये और सबको विवाह की एक ही तिथि, शुक्ल पंचमी, बता आये हैं। यह बात प्रगट होने पर ब्राह्मण को बड़ी चिन्ता हुई और उसने तुरन्त नाई को आज्ञा दी कि वह तीन गाँवों में जाकर सम्बन्ध रद्द कर आये। केवल वही सम्बन्ध पक्का समझा जाय, जिसे बाप ने स्वयं पक्का किया था। नाई बड़े पसोपेश में पड़ा। वह 'हाँ' करके 'न' करना ठीक नहीं समझता था। यदि नाई आज एक सम्बन्ध पक्का कर दे और कल उसे रद्द कर दे तो समाज में उसकी साख ही क्या रहेगी। इसलिये वह अपने पक्के किये हुए सम्बन्ध को रद्द करना नहीं चाहता था। वह उन तीन सम्बन्धों को रद्द करने गया जो ब्राह्मण, ब्राह्मणी और उनके लड़के ने पक्के किये थे। उसने तीनों स्थानों पर जाकर ब्राह्मण का संदेश सुना दिया। परन्तु बिदकाने वाला समझ कर किसी ने उसकी बात न मानी और विवाह की तैयारी करते रहे। उन्होंने सोचा—'सम्बन्ध को वही रद्द कर सकता है, जिसने पक्का किया है। यह कोई लड़की वाले का विरोधी मालूम पड़ता है।'

शुक्ल पक्ष की पंचमी आई। ब्राह्मण ने विवाह की सब तैयारियाँ कर ली थीं। परन्तु जब शाम को चार बरात दरवाज़े पर देखीं तो घबरा गया। सोचने लगा—'नाई से मना करवा दिया था, फिर भी ये लोग कैसे आ गए ? एक लड़की और चार वर ! मेरा कैसा दुर्भाग्य है ! अब मुझे डूब मरने के लिये भी जगह नहीं है। हे भगवान् ! मैंने ऐसे क्या पाप किये थे, जो मुझे यह दिन देखने को मिला ? अब मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ?'

यह सोचते-सोचते ब्राह्मण बेचैन हो गया और लज्जा और बदनामी के कलंक से बचने के लिये आत्महत्या करना ही उसने सबसे अच्छा उपाय समझा। वह धीरे से उठा और गाँव के बाहर एक कुएँ में कूदकर प्राण देने के विचार से चल दिया। जब वह कुएँ पर पहुँचा तो अचानक एक सन्यासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उधर आ निकला। सन्यासी ने उससे पूछा—"तू इस निर्जन जंगल में इस कुएँ पर अकेला बैठ क्या कर रहा है?" ब्राह्मण ने सन्यासी से सारा हाल कहा। सन्यासी ने कहा—"आत्महत्या करने से कोई लाभ नहीं। तू मेरे साथ चल। मैं तेरी समस्या हल कर दूँगा।" ब्राह्मण सन्यासी के साथ हो लिया।

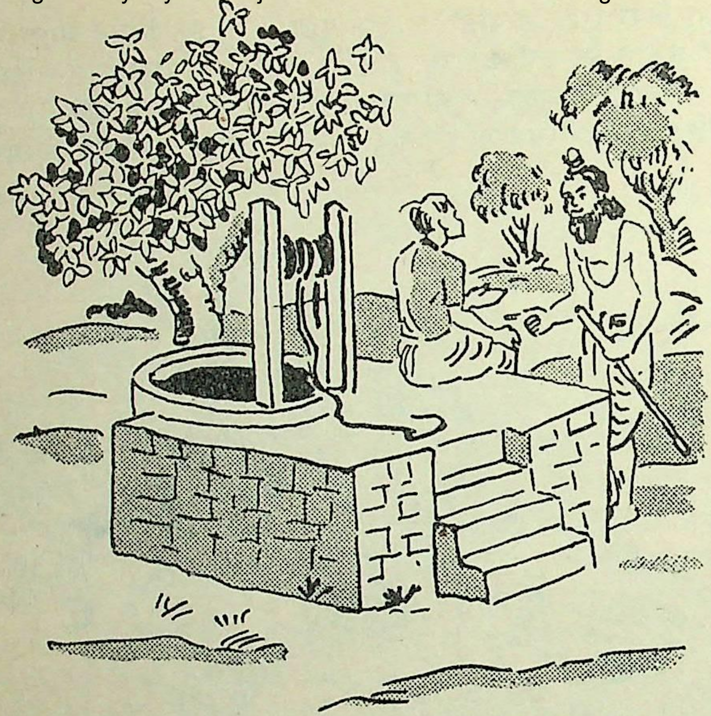


ब्राह्मण ने पहले एक वर को बुलाया।

रास्ते में एक कुतिया मिली, जिसने अभी-अभी तीन पिलियों को जन्म दिया था। सन्यासी ने एक पिलिया की ओर इशारा करते हुए ब्राह्मण से कहा—"इसे उठा लो।" ब्राह्मण ने पिलिया को उठाकर झोली में डाल लिया। आगे चल कर दोनों क्या देखते हैं कि एक सुअरिया अभी-अभी ब्याई है और उसने एक बच्ची डाली है। सन्यासी ने इशारा किया कि इसे भी उठा लो। ब्राह्मण ने उसे भी उठाकर झोली में डाल लिया। जब और आगे चले तो एक गधी मिली। वह भी अभी ब्याई थी और उसने एक मादा बच्चा जना था। सन्यासी के इशारा करने पर ब्राह्मण ने गधी के बच्चे को भी झोली में डाल लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन्यासी ने कहा—"आत्महत्या करने से कोई लाभ नहीं,
तू मेरे साथ चल मैं तेरी समस्या हल कर दूँगा।"

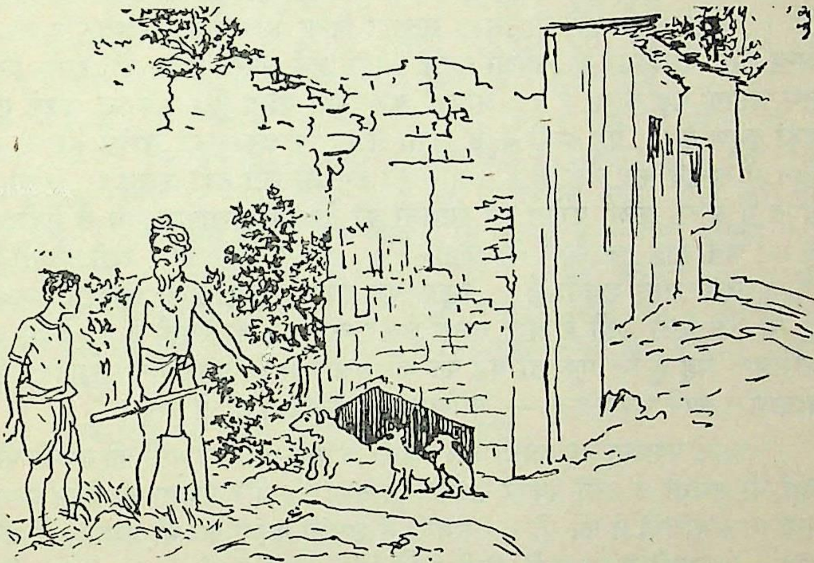
अब सन्यासी और ब्राह्मण घर पहुँचे। सन्यासी ने कहा—"इन तीनों बच्चों को एक कोठे में बन्द कर दो और अपनी लड़की को भी इसी कोठे में बन्द कर दो। जब तक मैं न कहूँ, तब तक कोठा न खोलना।" ब्राह्मण ने ऐसा ही किया और चारों को एक कोठे में बन्द कर दिया। इसके बाद सन्यासी ने कहा कि एक-एक करके चारों वरों को जनवासों से बुलाओ। ब्राह्मण ने पहले एक वर को बुलाया।

सन्यासी की आज्ञा से कोठे का ताला खोला गया। परन्तु सब लोग यह देखकर चकित रह गये कि अन्दर एक ही रूप रंग और आयु की चार कन्यायें बैठी हुई हैं। उनमें से एक कन्या को बाहर निकाला गया और उसका विवाह विधि पूर्वक उपस्थित वर के साथ कर दिया गया। इसी प्रकार बारी-बारी से शेष तीनों कन्याओं का विवाह भी शेष तीनों वरों के साथ कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण ने चारों बरातों की अच्छी तरह खातिर की और सुबह होते ही चारों को विदा कर दिया। चारों वर खुश थे और चारों के मुख पर विजय की भावना झलक रही थी। उनमें से प्रत्येक यह समझ रहा था कि ब्राह्मण ने कन्या का विवाह मेरे ही साथ किया है और शेष तीनों वर निराश होकर जा रहे हैं। उनको यह भली-भाँति मालूम था कि कन्या एक ही है और बरातें ग़लती से चार आ गई हैं।



सन्यासी ने पिलिया की ओर इशारा करते हुये ब्राह्मण से कहा—"इसे उठा लो।"

चारों लड़कियों को ससुराल गये काफ़ी समय हो गया। एक दिन ब्राह्मण के मन में आई कि जाकर देखूँ चारों लड़कियाँ सुसराल में कैसे रह रही हैं।

पहले वह उस लड़की के पास गया, जो कुतिया की बच्ची थी। समधी ने उसका अच्छी तरह सत्कार किया और कहा—"पंडित जी! हम आपके बड़े आभारी हैं। आपने अन्य तीन वरों की उपेक्षा करके मेरे लड़के के साथ अपनी कन्या का विवाह किया। इसमें मैं अपना बड़ा गौरव अनुभव करता हूँ। आपकी कन्या भी बड़ी योग्य है। घर का सब काम काज कर लेती है। परन्तु उसमें कुछ दुर्गुण भी है। वह बिना बात सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लड़ती है। घर में सब चीज़ें मौजूद होते हुए भी पड़ोसिनों से माँगे विना नहीं मानती। सुबह होते ही जब तक दस घर नहीं घूम लेती, तब तक उसे चैन नहीं पड़ता। हमने उससे बहुतेरा कहा है कि तू घर-घर फिरना छोड़ दे, परन्तु उसकी यह आदत नहीं जाती।" ब्राह्मण ने एक ठंडी साँस ली और अपने मन में कहा—"है तो कुतिया की ही जाई।"

इसके बाद वह अपनी उस लड़की के पास गया जो सुअरिया की बच्ची थी। यहाँ भी समधी ने उसका सत्कार किया और कहा—"श्रीमान् जी ! अन्य तीन समधियों की उपेक्षा करके आपने हमें अपनी कन्या दी, इसके लिये हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं। आपकी कन्या भी योग्य है। परन्तु उसमें एक बड़ा दुर्गुण है। वह गन्दी बहुत रहती है। सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों को दो ही दिन में खराब कर लेती है। खाने का ढंग भी उसे नहीं आता। चाँदी के थाल में अलग-अलग परोसे हुए व्यंजनों को एक में मिलाकर हाथ से सपोटती है। जब चाहे तब खाने बैठ जाती है। घर में कोई चीज़ रखी देखती है, तो उठाकर खाने लगती है। सड़क पर कोई खोमचे वाला आवाज़ लगाता है, तो उसे बुला लेती है और उससे लेकर चाट-पकौड़ी खाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि एक तो वह पेट की सुअरिया है, दूसरे गन्दी रहती है।" ब्राह्मण ने अपने मन में कहा—"आखिर है तो सुअरिया की ही जाई।"

इसके पश्चात् वह अपनी उस लड़की के पास गया जो गधी की बच्ची थी। यहाँ भी समधी ने उसी प्रकार उसकी खातिरदारी और प्रशंसा की जिस प्रकार अन्य दो समधियों ने की थी। समधी ने उसकी कन्या की भी प्रशंसा की और कहा—"आपकी कन्या बड़ी सीधी-सादी और भोली-भाली है। बेचारी दिन भर काम में लगी रहती है। चाहे किसी काम में जुटा दो, कभी 'न' नहीं करती। पर यह बात ज़रूर है कि काम धीरे-धीरे करती है। कितना ही जल्दी का काम हो, एक घंटे के काम में चार घंटे लगा देगी। यदि जल्दी करने के लिये कहो तो काम खराब कर देगी। कभी-कभी काम करते समय पड़ोसिनों से बातें करने लगती है और काम करना भूल जाती है। आलसिन इतनी है कि भोजन पकाते-पकाते सो जाती है। डाँट-फटकार का उस पर कोई असर ही नहीं। बुद्धि तो परमात्मा ने दी ही नहीं। किसी बात को बार-बार समझाओ, तब भी नहीं समझती। बच्चे उसे कभी-कभी 'गधी की बच्ची', कह देते हैं।" ब्राह्मण ने मन में कहा—"कौन मेरी लड़की है ? है तो गधी की ही जाई।"

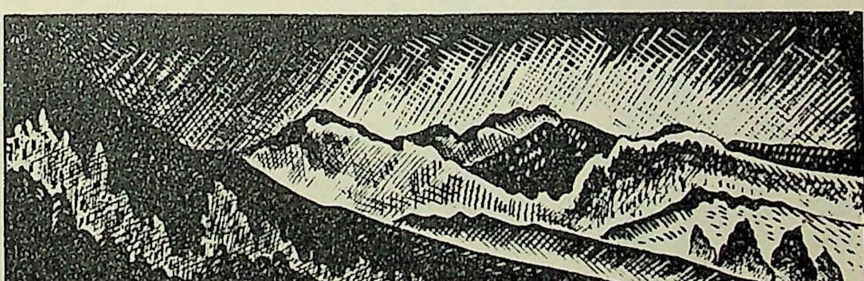
अन्त में वह अपनी कन्या के पास गया। यहाँ भी उसका स्वागत-सत्कार हुआ। समधी ने उसकी और उसकी कन्या की भूरि-भूरि प्रशंसा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

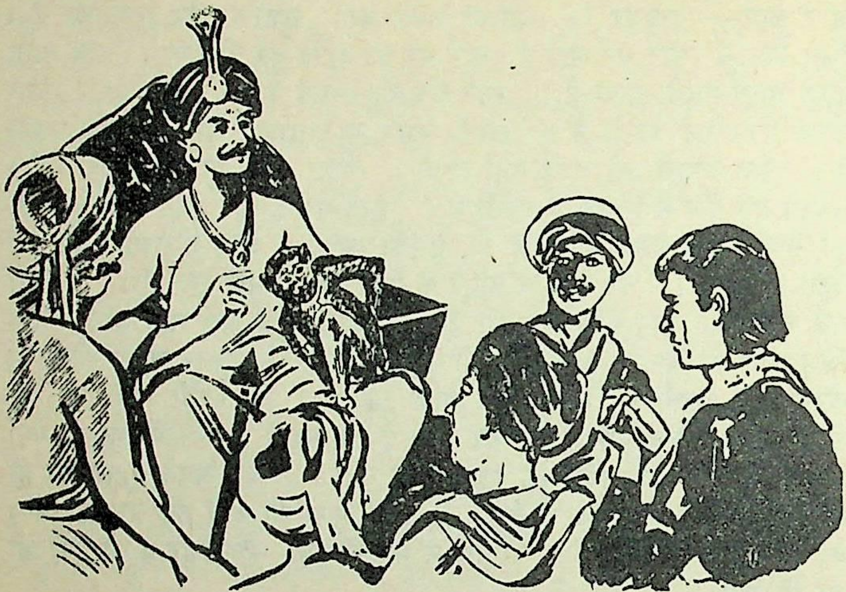
और कहा—"बन्धुवर ! आपकी कन्या बड़ी सुशील और सुलक्षणी है। जिस दिन से हमारे घर आई है हमारे घर का दरिद्र दूर हो गया। वह प्रातः काल सबसे पहले उठती है। सारे घर की सफ़ाई करती है। नित्य स्नान करके पूजा-पाठ करती है। खाली समय में रामायण और भागवत पढ़ती है। खेल-तमाशे उसे अच्छे नहीं लगते। मेला देखने आज तक नहीं गई। सबको बड़े प्रेम से भोजन खिलाती है। सास-ससुर, पति और अन्य गुरुजनों की सेवा करके प्रसन्न होती है। उसका व्यवहार और बोलचाल का ढंग बहुत अच्छा है। घर के और बाहर के सभी उससे प्रसन्न रहते हैं। घर की सब चीज़ों की सार-सँभाल रखती है। कोई फिज़ूल खर्च नहीं होने देती। जिस चीज़ की ज़रूरत होती है, उसी को मँगाती है। बेकार चीज़ों को जमा करके नहीं रखती। अपने लिये आज तक कभी एक साड़ी लाने को भी नहीं कहा। जब हम खरीद कर लाते हैं तो कहती है—'अभी इसकी क्या ज़रूरत थी।' आभूषण तो पहनती ही नहीं। वह अपने सुहाग को ही सबसे बड़ा आभूषण समझती है। मैं उसके गुणों की कहाँ तक प्रशंसा करूँ। वह तो साक्षात देवी है।" ब्राह्मण ने मन में कहा—'आखिर है तो स्त्री की की ही जाई।'

इसके बाद वह प्रसन्न होकर घर लौट आया।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुधुवा एक छलांग में राजा की गोद में जाकर बैठ गया।

बंगाल की लोककथा

कलावती

मन्मथनाथ गुप्त

एक राजा था। उसके सात रानियां थीं। राजा का राज्य काफ़ी बड़ा था। फ़ीलखाने में हाथी, घुड़साल में घोड़े, भण्डार में मोती और रत्न खचाखच भरे थे। कहीं किसी बात की कमी नहीं थी। कमी थी तो बस एक बात की। वह यह कि राजा के सात रानियां होते हुए भी कोई लड़का नहीं था।

एक दिन रानियां नहा रहीं थीं कि तालाब के किनारे एक बाबा जी आ गये, और उन्होंने बड़ी रानी के हाथ में एक जड़ी देते हुए कहा—"इसे सिल पर पीस कर सातों खा जाना। सब के एक-एक कुमार होगा।"

रानियां बहुत खुश हुईं। रानियों ने निश्चय किया कि आज सारे काम हम खुद करें, और फिर जड़ी खायें। इसलिये कोई खाना पकाने, कोई

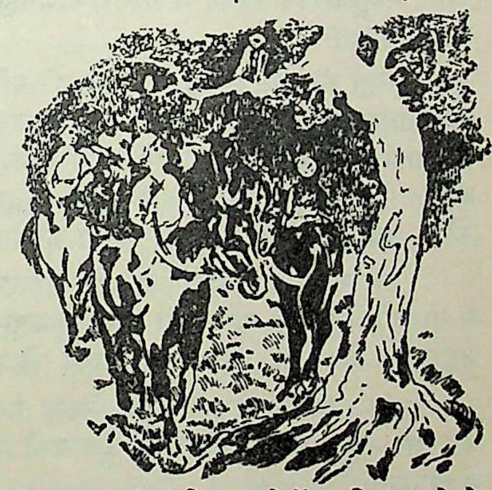
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरकारी काटने, कोई मसाला पीसने में जुट गई। बाबा जी की दी हुई जड़ी बड़ी रानी के पास थी। उसने पांचवी रानी को जड़ी देते हुए कहा—"इसे बाँट लो, और हम लोग थोड़ी-थोड़ी खायें।" पांचवी ने कुछ स्वयं खा लिया, फिर बड़ी रानी को दी, तो उसने खा ली। इस प्रकार से खाते खाते कुछ नहीं बचा, और छोटी रानी जो बाहर के हिस्से में कहीं मछली काट रही थी, वह जड़ी खाने से रह गई। जब छोटी रानी ने यह माजरा देखा, तो वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। तब रानियां एक दूसरे को दोष देने लगीं। अन्त में एक रानी ने कहा कि क्यों न सिल बट्टा धोकर इसे पिला दिया जाय, एक रानी तो कटोरी धोकर पी ही चुकी है, होना होगा, तो इसीसे इसके भी कुमार होगा।

क्या करती, छोटी रानी ने सिल की धोबन ही पी। दस महीने दस दिन पर पांच रानियों के तो कुमार हुए। जिसने कटोरी धोकर पी थी, उसके पेट से एक उल्लू पैदा हुआ और छोटी रानी के पेट से एक बन्दर उत्पन्न हुआ। पांच रानियों के दरवाज़ों पर तो ढोल बजने लगे, और दोनों रानियों के घरों में रोना-पीटना मच गया। राजा ने पांच रानियों का तो बड़ा आदर किया, और बाकी दो रानियों को रनिवास से निकाल बाहर किया। छठी रानी चिड़ियाखाने में नौकरानी हो गई, और छोटी रानी गोबर बटोरती हुई मारी-मारी फिरने लगी।

धीरे-धीरे कुमार बड़े हुए, और उल्लू और बन्दर भी बड़े हुए। पांच कुमारों के नाम इस प्रकार से हुए—हीरा कुमार, माणिक कुमार, मोती कुमार, पुखराज कुमार और कांचन कुमार। उल्लू का नाम पड़ा भुतुवा, और बन्दर का नाम पड़ा बुधुवा।


पांच कुमार पांच पक्षिराज घोड़ों पर फिरा करते थे। भुतुवा और बुधुवा एक मौलश्री के पेड़ पर रहते थे।

पांच कुमार पांच पक्षिराज घोड़ों पर फिरा करते थे। उनके साथ न मालूम कितने सिपाही और दूसरे लोग अर्दली में रहते थे। भुतुवा और बुधुवा एक मौलश्री के पेड़ पर रहते थे।

4—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचों राजकुमार कहीं इसे मारते थे, तो कहीं उसे नोचते थे, लोग उनसे परेशान थे। बुधुवा गोबर बटोरने में माँ का साथ देता था, और भुतुवा चिड़ियाखाने में चिड़ियों को चुग्गा खिलाता था।

एक दिन सब राजकुमार टहलने निकले, तो उन्होंने पेड़ पर भुतुवा और बुधुवा को देखा। बस उन्होंने हुक्म दे दिया कि इन्हें पकड़ लिया जाय। थोड़ी ही देर में दोनों जाल में फांस लिये गये, और उन्हें पिंजड़ों में बन्द कर राजमहल में लाया गया। भुतुवा और बुधुवा ने देखा कि यह तो बहुत बढ़िया जगह है, तो वे कुमारों से बोले—"जो हम लोगों को ले आये, तो हमारी माताओं को भी ले आओ।" कुमारों ने पूछा—"तुम्हारी मांताएँ कहां हैं?"

इस पर उन दोनों ने अपनी माताओं का हाल बताया। तब कुमार बोले—"भला मनुष्य से भी उल्लू और बन्दर पैदा होते हैं?"—कह कर वे हंसने लगे।

पर एक सिपाही ने उन रानियों का वृत्तान्त बताया, और कहा कि ये उन्हीं रानियों के बेटे हैं। यह सुनकर कुमारों ने हुक्म दे दिया कि इन दोनों मनहूसों को फ़ौरन से पेश्तर राजमहल से निकाल बाहर किया जाय। ऐसा ही हुआ।

सोने की खाट में बैठकर, चांदी की मचिया पर पैर रख कर, पांच रानियाँ बाल संवार रही थीं। एक दासी ने आकर खबर दी कि नदी के किनारे एक तोतापंखी जहाज़ लगा है, उसमें चांदी के डांड और हीरे के पतवार हैं। उस जहाज़ में बादलों के रंग के बाल वाली कन्या सोने के तोते से बात कर रही है। फ़ौरन सब रानियाँ दौड़कर उस कन्या को देखने के लिये चलीं।

उस समय तक तोतापंखी पाल उठाकर रवाना हो चुका था। जहाज़ से बादलों के रंग के बालवाली कन्या ने कहा—"मोती का फूल, मोती का फल जहां, वह देश मेरा, वहां अपने लड़कों को भेजना।"

तब तक जहाज़ और दूर निकल गया। उसमें से फिर उस कन्या ने कहा—"जो लड़का मोती का फूल लाने में समर्थ होगा, उसकी बांदी होकर मैं आऊँगी।"

तोतापंखी तो चला गया, और इधर रानियों ने कुमारों को खबर दी। कुमार पक्षिराजों पर चढ़ कर आये। राजा ने भी सारी बातें सुन कर मोरपंखी तैयार करने का हुक्म दिया। उपाय सोचने के लिये विशेष दरबार बुलाया गया। भुतुवा और बुधुवा भी वहाँ पहुँचे। बुधुवा एक छलांग में राजा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोद में जाकर बैठ गया, और भुतुवा राजा के कंधे पर जा बैठा। दरबार में कोहराम मच गया, और सब लोग दौड़ पड़े। बुधुवा और भुतुवा ने राजा को पिता जी कह कर पुकारा, इस पर राजा की आंखों में आंसू आ गये, और वे उन्हें लेकर चले गये।

पांच झंडियाँ उड़ा कर पांच मोरपंखी घाट में आकर लगे। रानियाँ अपने कुमारों को ठाट-बाट से चढ़ाने के लिये आयीं। उधर राजा भी बुधुवा और भुतुवा को लेकर आये। इस पर बुधुवा और भुतुवा ने कहा कि उन्हें भी मोरपंखी चाहिये। रानियों ने जो यह बात सुनी, तो उनके एक-एक तमाचा जमाया, और अलग कर दिया। राजा टुकुर-टुकुर देखते रह गये, कुछ बोल न सके। रानियों के सामने उनका मुँह नहीं खुला।

राजा और रानियाँ तो चली गईं, तब बुधुवा ने भुतुवा से पूछा—"भाई मेरे, अब क्या हो?"

भुतुवा बोला—"कुछ समझ में नहीं आता।"

बुधुवा ने कहा—"चलो बढ़ई के यहाँ चलें।"

उधर भुतुवा और बुधुवा की माताएँ रो-रो कर दिन काटती थीं। उन्होंने सुना कि पांचों कुमार मोरपंखी लेकर रवाना हुए। इस पर वे और भी रोने लगीं। फिर उन लोगों ने जाकर नदी में सुपारी के पेड़ की दो डोंगियां छोड़ दीं। उनकी इच्छा थी कि उनके लड़के भी मोरपंखी पर जायं। भुतुवा और बुधुवा नाव बनवाने के लिये बढ़ई के यहाँ जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने इन डोंगियों को देखा। उन्होंने कहा—"यह तो बड़ा अच्छा हुआ, चलो इन्हीं पर चलें।

राजकुमारों के मोरपंखी तीन बुढ़ियों के राज्य में पहुँचे। फ़ौरन ही तीन बूढ़े प्यादों ने आकर मोरपंखियों को रोक लिया, और कुमारों तथा उनके सिपाहियों, मल्लाहों आदि को थैली में भर कर बुढ़ियों के पास पहुँचाया। बुढ़ियों ने बिना पानी के उन्हें गटक लिया, और वे सो गईं। बहुत रात को कुमार आपस में बात करने लगे कि यह तो अच्छा रहा कि जन्म भर के लिये बुढ़ियों के पेट में कैद हो गये। अब न तो देश जाना होगा, न मांओं से मिलना होगा।

वे बात कर ही रहे थे कि बाहर से आवाज़ गई—"भैया, भैया।" भीतर से आवाज़ आयी—"हम पेट में हैं।"

Gurukula Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर से आवाज़ गई—"कोई बात नहीं। मैं बुढ़िया की नाक के ज़रिये से पूँछ डालता हूँ। तुम लोग उसे पकड़ कर चले आओ।"

कुमारों ने ऐसा ही किया, और बाहर आकर देखा कि बुधुवा और भुतुवा हैं। बन्दर और उल्लू ने कहा—"बोलो मत, फ़ौरन तलवार से बुढ़ियों के गले काट डालो।"

ऐसा ही हुआ। फिर सब लोग जाकर मोरपंखियों पर सवार हो गये, और बुधुवा भुतुवा को किसी ने पूछा भी नहीं।

मोरपंखी सारी रात चल कर सवेरे लाल नदी के पानी में दाखिल हुए। लाल नदी का कोई किनारा नहीं था, इसलिये मल्लाह रास्ता भूल गये। मोरपंखी समुद्र में जा गिरे। मल्लाह हाय-हाय करने लगे। सात दिन सात रात तक मोरपंखी समुद्र में तैरते रहे। अब पांचों मोरपंखी डूबने को हुए। कुमार अब बुधुवा और भुतुवा को याद करने लगे। याद करते ही वे आ गये, और अपनी सुपारी की डोंगियों को मोरपंखियों से बांध कर कुमारों के पास आये। और मल्लाहों से बोले —"उत्तर की तरफ चलो।"

थोड़ी ही देर में मोरपंखी किसी ऐसी नदी में पहुंचे, जिसके दोनों किनारों पर तरह तरह के फूल और फल के पेड़ लगे हुए थे। कई दिन के भूखें प्यासे कुमार और मल्लाह खा पीकर तृप्त हुए। जब वे तृप्त हो गये, तो कुमार बोले—"बन्दर और उल्लू को रखने से सगुन खराब होगा, इन्हें पानी में फैंक दो। इनकी डोंगियां को भी खोल दो।"

थोड़ी दूर गये होंगे कि एक जगह पर बिना किसी कारण के सब मोरपंखी डूब गये। किसी का पता ही नहीं रहा। थोड़ी देर में बुधुवा और भुतुवा की डोंगियां आयीं, तो बुधुवा बोला —"मेरा मन कुछ कह रहा है कि यहाँ हमारे भाई मुसीबत में पड़ गये हैं। डुबकी लगा कर देखा जाय।"

भुतुवा बोला—"मरने दो मुझे खुशी है।"

बुधुवा बोला—"ऐसी बात न करो भाई। मैं कमर में रस्सी बाँध कर उतरता हूँ, जब रस्सी में खिचाव आवे, तभी मुझे उठाना"—कह कर बुधुवा ने डुबकी लगाई, और भुतुआ बैठा रहा।

बुधुआ ने पाताल में पहुँच कर देखा कि वहाँ एक लम्बी सुरंग है। बुधुवा सुरंग में दाखिल हुआ। वहाँ एक राजमहल मिला। बहुत ही सुन्दर था। पर वहाँ न तो कोई आदमी था न आदमजाद। वहाँ एक सौ साल की बुढ़िया बैठ कर कथरी सी रही थी। उसने बुधुवा को देखते ही कथरी फैंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर मारी । फ़ौरन ही हज़ारों सिपाही आकर बुधुवा को बाँध कर राजमहल में ले गये । वहाँ कुमारों ने उसका स्वागत किया । बुधुआ ने कहा—"अच्छा ।"

अगले दिन वह मरा दिखाई पड़ा, तो दासियों ने उसे उठा कर फैंक दिया बुधुवा मरा तो था नहीं, यों ही मक्कर मारे पड़ा था । इधर-उधर ताक कर बुधुवा ने देखा कि राजमहल के तिमंज़िले पर बादलों के रंग की बाल वाली राजकुमारी सोने के तोते के साथ बात कर रही है । बुधुवा पेड़ों पर होता हुआ छत पर पहुँचा । उस समय राजकुमारी सोने के तोते से कह रही थी—"सोने के तोते, चाँदी की डांड और हीरे की पतवार बेकार में गई । कोई आया ही नहीं ।"

राजकुमारी के बालों में मोती का फूल था । बुधुवा ने धीरे से उस फूल को ले लिया । तोते ने राजकुमारी से कहा—"देखो तो तुम्हारा फूल किधर गया ?"

राजकुमारी ने बालों में हाथ डालकर देखा कि फूल नहीं हैं । तब तोता बोला—"तुम्हारा दूल्हा आ गया ।"

कलावती राजकुमारी ने पीछे लौट कर देखा कि बन्दर है, तो वह दुःख के मारे पछाड़ खाकर गिर पड़ी, पर क्या करती, उसने जो शर्तें रखीं थीं, वे पूरी हो गईं, इसलिये बुधुवा को पति तो बनाना था ही । होश में आकर उसने बन्दर के गले में माला डाल दी । तब बुधुवा ने हंस कर पूछा—"राजकुमारी तुम किस की हो ?"

राजकुमारी बोली—"पहले मैं माँ बाप की थी, फिर मैं अपनी हुई, अब मैं तुम्हारी हूँ ।"

बुधुवा बोला—"अगर ऐसा ही है, तो तुम मेरे भाइयों को छोड़ दो, और मेरे साथ घर चलो । वहाँ मेरी माएँ तुम्हारा इन्तज़ार करती होंगी ।"

राजकुमारी बोली—"तुम मुझे यों नहीं ले जा पाओगे, मैं इस डिबिया में बैठती हूँ, तुम मुझे इसी डिबिया में बैठाकर ले चलो ।"

बुधुवा ने ऐसा ही किया । इतने में तोते ने नगाड़े में चोट की, और फ़ौरन बाज़ार लग गया । राजकुमारी वाली डिबिया दूकानदारों की डिबिया में मिल गई ।

बुधुवा ने देखा कि यह तो अच्छा तमाशा है, उसने नगाड़े में चोट दी । दायें चोट देता, तो बाज़ार बसता, और बायें चोट देता, तो बाज़ार उठ जाता । बस बुधुवा ने बन्दर स्वभाव के कारण एक बार दायें और फिर बायें चोट करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरू किया। एक मिनट में कई कई बार बाज़ार बसा और उजड़ा। दूकानदार माल रखते ढोते थक गये। तब उन्होंने बुधुवा को उसकी डिबिया लौटायी, और हाथ जोड़ लिये।

बुधुवा ने डिबिया ले ली, और साथ ही साथ नगाड़ा भी ले लिया। राजकुमारी ने निकलकर कहा कि भूख लगी है, पेड़ से फल ले आओ। बुधुवा फल लेने पहुँचा, तो फल तो बहुत सुन्दर थे, पर पेड़ के नीचे एक अजगर फुफकार रहा था। बुधुवा ने तब एक सूत निकाला, और अपनी कमर से उस सूत को बांधकर पेड़ के कई फेरे लगाये, फिर सूत को कस दिया, तो उसमें लगे हुए मंझे के कारण अजगर के कई टुकड़े हो गये। इसके बाद बुधुवा फल ले आया। फिर बुधुवा ने अपने पाँचों भाइयों को मय उनके लश्कर और सामान के एक साथ बांध लिया, बुढ़िया की कथरी छीन ली, और फिर पीठ की रस्सी को खींचा। बस भुतुवा ने ऊपर से खींच लिया। फ़ौरन सब लोग ऊपर आ गये, और मल्लाहों ने मोरपंखियों को चालू किया।

बुधुवा जाकर मोरपंखी की छत पर बैठा, और उल्लू मस्तूल पर बैठा। छत पर बुधुवा डिबिया के अन्दर किसी से बात करता था। पतवार वाले मल्लाह ने पांचों राजकुमारों को यह खबर दी। राजकुमारों ने कहा—"अच्छा यह बात है?"

जब रात गहरी हुई और सब लोग सो गये, तो राजकुमारों ने जाकर बुधुवा की डिबिया चुरा ली, और उसे नगाड़ा और कथरी समेत पानी में ढकेल दिया। भुतुवा मस्तूल पर था, उसे एक तीर मारकर पानी में डाल दिया फिर डिबिया से राजकुमारी को निकाल कर उससे राजकुमारों ने पूछा—"अब बताओ कि तुम किसकी हो?"

राजकुमारी बोली—"नगाड़ा जिसका, मैं उसकी।"

राजकुमारों ने उसे मोरपंखी की एक कोठरी में कैद कर लिया। मोरपंखी आकर घाट पर लग गये। राजा आये, रानियां आयीं, सारी प्रजा आयी, लोगों को मालूम हुआ कि बादलों के रंग के बालवाली राजकुमारी को लाया गया है। रानियों ने यथारीति धान और दूध से आशीर्वाद करके कलावती राजकन्या को वरण किया। रानियों ने पूछा—"राजकुमारी तुम किसकी हो?"

राजकुमारी बोली—"नगाड़ा जिसका, मैं उसकी।" एक एक करके रानियों नें सब राजकुमारों का नाम लिया, और पूछा, "तुम फलाने की हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर उसने पांचो बार ना में उत्तर दिया ! रानियों ने कहा—"फिर हम लोग तुम्हें काट डालेंगी ।"

राजकुमारी बोली—"एक महीने तक मेरा व्रत है, यह खतम हो जाये, तो फिर चाहे जो कुछ करना ।"

भुतुवा और बुधुवा की मायें एक दिन दुःख के मारे नदी में डूबने जा रही थीं कि इतने में भुतुवा और बुधुवा माँ! माँ! करते हुए आ गये । अगले दिन उनकी झोपड़ियों के पास नगाड़े की बदौलत बड़ा भारी बाज़ार लगा, और सारे पेड़ों में एक से एक बढ़िया फल लग गये । फिर देखा गया कि हज़ारों सिपाही पहरे पर हैं । राजा के पास खबर गई । उधर कलावती ने भी कहा कि मेरा व्रत पूरा हो गया । अब मुझे मारना हो मारिये, काटना हो काटिये । राजा की आंखें खुल गईं, और उन्होंने हुक्म दिया कि गाजे बाजे के साथ छठी और छोटी रानी को राजमहल में लाया जाय । पांचों रानियों ने सुनकर दरवाज़े बन्द कर दिये । कलावती ने उनका स्वागत किया ।

अगले दिन बड़ी धूम धाम से बुधुवा के साथ उस राजकुमारी की शादी हुई, और भुतुवा के लिए भी हीरावती राजकुमारी मिल गई । न तो पांचों रानियों ने दरवाज़े खोले, और न पांचों राजकुमारों ने दरवाज़े खोले । राजा ने इनके दरवाज़ों को बाहर से कांटे और मिट्टी लगवा कर बन्द करवा दिये।

एक दिन रात को बादलों के रंग के बालवाली राजकुमारी और हीरावती सो रही थीं, तो उन्होंने जग कर देखा कि उनके पलँगों पर बन्दर और उल्लू की खाल रखी हुई है । दोनों राजकुमारियों ने बाहर झाँका, तो दो बहुत सुन्दर राजकुमार राजमहल पर पहरा देते हुए दिखाई पड़े । तब दोनों ने युक्ति करके खालों को जला डाला । खालों की बदबू से दोनों राजकुमार भाग आये, और कहा—"तुम लोगों ने यह क्या किया ?" पर राजकुमारियों ने कहा—"हमने अच्छा किया ।"

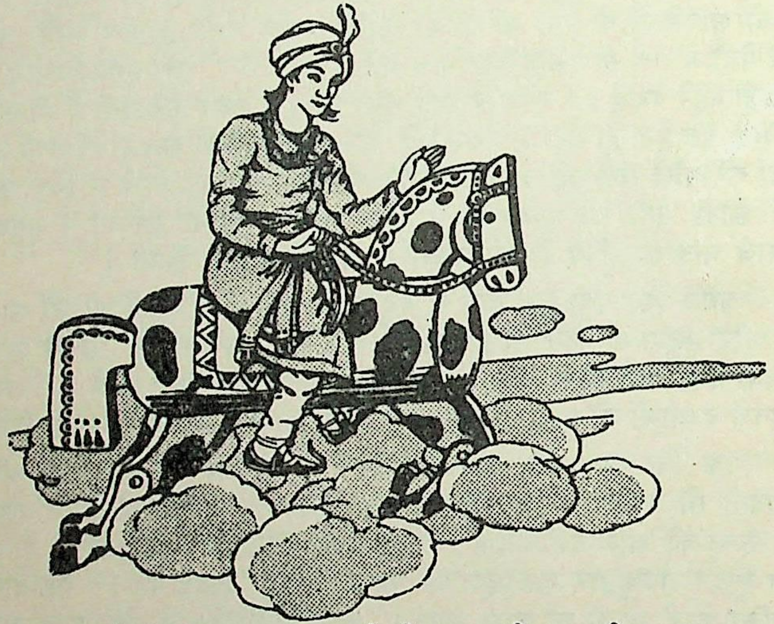
राजा बहुत सुखी हुए । बुधुवा का नाम बुद्धकुमार और भुतुवा का नाम रूपकुमार पड़ा और सब लोग सुख से रहने लगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काठ का घोड़ा

शचीरानी गुर्टू



घोड़ा बड़े ज़ोर से ऊपर आकाश की ओर उड़ा, और साथ ही राजकुमार को भी ले गया।

पाटन नगर में कपूरसिंह नाम का एक धर्मात्मा राजा राज्य करता था। विवाह के कई वर्ष बीत जाने पर भी उसके कोई पुत्र न हुआ था, इसलिए ब्राह्मणों और पंडितों के कहने पर उसने भगवान् शिव की आराधना प्रारम्भ की। कुछ दिन बाद शिव जी की कृपा से उसके यहाँ एक बहुत सुन्दर बालक ने जन्म लिया। सातवें वर्ष राजकुमार को एक पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया। वहाँ एक बढ़ई के लड़के से उसकी बहुत गहरी मित्रता हो गई। उन दोनों में इतना अधिक प्रेम बढ़ गया कि राजा और दरबारियों को बड़ी चिन्ता हुई, और वे उन्हें एक दूसरे से अलग करने का उपाय सोचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। किन्तु राजकुमार किसी की बात भी नहीं सुनता था। उसने सबसे कह रखा था कि यदि कोई मेरे मित्र का अपमान करेगा और उसे नाराज़ करेगा तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगा। आखिर बढ़ई के लड़के ने ही अपनी बुद्धिमानी से राजकुमार से अलग होने की एक तरकीब सोची। वह उसकी आज्ञा लेकर बढ़ई का काम सीखने के लिए किसी दूर नगर में चला गया। राजकुमार को इससे दुःख तो बहुत हुआ, लेकिन उसने अपने मित्र की भलाई का ख्याल करके उसे जाने की आज्ञा दे दी। जाते हुए उसने बढ़ई के लड़के से यह प्रतिज्ञा करा ली कि वह लौटते हुए उसके लिए कोई आश्चर्यजनक वस्तु लेकर लौटे।

बढ़ई का लड़का किसी अच्छे गुरु की खोज में इधर-उधर भटकता रहा। दूर बहुत दूर, नदी-नाले पार करके, कई गाँवों, बस्तियों और शहरों को लांघ कर वह एक नगर में पहुँचा, जहाँ एक बहुत बड़े शिल्पी से उसकी भेंट हुई। शिल्पी ने बहुत प्रेम से बढ़ई के लड़के को अपने पास रक्खा, और काम सिखाने लगा। आठ वर्ष तक लगातार मेहनत करने के बाद वह एक निपुण कारीगर हो गया। शिल्पी ने एक दिन उससे कहा, "अब तुम अपने घर जाकर धन और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हो।"

बढ़ई के लड़के ने उत्तर दिया—"मैं अपने नगर में तब तक नहीं घुस सकता, जब तक कि अपने प्यारे मित्र राजकुमार के लिए कोई आश्चर्यजनक चीज़ न ले जाऊँ।"

शिल्पी उसे तुरन्त गोदाम में ले गया और उसने उसे एक खूबसूरत, काठ का उड़ने वाला घोड़ा दिया, जो घुमावदार पेचों की सहायता से आकाश में उड़ता था। शिल्पी ने घोड़े को उड़ाने और रोकने की तरकीब उसे सिखा दी। घोड़ा पाकर बढ़ई का लड़का बड़ा खुश हुआ, और वह कृतज्ञ-हृदय से अपने नगर को लौटा, जहाँ उसका खूब धूम-धाम से स्वागत किया गया।

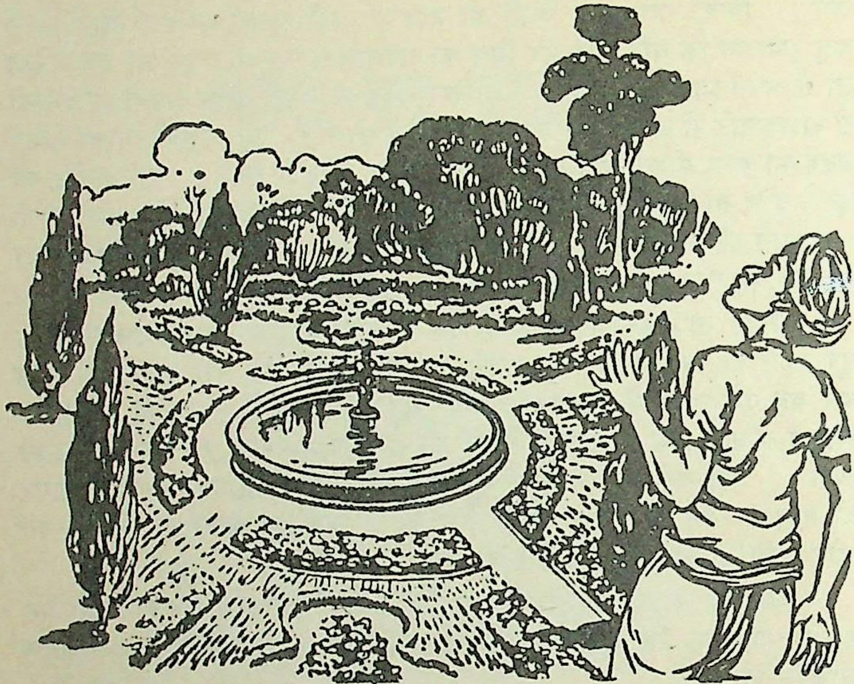
युवक बढ़ई ने वह घोड़ा अपने मित्र राजकुमार को दिखलाया। दूसरे दिन सुबह वे दोनों घोड़े की परीक्षा के लिए एक बाग में गए। राजकुमार घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और उसका ध्यान पूर्वक निरीक्षण करने लगा। न जाने कब और कैसे उसकी उंगली असली पेंच को छू गई। घोड़ा बड़े ज़ोर से ऊपर आकाश की ओर उड़ा, और साथ ही राजकुमार को भी ले गया। बढ़ई का लड़का भौचक्का-सा मुँह बनाए आकाश की ओर ताकता खड़ा रह गया।

कुछ देर बाद राजकुमार की खोज के लिये चारों तरफ दौड़-धूप होने लगी। बढ़ई के लड़के ने सारी घटना कह सुनाई, लेकिन किसी को विश्वास नहीं हुआ, और सन्देह में उसे पकड़ कर जेल में डाल दिया गया।

5—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बढ़ई का लड़का भौचक्का-सा मुँह बनाए आकाश की ओर ताकता रह गया।

इधर आकाश में उड़ते हुए राजकुमार ने हर तरह से कोशिश की कि किसी प्रकार घोड़े की तेज़ चाल कम हो जाए, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। अन्त में बहुत देर बाद अचानक उसका हाथ ऐसे पुर्ज़े पर पड़ गया, जिससे कि उड़ता हुआ घोड़ा रुक गया, और कनकपुर में जाकर टिका। पृथ्वी पर उतर कर राजकुमार को पास ही एक छोटा-सा सुन्दर बगीचा दिखाई पड़ा। वह उसी में घुस गया, और पेड़ की शीतल छाया में पड़कर सो गया। बगीचे में राजा की मालिन रहती थी। उसने सोते हुए राजकुमार को जगाया और उसकी दुःख भरी कहानी सुनकर पुत्र की भांति उसे अपने पास रख लिया। वह वहाँ अत्यन्त सुखपूर्वक रहने लगा। मालिन रोज़ कनकपुर की राजकुमारी के लिए सुगन्धित फूल, माला गुलदस्ते आदि सजा कर ले जाया करती थी। एक दिन स्वयं राजकुमार ने राजकुमारी के लिए एक बहुत सुन्दर गजरा गूँथा और उसमें अपने हाथ की अंगूठी छिपाकर रख दी। राजकुमारी गजरा और अंगूठी पाकर बड़ी खुश हुई। वह अंगूठी वाले राजकुमार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखने के लिए लालायित हो उठी और उसने छिपा कर उसे अपने महलों में बुलाया। राजकुमार काठ के घोड़े पर चढ़कर आकाश-मार्ग से महल में दाखिल हुआ। वहाँ दोनों ने चुपचाप, बिना किसी को बताए, गुप्त रीति से अपना विवाह आपस में कर लिया।

बहुत दिनों तक महल में रहते-रहते राजकुमार का मन भर गया, इसलिए एक दिन चुपचाप वह राजकुमारी के साथ घोड़े पर बैठकर आकाश में उड़ चला। घोड़ा एक घने, सुनसान जंगल में आकर रुका। राजकुमारी बहुत थक गई थी, उसे ज़ोरों की प्यास भी लगी थी, आस-पास पानी मिलना मुश्किल था, अतः राजकुमार घोड़े पर चढ़कर उसके लिए पानी ढूँढ़ने चला गया, और वह वहां अकेली रह गई। जब राजकुमार घोड़े पर चढ़ा हुआ बड़ी तेज़ी से उड़ा आ रहा था, तो अचानक उसका घोड़ा पहाड़ की चोटी से टकरा कर एक विशाल नदी में जा गिरा। इधर राजकुमारी प्यास से छटपटा कर अचेत सी हो रही थीं, तभी उसके एक सुन्दर पुत्र ने जन्म लिया। वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। नवजात बालक को एक भेड़िया उठाकर ले गया।

नदी में गिरने पर राजकुमार को एक बहुत बड़ी मछली ने निगल लिया, लेकिन तत्काल वह मछली एक मछवाहे के जाल में फंस गई, और इस प्रकार मछली को चीरने पर राजकुमार के प्राणों की रक्षा हो गई। राजकुमार की सुन्दरता और बुद्धिमानी से मछवाहा इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने अपनी नौका, मकान, मछली का व्यापार आदि सब उसके सुपुर्द कर दिये। राजकुमार शीघ्र ही एक चतुर व्यापारी हो गया।

इधर वर्षा की हल्की फुहार से राजकुमारी की बेहोशी टूटी और जब उसे यह ज्ञान हुआ कि वह अपना बच्चा और पति दोनों गंवा बैठी, तो वह दुःख से पागल सी हो गई। रोती, कलपती, भूख और प्यास से व्याकुल होकर वह इधर-उधर भटकती रही। अन्त में, वह कोकिलपुर पहुँची, जहाँ कि एक बुढ़िया जादूगरनी ने उसे अपने आश्रम में रख लिया। बुढ़िया बहुत अमीर थी और उसने एक सरोवर के बीच अपना महल बनवा रक्खा था। राजकुमारी बहुत सुखपूर्वक उसके पास रहने लगी और उसके मरने के बाद उसके धन और महल की मालकिन हो गई। वह फिर पहले की तरह शान से रहने लगी।

राजकुमारी का नया पैदा हुआ बालक, जिसे कि भेड़िया उठा कर ले गया था, एक शिकारी राजा के हाथ पड़ गया। उसके कोई पुत्र न था। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रानी रोती हुई अपने पति के चरणों पर गिर पड़ी। मां-पिता-पुत्र तीनों का सम्मिलन बड़ा ही अपूर्व था।

ऐसा सुन्दर बालक पाकर फूला न समाया और उसने अपनी रानी को जाकर उसे सौंप दिया। रानी अपने पुत्र की तरह उसका पालन-पोषण करने लगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजसी ठाठ-बाट में बालक बड़ा होने लगा। बूढ़े राजा के मरने के बाद रानी ने उसे अपने पति के सिंहासन पर बैठा दिया। एक दिन राजा शिकार के लिए गया। कोकिलपुर में सरोवर के महल से झांकती हुई उसे सुन्दर रानी की थोड़ी सी झलक मिली। उसने सोचा, इस सुन्दरी को राज दरबार में बुलवाया जाय। उसने हाज़िर होने का हुक्म भेजा किन्तु रानी ने उसे अस्वीकार कर दिया। राजकुमार को इस पर बड़ा क्रोध आया, और उसने जबर्दस्ती उसे पकड़वा मंगाया। जैसे ही आंसू बहाती हुई रानी राज्य की सीमा में घुसी, वैसे ही भयंकर असगुन होने लगे और आकाशवाणी हुई, "राजकुमार ! तुम्हें मालूम नहीं है, यह तुम्हारी माँ है। यदि तुम इसका अपमान करोगे तो पृथ्वी पाताल में धंस जाएगी।" यह सुन कर राजकुमार का दिल दहल गया, मुँह फीका पड़ गया, और वह लज्जा और शर्म से ज़मीन में गड़-सा गया। वह दौड़कर राजमाता के पास गया, और अपने असली माता-पिता का हाल जानने का आग्रह करने लगा। राजमाता ने कहा, प्यारे बेटा ! तू ईश्वर की ओर से हमारे पास आया था। महाराज एक बार जब शिकार खेलने गए थे तो तू जंगल में पड़ा मिला था। तभी से तू मेरा प्यारा बेटा है।"

यह सुन कर युवक राजा उस नई रानी के पास गया, और उससे पिछले जीवन की सारी बातें पूछीं। उसने अपनी दुःख भरी कहानी राजकुमार को कह सुनाई। उसे अब पूर्ण विश्वास हो गया कि यही मेरी असली मां है। वह उसके चरणों में गिर कर क्षमा माँगने लगा। रानी ने भी अपने पुत्र को हृदय से लगा लिया। अब राजकुमार अपने खोये हुए पिता को खोज निकालने की कोशिश में लगा।

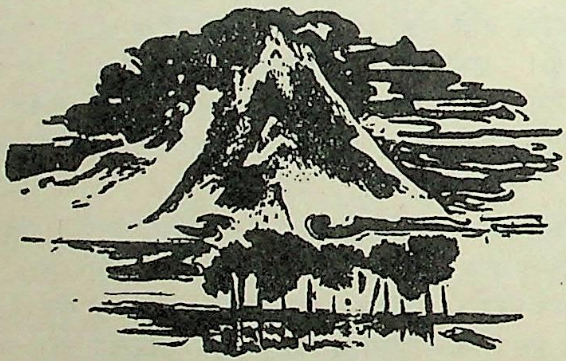
इस घटना के कुछ दिन बात एक धनिक व्यापारी राज्य की सीमा में उतरा। उसके पास अनेक कीमती जवाहरात और हीरे थे। वह दरबार में भी बुलवाया गया। व्यापारी का मुँह राजकुमार के मुँह से इतना अधिक मिल रहा था कि लोग आश्चर्य चकित हो एक दूसरे की ओर ताक रहे थे। राजकुमार को भी कुछ सन्देह होने लगा। उसने व्याापरी से पूछा, "आप इतने अमीर कैसे हुए ?"

व्यापारी की आँखों में आंसू आ गये और उसने अपने विगत जीवन की कहानी कह सुनाई। उसने कहा कि "मैं अपनी प्यारी पत्नी के खो जाने से बड़ा दुःखी हूँ।" सारी कहानी सुनने के बाद राजकुमार अपने पिता को पहचान गया, और अपनी माँ के पास ले गया। रानी रोती हुई अपने पति के चरणों पर गिर पड़ी। माँ-पिता-पुत्र तीनों का सम्मिलन बड़ा ही अपूर्व था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे राज्य में उत्सव मनाया गया, किन्तु बड़ा राजा इतनी खुशी और चहल-पहल में भी उदास था। उसे रह-रह कर अपने बढ़ई मित्र की याद आ रही थी, जो उसके कारण अभी तक जेल में पड़ा सड़ रहा था। अतः वह अपने परिवार और कुछ सैनिकों को लेकर अपने राज्य में गया, जहाँ कि बूढ़े-राजा-रानी ने उसका खूब स्वागत किया। उसने तत्क्षण बढ़ई-पुत्र को जेल से बाहर निकाला और एक सुन्दर स्त्री से उसका विवाह कर दिया। राज्य में खूब खुशियाँ मनाई गईं, घी के दीपक जलाए गए और चारों तरफ आनन्द ही आनन्द छा गया। राजा और बढ़ई—दोनों मित्र अपने-अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रहने लगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी का आशीर्वाद

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

एक बार धर्मराज और लक्ष्मी लोगों की परीक्षा लेने के लिये एक जाड़े की मूसलाधार बरसती हुई संध्या में अत्यन्त वृद्ध तथा वृद्धा का रूप धारण करके पृथ्वीलोक में आये।

नगर के एक धनी सेठ के द्वार पर जाकर वे फाटक खटखटाने लगे। दरवाज़ा खोलकर सेठ जी ने जब उन्हें देखा तो बिगड़ कर बोले—"अरे, कीचड़-सने पाँवों से सारे दालान में मिट्टी फैला दी। भागो यहाँ से।"

"सेठ जी हम इस रात में कहाँ जायें"—वृद्धा गिड़गिड़ाई, "ठंड से प्राण निकल रहे हैं। कहीं ठहरने भर को जगह दे दो।" परन्तु सेठ ने द्वार बन्द कर लिया। उन दोनों को प्रकाश में सेठ के महल के पास ही एक टूटा-फूटा सा घर दिखाई पड़ा। उसके टूटे किवाड़ों में से दीये के प्रकाश की एक किरण भी दिखाई पड़ी। बुड्ढे ने बुढ़िया से कहा—"आओ चलो, उस घर में ही आश्रय मांग कर देखें।"



"सेठ जी हम इस रात में कहां जायें"—वृद्धा गिड़गिड़ाई, "ठंड से प्राण निकल रहे हैं। कहीं ठहरने भर को जगह दे दो।"

बुढ़िया ने कहा—"जब इतने बड़े सेठ ने अपने यहां स्थान नहीं दिया, तो ये कंगाल क्या देंगे, और ठहरने को जगह मिल भी गई तो रात भर में बिना ओढ़ने-बिछौने के इन फटे भीगे कपड़ों में तो प्राण ही निकल जायेंगे।" वृद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला—"कुछ भी हो, मुझ से तो अब और चला नहीं जाता।" और उसने आगे बढ़कर द्वार थपथपाया। दूसरे ही क्षण हाथ में दीया थामे, मैली-फटी धोती पहिने एक स्त्री ने द्वार खोला। उन दोनों की दशा देखते ही वह करुणा भरे स्वर में बोली—"हाय! हाय! बाबा! तुम इस अंधेरी रात में कहां भटक रहे हो। आओ, आओ, भीतर आ जाओ।"

उन्हें सहारा देकर वह भीतर ले गई। छोटी सी कोठरी में बस दो टूटी-फूटी चारपाइयाँ पड़ी थीं। उनमें से एक को खाली करके स्त्री ने उनसे बैठने को कहा। वृद्ध-वृद्धा के कपड़ों से जल चू कर कोठरी गीली हो चली, परन्तु उस स्त्री ने उसकी तनिक भी चिन्ता न करके, जल्दी-जल्दी अंगीठी में आँच सुलगा कर उन्हें तापने को कहा। फिर अरगनी पर से दो पुराने परन्तु धुले हुए कपड़े लाकर बोली, "बाबा! आप लोग अपने भीगे कपड़े उतार कर इन्हें लपेट लो। क्या करूं मैं बहुत गरीब हूँ। इससे इन्हीं दो कपड़ों में गुज़र करनी होगी। आपके कपड़े मैं निचोड़ कर फैला दूँगी।"

उन्हें कपड़े बदलवा कर वह दालान में गई और दो पीतल की छोटी-छोटी थालियों में बथुए का साग तथा बाजरे की रोटियाँ रख कर ले आई। "माता जी!" उसने वृद्धा से कहा—"आज मेरे घर में यही भगवान् का प्रसाद है। मुझे बहुत दुःख है कि न तो घर में घी है, न दूध और न चीनी।"

"कोई बात नहीं बेटी। हमें तो यह भोजन बड़ा स्वादिष्ट लगा।" वे दोनों खाते हुए बोले।

थोड़ी देर में उस स्त्री का पति भी आ गया। वह बेचारा भी रोज़गार की तलाश में दिन भर घूम कर अब थका-मांदा लौटा था।

पत्नी ने अतिथियों को भोजन खिला देने की बात उसे चुपके से द्वार पर ही बता दी थी।

वह भी बड़ा प्रसन्न हुआ। फिर दोनों ने अपने बिछौने उन दोनों वृद्धों को देकर उन्हें तो खाट पर सुलाया और आप दोनों एक फटा टाट ओढ़ कर धरती पर लेट गये।

प्रातःकाल अंधेरे ही जब पानी बन्द हो गया तो वे बुड्ढे-बुढ़िया जाने लगे। सरला (स्त्री) ने उन्हें हाथ जोड़ कर सूरज निकलने तक रोका। फिर घर में जो चार दाने चने पड़े थे उन्हें पीस कर आटा गूँध, रोटियाँ बना, उनके साथ बांध दी और कहा—"माता! हम निर्धन हैं। इसी से जैसी सेवा करनी चाहिये थी वैसी कर न सकी। आशा है आप क्षमा करेंगी"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुढ़िया ने उत्तर दिया—"बेटी ! हम ग़रीबों की जो सेवा तूने की, उसका फल तुझे भगवान् देंगे। पर आज तो तू जो चीज़ छूएगी, वह दिन भर खाली न होगी।"

वे लोग चले गये तो सरला को अपनी बथुए की हाँडी को साफ़ करने की याद आई। रसोई में जाकर उसने हाँडी उठाई तो देख कर आश्चर्य से भर उठी। उस हाँडी में अशरफ़ियाँ भरी हुई थीं। अब जो उसने उसे उलट कर रखा तो वह दुबारा भर गई। वह उन अशरफ़ियों को उठाकर रखती और हाँडी में दूसरी भर जाती। दिन भर में उसकी कोठरी अशरफ़ियों से भर गई। बस फिर तो उसके पति ने उन अशरफ़ियों को बेच कर बढ़िया मकान मोल ले लिया। एक कपड़े की दूकान खोल ली। घोड़ागाड़ी और टमटम खरीद ली। और वे सुखपूर्वक रहने लगे।

उस सेठ को जब यह समाचार मिला कि उसके निर्धन पड़ोसी एक रात में ही अमीर हो गये हैं, तो उसने सरला तथा उसके पति को बुला कर कारण पूछा।

सरला ने सरलतापूर्वक सब कथा सुना दी।

अब तो सेठ और सेठानी को रात दिन यही चिन्ता रहने लगी कि किसी प्रकार वे करामाती बुड्ढे-बुढ़िया मिल जायें तो वे भी हंडिया भर अशरफ़ियाँ प्राप्त करलें।

देवता लोग तो इच्छा करते ही मनुष्य के हृदय की बात जान लेते हैं। एक रात जब बहुत ज़ोर का पानी बरस रहा था, और ओले पड़ रहे थे तो वही बुड्ढे-बुढ़िया फिर उसी सेठ के द्वार पर पहुंचे। द्वार पर खटपट सुनते ही सेठ ने बिजली के प्रकाश में से झांक कर उन्हें पहिचान लिया और जल्दी-जल्दी अपनी स्त्री को उन्हें लेने भेजा। बिजली बुझा कर एक दिया हाथ में लेकर सेठानी बाहर आई और झूठी ममता दिखा कर बोली—"हाय ! हाय ! बाबा ! तुम कहाँ भटक रहे हो, आओ अन्दर आ जाओ।" फिर घर की सबसे टूटी चारपाई पर उन्हें बैठा दिया। घर में अनेकों गरम वस्त्र होते हुए भी वह उनके लिये दो फटे-पुराने वस्त्र ले आई और बोली—"बाबा, घर में इस समय यही उपस्थित हैं।" फिर उनसे बिना पूछे ही घर की सबसे घिसी-पुरानी थालियों में बथुए का साग तथा जुआर की रोटी भी ले आई। ओढ़ने को दो फटे कम्बल भी कहीं से मंगा दिये। फिर सेठ-सेठानी भी उसी कमरे में गद्दे बिछाकर धरती पर लेट रहे।

6—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबेरे अंधेरे ही जब बुड्ढे-बुढ़िया जाने लगे तो सेठानी ने चना पीस कर रोटी बनाई और उनके साथ बांध दी और बोली—"माता हम बड़े दरिद्र हैं। आपकी सेवा न कर सके, आशा है आप हमें क्षमा करेंगी।"

बुढ़िया ने कहा— "बेटी जैसी सेवा तूने की उसका फल तुझे भगवान् देगा। हां, आज तू जिस काम को हाथ में लेगी वह दिन भर समाप्त न होगा।"

उन लोगों के जाते ही सेठ-सेठानी में झगड़ा हो पड़ा। सेठ चाहता था कि बथुए की हंडिया मैं खोलू और सेठानी चाहती थी कि मैं खोलूं। अन्त में दोनों ने एक साथ हंडिया पकड़ी। इस छीना-झपटी में हंडिया टूट गई और कमरे में बथुआ ही बथुआ बिखर गया।

सेठानी झाड़ू लेकर कमरा धोने लगी। अब वह तो कमरा साफ़ करती और कमरे में तुरन्त ही सड़ा हुआ बथुआ फिर बिखर जाता। सवेरे से संध्या तक उसे कमरा साफ़ करना पड़ा।

ठीक है, जिसकी जैसी नीयत होती है, भगवान् उसे वैसा ही फल देता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेल कुमारी

वीरेन्द्र गोपाल

एक राजा के सात लड़के थे। छः का व्याह हो चुका था। सबसे छोटा राजकुमार कुँवारा था। छोटा राजकुमार जब पढ़ने जाता था तब रोज़ उसकी छोटी भाभी उसे आशीर्वाद दिया करती—"तुमको बेलकुमारी मिले।"

छोटे राजकुमार ने एक दिन पूछा—"भाभी! बेलकुमारी कहाँ मिलेगी?"

भाभी ने कहा—"यहाँ से सात नदी पार एक जंगल है, उसमें एक तालाब है। उस तालाब में ही बेलकुमारी रहती है।"

एक दिन बड़े सबेरे उठकर छोटा राजकुमार महल से चल दिया। चलते-चलते सात नदी पार करके वह एक तालाब के किनारे पहुँचा। वहाँ एक मुनि की झोंपड़ी थी। राजकुमार ने मुनि को प्रणाम किया। मुनि ने पूछा—बेटा! तुम कहाँ से आये हो और यहाँ क्यों आये हो?"

राजकुमार ने कहा—"मुनि जी! मैं बेलकुमारी के लिये आया हूँ।"

मुनि ने कहा—"उस तालाब को देखते हो न, उसके बीच में एक टापू है। उस टापू पर एक बेल का पेड़ है। उस पेड़ में एक ही बेल फला है। बेलकुमारी उसी बेल में सोई हुई है। परन्तु वहां जाकर उसे ले आना कठिन है। क्योंकि वहाँ राक्षसों का पहरा है।"

राजकुमार ने पूछा—"उनसे बच कर बेलकुमारी को ले आने की कोई तरकीब है?"

मुनि ने कहा—"हाँ, तरकीब है। यदि कोई मनुष्य उस तालाब को एक साँस में पार कर जाये। बेल के पेड़ से एक बकरा बँधा होगा, बकरे को खोलकर राक्षसों के सामने कर दे। राक्षस उसे खाने लगें तब वह झटपट पेड़ पर चढ़ जाये और बेल को तोड़कर पानी में कूद पड़े और बिना साँस तोड़े तैर कर इस पार चला आये। यह सब काम एक सांस में होना चाहिये क्योंकि सांस टूटते ही राक्षस उसे खा जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार ने हिम्मत की। वह एक सांस में जाकर बेल को मुनि के पास ले आया।

मुनि ने कहा—"बेटा! इस बेल को घर ले जाकर फोड़ना, इसके भीतर से बेलकुमारी निकलेगी। पर ख़बरदार, रास्ते में इसे न तोड़ना, नहीं तो तकलीफ़ पाओगे।"

राजकुमार मुनि को प्रणाम करके बेल लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा। कई जंगल और पहाड़ पार करते-करते एक सांझ को वह एक सरोवर के किनारे पहुँचा। राजकुमार बहुत थक गया था। वहां बैठकर सुस्ताने लगा। सरोवर बहुत सुन्दर था। चारों ओर हरे-हरे वृक्ष लहलहा रहे थे। पक्षी कलोल कर रहे थे। राजकुमार ने सोचा—लाओ, बेल को फोड़कर बेलकुमारी को निकालें तो सही। कहीं मुनि ने धोखा न दिया हो?

राजकुमार ने फल तोड़ डाला। उसमें से बेलकुमारी निकली। बेलकुमारी बहुत सुन्दर थी। राजकुमार ने कहा—"रानी! मैं थक गया हूँ।"

बेलकुमारी ने कहा—"मेरी गोद में सिर रख कर सो जाओ।"

राजकुमार सो गया। उसी घाट पर लुहार की एक लड़की पानी भरने आया करती थी। वह आई और उसने पूछा—"बहन! तुम कौन हो?"

बेलकुमारी ने कहा—"ये राजकुमार हैं। इनके साथ मेरा विवाह होगा।"

यह सुन कर लुहार की लड़की के मन में कपट उत्पन्न हुआ। वह आँखों में आँसू भर कर कहने लगी—"हाय! मैं बड़ी अभागिनी हूँ। मेरी सास मुझसे पानी भरवाती है। भला, मैं इतना बड़ा घड़ा तालाब में से भर कर ऊपर कैसे आऊँ?"

यह कह कर वह रोने लगी। बेलकुमारी को उस पर दया आई। उसने राजकुमार के सिर के नीचे अपनी रेशमी चादर का तकिया बना कर रख दिया और उठ कर लुहार की लड़की का घड़ा लेकर वह तालाब में पानी भरने के लिये झुकी। लुहार की लड़की ने चुपके से उसके पीछे जाकर उसे ऐसा धक्का दिया कि वह तालाब में गिर गई और डूब गई।

लुहार की लड़की राजकुमार के पास आई और उसका सिर अपनी गोद में लेकर बैठ गई। राजकुमार जब जागा, तब उसे एक सुन्दर बेलकुमारी के बदले एक बदसूरत लड़की को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा—'हो न हो, यह मुनि का हुक्म न मानने का दण्ड है। हाय! मैंने बेल को रास्ते में क्यों फोड़ा?'



परन्तु छोटे राजकुमार ने तालाब के किनारे जाकर, धनुष को बढ़ा कर, फूल को खींच लिया और उसकी डण्डी से उसे तोड़ लिया।

लुहार की लड़की को लेकर वह अपने घर पहुँचा। बहुत दिन बीत गये। लुहार की लड़की रानी की तरह सुख भोगने लगी। एक दिन सातों भाई शिकार को निकले। शिकार करते-करते वे उसी तालाब के किनारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ निकले, जहां लुहार की लड़की ने बेलकुमारी को धक्का दिया था। उसी जगह तालाब में कमल का एक बड़ा फूल खिला था। छोटे राजकुमार का मन उसे देखकर लुभा गया। वह कहने लगा—"अहा! कैसा सुन्दर फूल



लुहार की लड़की ने मौका देख कर फूल को खिड़की की राह बाहर फैंक दिया।

है। कैसा रंग है! कैसी मीठी सुगन्ध है! इतना बड़ा फूल तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। चाहे जो हो, मैं तो यह फूल लिये बिना यहाँ से जाऊँगा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े राजकुमारी ने कहा—"न, न, फूल तोड़ना नहीं। कहीं किसी राक्षसी ने जादू न किया हो। कमल का फूल कहीं इतना बड़ा होता है?"

परन्तु छोटे राजकुमार ने नहीं माना। तालाब के किनारे जाकर, धनुष को बढ़ा कर, उसने फूल को खींच लिया और उसकी डण्डी से उसे तोड़ लिया।

सब राजकुमार घर लौटे। बाकी राजकुमार तो तरह-तरह के जानवर और पक्षी शिकार करके ले आये थे, परन्तु छोटे राजकुमार के पास केवल एक लाल रंग का कमल था।

छोटे राजकुमार ने कमल को अपने महल में लाकर रखा। एक दिन वह सैर के लिये बाहर गया हुआ था। लुहार की लड़की ने मौका देखकर कमल को खिड़की की राह बाहर फैंक दिया। राजकुमार ने लौट कर देखा तो वहां फूल नहीं था। उसने नकली बेलकुमारी से पूछा तो उसने कहा—"फूल कुम्हला रहा था, मैंने उसे बाहर फैंक दिया।"

राजकुमार ने कहा—"हाय! हाय! बेलकुमारी! तुम्हारा दिल ऐसा कड़ा है? भला, उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?"

वह फूल जहां गिरा था, थोड़े दिन के पश्चात वहां बेल का एक पेड़ उग आया। बड़ा होने पर इसमें एक फल लगा। माली ने उसे तोड़ लिया। घर ले जाकर उसने उसे तोड़ा तो उसमें से बड़ी रूपवती एक कन्या निकली। माली के कोई लड़का-लड़की नहीं थे। कन्या को पाकर वह बहुत खुश हुआ। वह उसे बहुत प्यार करने लगा।

नकली रानी को खबर लगी कि माली के घर एक देव-कन्या जन्मी है। वह बहुत घबराई। वह जान-बूझ कर बीमार पड़ गई। नकली रानी का वैद्य और हकीमों ने बड़ा इलाज किया। परन्तु कोई रोग हो तो दवा फ़ायदा करे। नकली रानी ने एक दिन राजकुमार से कहा—"मैंने रात में सपना देखा है कि माली के घर एक कन्या जन्मी है। वह डाकिनी है। उसे मार कर उसके लहू से मैं नहाऊँ तो मेरा यह रोग जाये।"

राजकुमार ने तत्काल उस कन्या का लहू लाने का हुक्म दिया। नकली रानी ने उसके लहू से स्नान किया, तब उसका रोग छूटा। माली बेचारा बहुत रोया।

माली ने बेलकुमारी के शरीर को ले जाकर अपने बाग़ में गाड़ दिया। कुछ दिनों के पश्चात् वहाँ फिर एक बेल का पेड़ उगा। बढ़ते-बढ़ते वह पेड़ बड़ा हो गया और उसमें एक फल लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकली रानी से राजकुमार की बनती नहीं थी। वह बड़ी कर्कशा थी। रोज़ बीमारी का कोई न कोई बहाना करके राजकुमार को परेशान करती थी।

एक दिन राजकुमार की एक साधु से भेंट हुई। साधु ने राजकुमार की उदासी का कारण पूछा। राजकुमार ने सब सच-सच कह दिया। साधु ने राजकुमार को एक अंगूठी दी और कहा—"इस अंगूठी को पहन लेने से तुम पक्षियों की बोली समझ सकोगे। महल में मन न लगे तो बाग में आकर चिड़ियों से कहानियाँ सुना करो।"

अंगूठी पाकर राजकुमार बड़ा खुश हुआ। वह उसी दिन अंगूठी पहन कर बाग में गया। दो कबूतर आपस में बात कर रहे थे—"इस अभागे राजकुमार को देखो, लुहार की लड़की ने इसे कैसा मूर्ख बना रखा है।"

राजकुमार अंगूठी के ज़ोर से कबूतरों की बोली समझता था। उसने पूछा—"मुझसे सब हाल खुलासा कहो।"

कबूतर ने बेलकुमारी और लुहार की लड़की का सारा किस्सा कह सुनाया। सब हाल सुन कर राजकुमार बहुत पछताया। उसने पूछा—"बेलकुमारी अब कहां मिलेगी?"

कबूतर ने बेल का पेड़ दिखा दिया और कहा—"इस पेड़ में एक ही फल लगा है। बेलकुमारी उसी में है।"

राजकुमार ने बेल को तोड़ लिया। उसमें से बेलकुमारी निकल आई। बेलकुमारी को पाकर राजकुमार बहुत ही खुश हुआ।

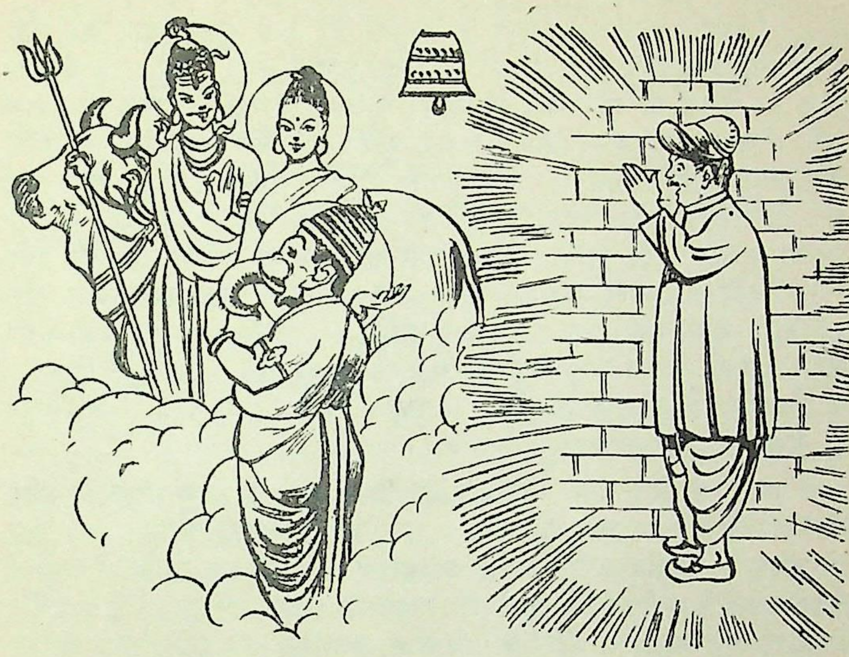
वह बेलकुमारी को लेकर महल में आया। बेलकुमारी को देखते ही लुहार की लड़की डर के मारे पीली पड़ गई। राजकुमार उसे मारने दौड़ा। बेलकुमारी ने दया करके उसे बचा लिया।

लुहार की लड़की फिर अपने घर चली गई और राजकुमार और बेलकुमारी सुख से रहने लगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गणेश जी बोले—"जी हाँ, उसे पचास हज़ार रुपये तो दिलवा दिए हैं, बाकी के लिये बनिये को दीवाल से चिपका दिया है।"

बुन्देलखण्डी कहानी

देवता का दान

जहूर बख़्श

गाँव के बाहर बरगद का एक पेड़ था, जिसके पास ही गणेश जी का एक छोटा-सा मन्दिर था। गाँव में और मन्दिर थे ही नहीं, इसलिए सब लोग इसी मंदिर में पूजा करने आया करते थे। गाँव में एक भिखारी भी रहता था। भीख मांगना ही उसका काम था। गाँव छोटा सा था, भिखारी को काफ़ी भीख नहीं मिलती थी, इसलिये यह और कोई उपाय न देख मन्दिर के दरवाज़े पर बैठने लगा। उसने सोचा, लोग यहाँ धर्म करने आते हैं, और नहीं तो पेट भरने लायक भीख मिल ही जाया करेगी।

7–6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिखारी दिन भर मन्दिर के दरवाज़े पर बैठा रहता, और जब वहाँ किसी को आते देखता तो 'शिव-शिव' रटने लगता था। इस तरह बेचारा दिन भर गणेश जी और शिव जी का नाम लिया करता था, मगर शाम तक उसे भीख मिलती थी—सिर्फ दो-चार मुट्ठी अन्न और कुछ फल-फूल और कभी-कभी चार-छः पैसे। भला इतनी थोड़ी आमदनी से किसी की गुज़र कैसे हो सकती है? फिर भिखारी को अपनी ही नहीं, अपनी बेटी की भी चिन्ता करनी पड़ती थी। उसकी बेटी का नाम था कमला और वह बड़ी चतुर, बड़ी समझदार थी। मगर चतुराई और समझदारी से तो पेट की आग बुझती नहीं, उसे तो भोजन चाहिए। इसलिए कमला कभी-कभी अपने बाप को भोजन पानी के लिये तंग करने लगती थी। उस वक्त भिखारी के दिल पर बड़ी चोट लगती थी। उसकी आँखें भर आती थीं। वह चिन्ता के समुद्र में डूबने-उतराने लगता था।

गर्मी के दिन थे। दोपहरी का समय था। ऊपर आसमान और नीचे धरती धक-धक चल रही थी। चारों तरफ सन्नाटा छा रहा था। ऐसे ही समय में महादेव-पार्वती लोगों का सुख-दुःख देखने इस संसार में आये। चलते-चलते वे उसी गाँव में पहुँचे और गणेश जी के मंदिर के सामने से निकले। भिखारी उन्हें आते देख जोरों से 'जय-शिव, जय-शिव' की रटना करने लगा।

भिखारी की यह हालत देख पार्वती को बड़ी दया आई। उन्होंने महादेव जी से कहा—"उफ! इस भिखारी की तरफ तो देखो! बेचारा कितना दुःखी है। देखो तो, कितने प्रेम से तुम्हारा नाम जप रहा है। पर एक तुम हो, कितने कठोर! तुमने आज तक इस पर दया न की। मैंने सुना था कि लोग अब बड़े पापी हो गए हैं। वे अब देवताओं की पूजा नहीं करते। मगर नहीं, आज मालूम हुआ कि इसमें उनका कोई अपराध नहीं है। सब अपराध देवताओं का ही है। इसी आदमी को लो, बेचारे को तुम्हारा नाम लेते बरसों बीत गए, इतने पर भी अभागा पेट भर भोजन तक नहीं पाता। जब देवता ही ऐसे कठोर हो जाएंगे, तब कोई काहे को उनकी पूजा करेगा!"

महादेव को पार्वती की बात लग गई। वे पार्वती से बोले—"असल बात क्या है, यह तुम नहीं जानती। जान भी नहीं सकती, क्योंकि तुम्हारा हृदय ही इतना कोमल है। मगर नहीं, तुम रंज न करो। मैं आज ही कुछ बन्दोबस्त कराए देता हूँ, जिससे इस भिखारी का दुःख दूर हो जाएगा।"

इतना कह कर महादेव जी पार्वती के साथ मन्दिर में पहुँचे। माता-पिता को आते देख गणेश जी उठ कर खड़े हो गए। उन्होंने बड़े प्रेम से माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को प्रणाम किया। महादेव जी ने गणेश जी को आशीर्वाद दिया और कहा—"देखो बेटा, यह भिखारी बरसों से तुम्हारे द्वार पर बैठा, मेरा नाम जपा करता है। मगर तुमने अब तक इस पर दया नहीं की। अब ऐसा कुछ उपाय करो जिससे इस बेचारे का दुःख दूर हो जाए।"

गणेश जी ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिया—"अच्छी बात है पिता जी, सात दिन के भीतर उसका दुःख दूर हो जाएगा। उसे कहीं न कहीं से एक लाख रुपये मिल जाएंगे।"

गणेश जी का उत्तर सुनकर महादेव-पार्वती आगे चले गए।

इसी समय एक बनिया मन्दिर में पूजा करने आया था। वह आड़ में छिपा-छिपा महादेव जी और गणेश जी की बातें सुन रहा था। उसने सोचा, 'यह तो बहुत अच्छा मौका है। यदि थोड़ी चतुराई से काम लूं, तो सहज ही दो लाख का मालिक हो सकता हूँ।' बस, वह बड़ी खुशी से भिखारी के सामने पहुँचा, और उसे प्रणाम कर एक तरफ बैठ गया। भिखारी को आज तक किसी ने न प्रणाम किया था, न कोई उसके पास आकर बैठा ही था। बनिये के इस काम से भिखारी ने समझा कि यह बेशक कोई भलामानुस है। वह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ और बनिये से बोला—"बाबा, आप बहुत दयालु जान पड़ते हैं। कहिए मेरे पास आने की कृपा क्योंकर हुई? आप नहीं जानते, मैं एक ग़रीब भिखारी हूँ।"

बनिये को तो अपना मतलब गांठना था, मीठेपन से बोला—"आप भिखारी हैं! कौन कहता है कि आप भिखारी हैं? मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आप पहुँचे हुए महात्मा हैं, और आपके दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं। मैं भी आपके दर्शन करने चला आया हूँ। मुझे आपसे कुछ पूछना है, यदि आज्ञा हो तो पूछूँ।"

भिखारी—"खुशी से पूछिए।"

बनिया— "भला दिन भर में आपको कितनी भीख मिल जाती है?"

भिखारी—"भाई, मिलने की क्या पूछते हो, पेट के भी लाले पड़े रहते हैं। रोज़ाना दो-चार मुट्ठी अन्न मिल जाता है, कभी दो-चार पैसे भी मिल जाते हैं। किसी तरह दिन काट लेता हूँ।"

बनिया—"राम राम! आप जैसे महात्मा और यह कष्ट! इस गाँव के आदमी भी क्या आदमी हैं? आपकी थोड़ी भी सहायता नहीं कर सकते!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप कैसे यह कष्ट सह लेते हैं ? मुझे तो आप पर बड़ी दया आती है। मेरे जी में आता है कि आप की कुछ सेवा करूँ, पर कहने में डर मालूम होता है।"

भिखारी—"आप, मेरी क्या सहायता कर सकते हैं ?"

"हें-हें-हें !"—बनिया दांत निकाल कर बोला—"मेरी इतनी हैसियत कहाँ, जो आपकी कुछ सेवा कर सकूं। मगर एक बात हैं। आज से सात दिन तक आप को जो कुछ भी मिले, वह मुझे दे दीजिये। बदले में मैं आप को सौ रुपये दे दूंगा।"

सौ रुपये का नाम सुनते ही भिखारी मारे खुशी के उछल पड़ा। उसने सोचा; 'अगर सौ रुपये मिल जाएं, तो क्या कहना ! यहाँ तो सात दिन में सात आने का सामान भी न मिलेगा ! तब तो सौ रुपये छोड़ देना सरासर बेवकूफ़ी है—पूरा गधापन है।'

मगर इसी समय उसे लड़की का ख्याल आ गया। मैं सौ रुपये लेकर घर पहुँचा और कमला बिगड़ने लगी तो ? उसकी सलाह भी ले लेनी चाहिए। बस, यह विचार आते ही उसने बनिये को जवाब दिया—"आपने मुझ पर बड़ी कृपा की, मगर मैं अभी कुछ नहीं कह सकता, सोच-विचार कर कल कहूँगा !

जब बनिया चला गया, तब भिखारी ने कमला को बुलाया और उसे सब हाल सुनाया। चतुर कमला फ़ौरन समझ गई कि इसमें ज़रूर बनिये की कोई शैतानी है। उसने पिता से कहा—"बनिया बिना अपने फ़ायदे के क्यों सौ रुपये देने चला ! खैर, मैं कल उससे सब बातें तय कर लूंगी, मगर तुम बीच में न बोलना।"

उधर बनिये का बुरा हाल था। रात भर उसके पेट में चूहे उछलते रहे। बड़ी मुश्किल से सवेरा हुआ। बनिये की जान में जान आई। वह हाथ-मुँह धोते ही भिखारी के पास जा पहुँचा और छूटते ही बोला—"क्या विचार किया आपने !"

कमला भी बनिये से निबटने को तैयार बैठी थी। बनिये की बात सुनते ही उसने जवाब दिया—"सेठ जी, हम लोगों ने विचार कर लिया। भला सौ रुपये में क्या होता है ! इतना सस्ता सौदा होना मुश्किल है। माफ़ कीजिए।" कमला का उत्तर सुनते ही बनिये पर मानों बिजली गिर पड़ी। पर, लाख रुपये का लालच छोड़ना भी तो कठिन था। वह दो सौ रुपये देने को राज़ी हो गया। अब तो कमला का सन्देह और भी पक्का हो गया। वह समझ गई कि बनिया ज़रूर किसी भारी लाभ के लिये ही इतने रुपये देना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता है। उसने जवाब दिया—"सेठ जी, इतना सस्ता सौदा और कहीं होता होगा। सौ-दो-सौ या हज़ार-दो-हज़ार में होता ही क्या है! जो चीज़ आप कौड़ियों के मोल खरीदना चाहते हैं, वह लाख रुपये में भी सस्ती है।"

यह सुन कर बनिया बहुत घबराया, परन्तु उसने अपनी कोशिश जारी रखी। मारे लोभ के वह अन्धा हो रहा था—उसको लोभ का भूत सवार हो गया था। उसने सौ-दो-सौ से बढ़ कर अन्त में पचास हज़ार लगा दिये। अब कमला ने सोचा—इतने रुपये थोड़े नहीं होते। बैठे-ठाले इस फ़ायदे को छोड़ना ठीक नहीं। उसने बनिये से कहा—"खैर, आप नहीं मानते, तो मैं ही आपकी बात माने लेती हूँ। मगर शर्त यह है कि रुपये अभी मिलने चाहिएँ।" यह शर्त मंज़ूर करने में बनिये को क्या उज़्र थी! वह खुशी-खुशी घर लौटा। उसने सोचा—'पचास हज़ार रुपये देकर एक लाख लेना कुछ बुरा नहीं है। दो लाख न सही, ड़ेढ़ लाख का मालिक तो बन ही जाऊंगा। अहा! मेरी तकदीर भी कितनी चोखी है। सात ही दिन में पचास हज़ार का लाभ हो गया।' उसने घर आते ही भिखारी के पास पचास हज़ार रुपये भेज दिये।

अब बनिया हर रोज़ भिखारी के पास आता, और उसकी दिन भर की भीख घर ले आता। इस तरह छः दिन बीत गए। अब तो बनिये को बड़ी फ़िक्र हुई। सातवें दिन वह फिर गणेश जी के मन्दिर में पहुँचा। उसने देखा कि आज फिर महादेव-पार्वती मन्दिर में पधारे हैं। बस वह दीवाल से कान सटा, उनकी बातें सुनने लगा। मगर यह क्या—उसका कान दीवाल से चिपक गया। उसने कान छुड़ाने की बहुत कोशिश की, पर कान टस से मस न हुआ। तब वह दाहिने हाथ की सहायता से कान छुड़ाने लगा। इतने में हाथ भी दीवाल से चिपक गया।

इधर महादेव जी ने गणेश जी से पूछा—"बेटा, इस भिखारी के लिये कुछ इन्तज़ाम हुआ?"

गणेश जी बोले—"जी हाँ, उसे पचास हज़ार रुपये तो दिलवा दिए हैं, बाकी के लिये बनिये को दीवाल से चिपका दिया है। यह बनिया बड़ा लोभी और कंजूस है। इसने ग़रीबों से एक-एक के चार-चार वसूल कर अपना घर बनाया है। रुपये वसूल करने में इसने ग़रीबों पर दया नहीं की। उनके बच्चे भूखों मरते रहे, पर इसने चौगुने रुपये वसूल करके भी सन्तोष नहीं किया। इस तरह इसने एक लाख रुपयों से अपनी तिजोरी भर ली। ग़रीबों के माल से यह सुख नहीं उठा सकता। अब जब तक यह भिखारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को बाकी पचास हज़ार रुपये न दे देगा, तब तक दीवाल से ही चिपका रहेगा।"

गणेश जी की बातें सुन कर बनिये ने अपना माथा पीट लिया। उसकी आंखों से आंसू बरसने लगे! जब उसने घर से पचास हज़ार रुपये मंगवा कर भिखारी को दे दिए, तब कहीं दीवाल से उसका पीछा छूटा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागा और शेर

सावित्री देवी वर्मा

शिलौंग के दक्षिण में डिगी नाम का एक पर्वत है। एक समय वहाँ पर इतना घना जंगल हुआ करता था कि दिन को भी अमावस्या का सा अंधेरा छाया रहता था। नीचे पेड़ के मोटे-मोटे तने, ऊपर छाते के सदृश्य फैली हुई पेड़ों की घनी टहनियाँ, मानों जंगल को किसी हरी छत ने ढक रखा हो। कोसों तक जंगल ही जंगल था। न कोई राह, न कोई बाट। लता-गुल्मों, पेड़-पौधों और झाड़ी-झंखाड़ों के मारे वहाँ तिल भर भी जगह पाँव रखने को नहीं बचने पाई थी।

आरम्भ में लोहतास नागाओं का एक बहादुर सरदार वहाँ आकर बस गया। धीरे-धीरे उसके वंश का विस्तार होने लगा। अब उन्हें और जगह चाहिये थी। एक दिन गिरोह के सब लोग इस बात पर विचार करने के लिये इकट्ठे हुए कि अब और नये झोंपड़े कहाँ बनाये जायें? एक साहसी नवयुवक बोला, "भाइयो! अब तो इस जंगल को ही काटा जाये, तभी हमारा काम बन सकता है।"

दूसरा बोला, "पर इस घने जंगल को काटना कोई सहज काम नहीं है। यहाँ तो हाथ को हाथ नहीं सूझता। भला, हम कुल्हाड़ी कैसे चलायेंगे?"

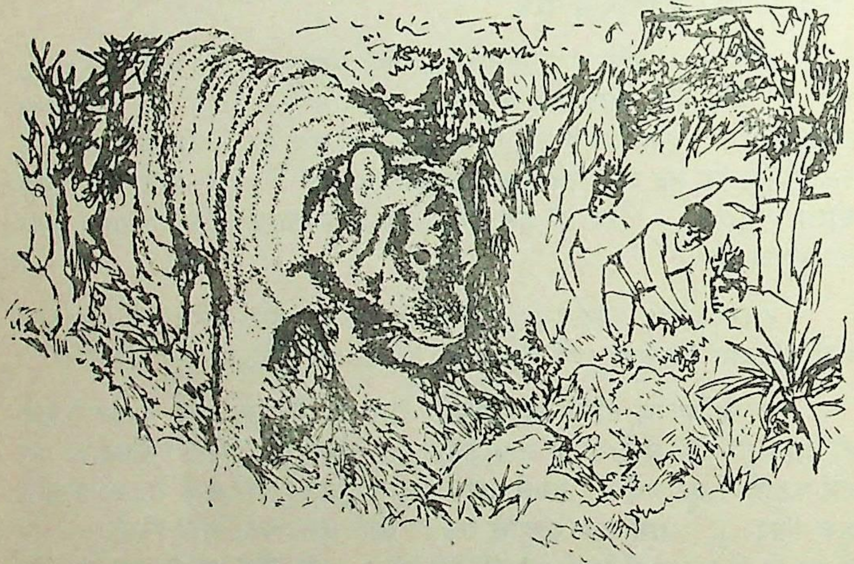
पर अधिकांश नौजवानों की यही राय रही कि एक छोर से कटाई शुरू की जाये तो धीरे-धीरे जंगल साफ़ किया जा सकता है। खैर, एकमत हो कर सब कटाई में जुट गये। सबसे पहले उन्होंने एक बड़े पलास के पेड़ को काटना शुरू किया। शाम तक उन्होंने उसका तना काट कर गिरा दिया। पेड़ के गिरते ही जंगल में काफ़ी रोशनी छा गई। उस रोज़ आधी रात तक खूब गाना-बजाना होता रहा। पर दूसरे दिन सबने आश्चर्य से देखा कि जड़ से नया तना निकल आया है तथा पेड़ और अधिक सघन होकर रोशनी को रोके खड़ा है। दूसरे दिन उन्होंने फिर पेड़ को काट गिराया, पर सुबह होते ही वह फिर अपनी जगह नये सिरे से उग कर मानो उनको ललकारता हुआ खड़ा दिखाई पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब नौजवान नागाओं ने सलाह की कि चलो अपने दल के बूढ़े बाबा से इसका रहस्य पूछें। वह ज़रूर इस करामाती पेड़ के विषय में कुछ जानते होंगे। बूढ़े बाबा ने उनकी बात सुनकर सिर हिला कर कहा, "देखो एक बात मैं तुम्हें बताता हूँ। हमारे आदि पुरखा के साथ उनके एक मित्र ने घात किया था। उन्होंने उस मित्र को शाप दिया कि जा तू शेर बन जा। मुझे तो लगता है कि उसी शेर की बिरादरी का कोई दुष्ट आकर हमारे काम में बाधा डालता है। शेर नहीं चाहते कि जंगल कटे और उनके राज्य के हिस्से पर मनुष्य का कब्ज़ा हो। सो तुम लोग आज रात को छुप कर देखो कि उस काटे हुए वृक्ष के पास कौन आता है?"

रात को नौजवान नागाओं ने देखा कि उस कटे हुए पेड़ के तने को एक भयानक शेर चाट रहा है और जिस हिस्से को वह चाटता है वह हरा भरा होकर



रात को नौजवान नागाओं ने देखा कि उस कटे हुए पेड़ के तने को एक भयानक शेर चाट रहा है और जिस हिस्से को वह चाटता है वह हरा-भरा होकर ऊंचा बढ़ता जा रहा है।

ऊंचा बढ़ता जा रहा है। दूसरे दिन उन्होंने सारा हाल बूढ़े सरदार से कहा। सरदार ने सलाह दी कि पेड़ की जड़ें खोद कर उसमें आग लगा दी जाये ताकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसका नामोनिशान ही न बचे। ऐसा करने पर सचमुच दूसरे दिन पेड़ नहीं उगा। पर शेर ने क्रोधित होकर सरदार के एक नौजवान बेटे को मार डाला। जब सरदार को यह बात पता लगी तो उसने सब नागाओं को इकट्ठा करके कहा, "देखो, यह शेर हमारी जाति का दुश्मन है। इसको जल्द से जल्द खत्म कर डालना चाहिये। तुम लोग पेड़ के पास की धरती साफ़ करके वहाँ दो पेड़ों के तने जोड़कर खड़ा कर दो। मैं उसके पीछे भाला लेकर खड़ा रहूँगा। तुम सब ढोलक बजा कर शेर को उस ओर खदेड़ कर ले आना।"

दूसरे दिन सब ने मिल कर शेर को खदेड़ना शुरू किया। शेर बाँसों के झुरमुटों में पड़ा सो रहा था। पीछे से हो-हल्ला सुन कर वह गुर्राता हुआ आगे को बढ़ चला और उसी पेड़ के पास आकर खड़ा हो गया। बूढ़े सरदार ने जब शेर को देखा, तो अपने जवान बेटे की मौत का बदला लेने के इरादे ने उसकी भुजाओं में नौजवानों-का-सा बल ला दिया और उसने निशाना साध कर शेर पर भाला फैंका, भाला शेर की पीठ में आकर लगा और वह भयानक रूप से गुर्राता हुआ सरदार पर झपटा। सरदार ने अपना सिर ढाल से ढक कर उछलते हुए शेर का पेट छुरे से चीर कर रख दिया और अपनी रस्म के अनुसार उसने अपने बेटे के हत्यारे के पंजे काट लिये। इसके बाद उसने सब नौजवानों को इकट्ठा कर के कहा, "इस शेर का सिर काट कर गाँव के बीच जो पेड़ है उस पर टाँग दो और उसके नीचे की धरती को सब अपने भालों की मूँठ से रौंद कर निशान बना दो, ताकि इसकी शेरनी अब इस गांव में घुसने की हिम्मत न कर सके।"

ऐसा ही किया गया। रात को जब शेरनी अपने शेर को खोजती हुई उस पेड़ तक आई तो पेड़ के नीचे अनेक भालों की मूँठों के निशान देखकर वह सोचने लगी—"दिखता है इस गांव में बहुत से बहादुर बल्लमधारी हैं। अब यहाँ ठहरना उचित नहीं। पर मैं इनसे बदला तो ज़रूर लूँगी, नहीं तो हमारे वंश की रक्षा भला कैसे होगी।"

शेरनी मौके की खोज में रही कि कोई ऐसा नागा मिल जाये जिसकी मदद से मैं इनसे बदला ले सकूं। संयोग से एक दिन जंगल में एक नागा से उसकी भेंट हो गई। उस समय शेरनी अपने बच्चों को शिकार के दाव सिखा रही थी। नागा अकेला था और ये तीन। मनुष्य जाति को देखते ही शेरनी का खून खौलने लगा पर उसे एक बात सूझी। उसने नागा से कहा, "देख, मैं चाहूँ तो तुझे अभी फाड़ कर रख दूँ। पर अगर तू अपने सरदार से बदला लेने में मेरी मदद करे तो न केवल मैं तेरी जान बख्श दूँगी, बल्कि कई अच्छी

8—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अनोखी जड़ी-बूटियाँ भी तुझे लाकर दिया करूँगी। उनके प्रयोग से तू जल्द ही नागाओं का सरदार बन जायेगा।"

वह नागा लोभ में आ गया और उसने शेरनी से दोस्ती कर ली। अब वह गांव में लोगों को जड़ी-बूटी बांटने लगा और हकीम के रूप में काफ़ी प्रसिद्ध भी हो गया। शेरनी रात को अक्सर उसके घर आती और उसे जड़ी-बूटियाँ दे जाया करती। साथ ही साथ उसके गाँव का सब भेद पता लगाकर वह रात को ऐसे मार्ग में छुपकर बैठ जाती जहाँ कोई अकेला नागा पहरे पर होता और चुपके से जाकर उस पर हमला कर देती। इस हमले से नागाओं का सरदार बड़ा परेशान था। एक दिन उसने अपने लोगों को इकट्ठा करके कहा, "हो न हो यह शेरनी की ही करतूत है। इसलिये जंगल में हाँका डालो।"



शेर भयानक रूप से सरदार पर झपटा। सरदार ने उछलते हुए शेर का पेट छुरे से चीर कर रख दिया।

यह बात शेरनी को उस के मित्र नागा ने जाकर बता दी। शेरनी सावधान हो गई और उस दिन अपने बच्चों के साथ वह एक गहरी कन्दरा में जा छुपी। उसी रात को उसने फिर एक नौजवान नागा को मार डाला। फिर सबने मिल कर हाँका डाला, पर शेरनी का कहीं पता नहीं चला। कुछ सोचकर सरदार ने कहा, "हो न हो, हम लोगों में से ज़रूर कोई शेरनी को सारा भेद बता देता है। ठहरो, मैं उसका पता लगाता हूँ।"

यह कह कर उसने कुछ मंत्र पढ़ कर राख उड़ाई और उस हकीम नागा की ओर उँगली उठाकर कहा, "यही हमारा भेदिया है। अगर यह अपने को सच्चा साबित करना चाहता है तो इसे आठ दिन के अन्दर ही एक शेर मारकर उसकी खोपड़ी के ऊपर हाथ रख कर शपथ खानी होगी। यदि यह बेकसूर है तब तो इस पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी और यदि इसने अपने दल से दगा किया होगा तो आठ दिन में ही इसका नाश हो जायगा।"

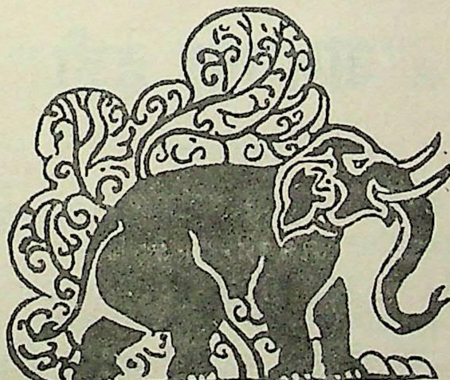
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस रात को जब शेरनी उस हकीम नागा के पास आई तो उसने शेरनी से सरदार की सारी बात कही। शेरनी बोली, "तू फ़िक्र मत कर। मैं तुझे शेर की एक पुरानी खोपड़ी ला दूंगी।" पर संयोग से उस दिन हकीम नागा का छोटा लड़का जाग रहा था और उसने अपने बाप और शेरनी की सारी बात सुन ली।

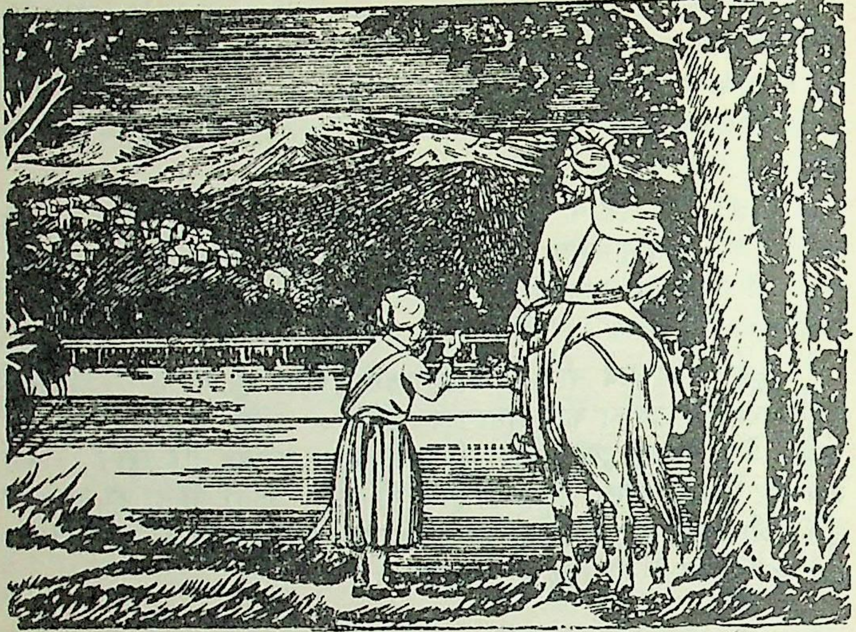
दूसरे दिन खेल के समय उसने यह बात अपने साथियों से कह दी। फैलते-फैलते यह बात सरदार के कानों में पहुँची। अब तो सरदार का शक और पक्का हो गया और उसके कहने पर, हकीम नागा की मुश्कें कस कर, जिस पेड़ से शेर का सिर लटक रहा था, उसी से उसे बांध दिया गया।

दूसरे दिन सब नागाओं ने मिलकर अचानक ही शेरनी को जा घेरा और बरछों से उसका काम तमाम कर दिया। लौट कर जब वे आये तो उन्होंने देखा कि वह हकीम नागा भी कराह-कराह कर दम तोड़ रहा है। यह देख कर सरदार बोला, "यह तो होना ही था। हमारे पूर्वजों का यह शाप है कि जो किसी शेर से दोस्ती करेगा, वह उस शेर के मरते ही मर जायेगा। इसे अपनी करनी की ठीक ही सजा मिली।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"मैं नहीं जानता था कि मेरे राज्य में ऐसे सुन्दर प्रदेश भी मौजूद हैं।" महाराज ने प्रसन्न होकर कहा।

हिमाचल प्रदेश की लोककथा के आधार पर

अनोखी हड्डी

भीष्म साहनी

'स्वर्ण देश' के महाराज उदयगिरि पचास वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते महाराजाधिराज हो गये। देश-देशान्तरों में उनकी विजय-पताका लहरा चुकी थी, उनके पराक्रम का कोई पारावार न था। अनेक बन्दी राजा उनके भीमकाय दुर्ग में अँधेरी दीवारों को ताकते हुए दम तोड़ रहे थे, और उन्हीं के देशों की सुन्दर रमणियाँ महाराज के अन्तःपुर की शोभा बढ़ा रही थीं। जब भी महाराज की सेना किसी राज्य को रौंदकर लौटती, तो महाराज की विपुल स्वर्णराशि और भी बढ़ उठती और उनके मुकुट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये हीरे मोती चमकने लगते। पर महाराज की आँखें अब भी क्षितिज पर अटकी हुई थीं।

वर्षा ऋतु के अंतिम दिन थे। महाराज अपने मन्त्रियों के साथ अपने राज्य के उत्तरी पर्वतों पर आखेट खेल रहे थे। दोपहरी ढल चुकी थी। महाराज एक नव-वयस्क हिरण का पीछा करते हुए अपना रास्ता भूल गये। आखेट की उत्तेजना में वे मीलों की दूरी तक अपना घोड़ा दौड़ाते चले गये। पर हिरण का कुछ पता न चला। जंगल की सीमा आन पहुँची और महाराज थक कर एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये।

पर दूसरे ही क्षण महाराज ने सामने आँख उठाकर देखा तो पुलकित हो उठे। ढलते सूर्य के लाल प्रकाश में सामने एक विशाल पर्वत अपना गर्व-पूर्ण माथा ऊँचा किये खड़ा था, और उसके पांवों में एक बड़ी-सी नीली झील बिछी हुई थी। झील इतनी स्वच्छ थी, मानों प्रकृति के अथाह सौन्दर्य के लिए एक दर्पण हो। पहाड़ की तराइयाँ देवदारु के वृक्षों से लदी हुई थीं, और दाईं ओर ढलान पर एक छोटा सा नगर बसा हुआ था, जिसकी छतें सांयकाल के धुंधले प्रकाश में दूर तक फैलती हुई नज़र आ रही थीं।

महाराज इस अपूर्व दृश्य को एकटक देख रहे थे। इतने में उनके साथी उन्हें ढूँढ़ते हुए आ पहुँचे।

"मैं नहीं जानता था कि मेरे राज्य में ऐसे सुन्दर प्रदेश भी मौजूद हैं।" महाराज ने प्रसन्न होकर कहा। पास खड़े हुए महामन्त्री ने हाथ बाँध कर उत्तर दिया—

"महाराज, यह प्रदेश आपकी राज्य-सीमा से बाहर है। आपके राज्य की सीमा यहाँ पर समाप्त हो जाती है जहाँ पर आप खड़े हैं।"

"तो क्या यह प्रदेश मेरे राज्य का अंग नहीं है ?"

"नहीं महाराज, यह एक छोटा-सा स्वाधीन देश है, जिसके लोग मछलियाँ पकड़ कर अपना निर्वाह करते हैं।"

महाराज के मन में एक गहरी टीस उठी और उनकी आँखें ईर्ष्या से विचलित हो उठीं। "यह मेरे देश का अंग नहीं है !" कहते हुए और अपने हाथों की उंगलियाँ एक मुट्ठी में समेटते हुए वे दृढ़ निश्चय से बोले: "आज ही लौट कर सेना को तैयार करो, महामन्त्री, मैं स्वयं इस प्रदेश पर चढ़ाई करूँगा। मेरे राज्य की सीमा अब वह पर्वत-शिखिर होगा।" कहते हुए महाराज वहाँ से लौट पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस घटना को अभी दस दिन भी न बीतने पाये थे कि वह शान्त बनस्थली सैनिकों से सिंहनाद से गूँजने लगी। जंगल के हिंसक पशु भी महाराज के पराक्रम से त्रस्त होकर भाग गये। झील की शान्त जलराशि, जिस पर पहले गाते हुए मछुए मछलियाँ पकड़ते थे, अब उन्हीं के खून से लाल होने लगी। महाराज के वीर सैनिकों की बाण-वर्षा पेड़ों और पत्थरों को भी क्षत-विक्षत करने लगी।

तीन दिन बीत गये। महाराज की सेना झील पार करके नगर की दीवारों तक जा पहुँची। पर तो भी मछुओं ने हथियार नहीं डाले। रात के वक्त, जब महाराज की सेना में विजय का कोलाहल होता, वहाँ नगर में मरघट की सी स्तब्धता छा जाती। कहीं पर कोई टिमटिमाता दीपक भी नज़र न आता। मछुए, बच्चे, बूढ़े दिन भर लड़ते, और रात को अपने मृत सम्बन्धियों की लाशों को ठिकाने लगाते, अपने ज़ख्मों को सहलाते, फिर इस कराल अंधकार में कहीं भी आशा की कोई रेखा न देखते हुए, धरती पर हाथ रख कर अपने प्राणों की बलि देने की शपथ ले लेते।

प्रातःकाल का समय था। महाराज अपने शिविर में बैठे नये आक्रमण का आयोजन कर रहे थे, इसी समय द्वारपाल ने आकर प्रणाम किया।

"महाराज, एक आदमी द्वार पर खड़ा है, आपसे मिलना चाहता है।"

"कौन है ?"

"कोई बूढ़ा आदमी है, महाराज! कहता है मरने से पहले महाराज के दर्शनों की लालसा से यहाँ आया हूँ ?।"

"कोई राजदूत होगा।" एक मन्त्री ने कहा।

"या छद्मवेष में कोई सैनिक होगा।" दूसरे मन्त्री ने कहा।

"उसके पास कोई अस्त्र नहीं, महाराज! वह बहुत बूढ़ा है, और लाठी के सहारे बड़ी कठिनाई से खड़ा हो पाता है।"

महाराज ने प्रवेश की स्वीकृति दे दी।

थोड़ी देर बाद एक वृद्ध पुरुष, लम्बा, मैला-सा चोगा पहने, अवस्था के बोझ से दबा हुआ, अपनी लाठी पर झुक कर चलता हुआ, महाराज के सामने आ खड़ा हुआ।

"क्या है, वृद्ध ? तुम कौन हो ? मेरे पास समय बहुत थोड़ा है।" बूढ़ा नमस्कार करते हुए बोला, "महाराज समय तो मेरे पास भी बहुत थोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। महाराज के यश और कीर्ति से चारों दिशाएं गूंज रहीं हैं, मैं आपके दर्शनार्थ यहाँ चला आया हूँ।"

महाराज थोडी देर तक उसके चेहरे की ओर देखते रहे। फिर धीरे से बोले :

"शत्रु-देश से आये हो ?"

"नहीं महाराज, मैं आप ही के राज्य का सेवक हूँ, यहाँ से थोड़ी दूरी पर मेरा झोपड़ा है।"

"तुम क्या चाहते हो वृद्ध ?"

"दान-दक्षिणा का प्रार्थी हूँ, महाराज मैं बहुत बूढ़ा हूँ।" कहते हुए वृद्ध ने अपने लम्बे वस्त्र की जेब में हाथ डाला और एक छोटी-सी सफ़ेद हड्डी का टुकड़ा निकाल कर बोला, " मुझे इस हड्डी के वजन के बराबर सोना दे दिया जाए महाराज, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

महाराज ने हड्डी को देखा—नाखून से बड़ी वह हड्डी न थी—और उसे देखकर अकस्मात् हंसने लगे।

"वृद्धावस्था में लोग पागल हो जाते हैं। इस हड्डी के तुल्य तो एक रत्ती-भर सोना भी न आएगा, वृद्ध ! और कुछ माँगो।"

"मेरे लिये आपके हाथ का दिया हुआ कण-भर सोना भी निधि के समान होगा, महाराज।"

महाराज ने हँसते हुए तराज़ू मंगवाने का आदेश दिया, और पास पड़े हुए चांदी के थाल में से दो स्वर्ण-मुद्राएं उठा कर बूढ़े की ओर फैंक दीं :

"इनके साथ हड्डी को तोल लो वृद्ध।"

तराज़ू आई। एक पलड़े में हड्डी का टुकड़ा रखा गया, और दूसरे में मुद्राएं। पर जब मन्त्री ने तोला तो हड्डी का टुकड़ा भारी निकला। महाराज लज्जित हुए, और फ़ौरन ही दो मुद्राएं और निकाल कर तुला में डाल दीं। याचक की प्रार्थना भले ही छोटी हो, पर दानी के दान में उदारता होनी चाहिए।

पर हड्डी का पलड़ा फिर भी भारी निकला।—

महाराज हैरान हुए, और तुला में से हड्डी को निकाल कर देखने लगे। फिर उत्तेजित हाथों से चांदी के थाल में से एक साथ मुट्ठी भर मुद्राएं उठाकर तुला में डाल दीं और तुला को अपने हाथ में लेकर स्वयं तोलने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

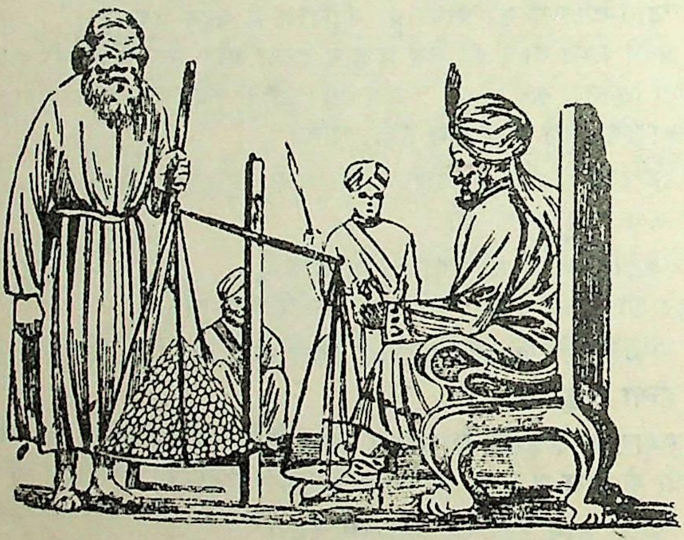
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पहले की तरह हड्डी का पलड़ा अब भी भारी निकला !

सब दरबारी चकित होकर तुला के पास आ गए। महाराज विस्मय से हड्डी को देख रहे थे। मौका देखकर वृद्ध ने हाथ बाँध कर कहा :

"महाराज, मैं अपनी हड्डी को वापिस लेता हूँ। शायद आपके पास इसके बराबर सोना दान के लिये नहीं है।"

महाराज इस अपमान को सहन न कर सके। एक बड़ी तुला मँगवाई गई, और उसके एक पलड़े में यह तुच्छ-सी हड्डी और दूसरे में चमकती मुद्राओं से भरा सारा-का-सारा थाल उंड़ेल दिया गया।



एक बड़ी तुला मंगवाई गई, और उसके एक पलड़े में यह तुच्छ-सी हड्डी और दूसरे में चमकती मुद्राओं से भरा सारा-का-सारा थाल उंडेल दिया गया।

पर हड्डी का टुकड़ा ज्यों-का-त्यों भारी निकला !

"यह जादू की हड्डी है, वृद्ध तुम मेरा अपमान करने आये हो।"

महाराज की आँखें दम्भ और क्रोध से लाल हो उठीं। न वह हड्डी को बाहर फैंक सकते थे, न ही उसके बराबर सोना जुटा सकते थे।

इससे भी बड़ी तुला मंगवाई गई। मुद्राओं के स्थान पर सोने की ईंट रख दी गई, पर नन्हीं-सी सफेद हड्डी फिर भी भारी निकली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पागल जुआरी की तरह महाराज इस तुला पर अपनी स्वर्ण-राशि लुटाने लगे। दरबारी चित्रवत् खड़े इस व्यापार को देख रहे थे। महाराज के माथे पर पसीने के बिन्दु नज़र आने लगे।

वृद्ध धीरे-धीरे मुस्काने लगा, फिर हाथ बाँध कर बोला—

"महाराज उदयगिरि, आपका राज्य बहुत बड़ा है, पर आपके राज्य की धनराशि तो क्या, संसार भर के राज्यों में इसकी तुलना का सोना न मिल सकेगा।"

महाराज का सांस फूला हुआ था। वह नज़र उठाकर बोले—

"क्या कहा वृद्ध ! संसार भर का सोना इस हड्डी की तुलना नहीं कर सकता ?"

"हाँ महाराज ! संसार के सात सिन्धुओं का पानी भी यदि सोना वन जाए तो इस हड्डी की प्यास को नहीं बुझा पाएगा।"

महाराज चुप हो गये, और एक टक वृद्ध के चेहरे की ओर देखने लगे। फिर धीरे से बोले—

"क्या बात है, वृद्ध ! इस हड्डी का क्या भेद है ?"

"यह कामना की हड्डी है, महाराज ! इसकी प्यास सदा बढ़ती है, कभी बुझती नहीं।"

महाराज विस्मय में आ गए। उनकी गम्भीर मुद्रा पर आवेश, पराजय और नम्रता के भाव नज़र आने लगे। उनकी आँखें वृद्ध के चेहरे पर से हट कर अनोखी हड्डी पर आ गईं।

"तो क्या वृद्ध, संसार भर की सम्पत्ति इस हड्डी से हल्की ही रहेगी ?"

"हाँ महाराज !" वृद्ध ने कहा। फिर धीरे से बोला—

"यह मछुओं का छोटा-सा देश तो इसके पलड़े को छू तक न पाएगा महाराज।"

"तो वृद्ध, क्या इस हड्डी की तुलना संसार की कोई भी वस्तु नहीं कर पाएगी ?"

वृद्ध मुस्काया, फिर उसने धीरे से अपने पास खड़े हुए एक सैनिक के हाथ में से उसकी कटार ले ली और दूसरे ही क्षण अपने हाथ को ज़ख़्मी कर लिया।

"यह तुमने क्या किया, वृद्ध ? अपना हाथ काट लिया ?" महाराज नें हैरान होकर पूछा।

9—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्ध ने अपने ज़ख्मी हाथ पर से टपकते लहू की एक बूंद तुला में डाल दी। देखते-ही-देखते हड्डी का पलड़ा ऊँचा उठने लगा, यहाँ तक कि खून की बूंद का पलड़ा बोझल हो गया।

"महाराज उदयगिरि, मेरा रक्त तो बूढ़ा हो चुका है, उसमें कोई स्पन्दन नहीं, पर एक युवक या एक बच्चे के खून का तो स्पर्शमात्र भी भारी होगा।"

महाराज विचलित हो उठे और चुपचाप शिविर में से बाहर निकल कर झील के सामने आ खड़े हुए। बाणों की वर्षा अब भी उसी वेग से चल रही थी, और झील का पानी अब भी लाल हो रहा था। झील के सामने खड़े महाराज, बड़ी देर तक कभी हड्डी को देखते, कभी झील के रक्त-रंजित पानी को देखते ....।

कहते हैं, दूसरे दिन प्रातः जब दुन्दुभि बजने का समय हुआ, तो मछुओं ने देखा कि महाराज उदयगिरि की सेनाएं वापिस लौट रही हैं, और वनों से भागे हुए पशु-पक्षी फिर से धीरे-धीरे अपने ग़ारों और घोंसलों को लौटने लगे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बलराम ने मूर्ति की पूजा की, फूल चढ़ाये और धन के लिए हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगा।

कर्म-चक्र

युधिष्ठिर कुमार

प्राचीन काल की बात है, बहुत पुरानी, एक बार लक्ष्मी और सरस्वती में विवाद छिड़ गया। लक्ष्मी बोली, "मेरे आशीर्वाद के आगे भला कर्मों की क्या हस्ती है?" परन्तु सरस्वती अपनी बात पर अड़ी थी कि हर एक को पिछले कर्मों का फल भोगना पड़ता है। दोनों में बहस छिड़ गई और अन्त में लक्ष्मी ने कहा—"हम दोनों चल कर लक्ष्मी के मन्दिर में मूर्ति के पीछे छिप जायें। वहाँ जो कोई भी धन की इच्छा लेकर सबसे पहले आयेगा, उसको मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी इच्छानुसार धन दूँगी। फिर देखूँगी कि कर्म किस प्रकार उसे सुखी होने से रोकेंगे।" सरस्वती ने कहा—"ठीक है और आपको एक नहीं, तीन मौके मिलेंगे।"

दोनों मन्दिर में जाकर लक्ष्मी की मूर्ति के पीछे छिप गईं।

मन्दिर के पास ही अम्बर नाम का एक गाँव था। उसमें बलराम नामक एक लकड़हारा अत्यन्त ग़रीबी में अपने दिन काट रहा था। उसकी पत्नी का नाम सुनीति था। उसके एक पुत्र और एक पुत्री भी थी। वह प्रतिदिन लकड़ी काटता अथवा पड़ोसियों के काम करके अपना पेट पालता था। परन्तु तीन रोज़ से लगातार वर्षा हो रही थी, जिसके कारण वह घर से काम करने को न जा सका तथा घर में अन्न का एक दाना भी न था। बालक भूख से व्याकुल थे और माता-पिता विवश थे। दिन निकलते ही वर्षा रुकी और सुनीति ने कह सुन कर बलराम को काम की खोज में भेजा। बलराम ने बन में लकड़ी काटी और फूल जमा किये। फिर कुछ फूल लेकर वह लक्ष्मी के मंदिर की ओर चला। बलराम अत्यन्त भाग्यवान् था, क्योंकि वही पहला मनुष्य था, जो कि उस मन्दिर में सबसे पहले पहुँचा जिसमें दोनों देवियाँ छिपी बैठी थीं। बलराम ने मूर्ति की पूजा की, फूल चढ़ाये और धन के लिए हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा। देवी लक्ष्मी ने उपयुक्त अवसर देखकर मोहरों की वर्षा कर दी। बलराम आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था कि क्या यह सत्य है! अथवा स्वप्न? बड़ी देर में उसे विश्वास हुआ कि देवी लक्ष्मी वास्तव में उस पर प्रसन्न हो गई हैं।

मन्दिर के कोने में मिट्टी की एक हंडिया रखी थी। सब मोहरें उसमें भर कर आनन्द से उछलता हुआ वह अपने घर पहुँचा। बाहर से ही उसने अपनी पत्नी को आवाज़ें देनी शुरू कीं कि देखो सुनीति मैं क्या लाया हूँ, परन्तु वह अपनी किसी पड़ोसिन से आटा उधार मांगने गई हुई थी। वह उसे ढूँढ़ने को बाहर चल दिया। थोड़ी देर में दोनों पति-पत्नी वापिस आ गये। बलराम तो खुशी-खुशी सब बता रहा था, परन्तु सुनीति उस पर विश्वास नहीं कर रही थी। घर में आकर दोनों ने देखा कि हंडिया भर अशर्फ़ियाँ तो कहाँ, एक भी अशर्फ़ी नहीं है। बलराम कटे पेड़ की भांति गिर पड़ा और सुनीति उसे गालियाँ सुनाने लगी। अब वह बोलता भी क्या? चुप पड़ा रहा। अगले दिन प्रातःकाल वह फिर देवी के मन्दिर पहुँचा। लक्ष्मी सोच रही थी कि बलराम अब धनी हो गया है। अतएव बहुत सारी सामग्री लाकर पूजा करेगा। परन्तु बलराम ने रो-रो कर सारी कथा सुनाई। अब की बार देवी लक्ष्मी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने गले का मणिमुक्ताओं का हार उसके ऊपर फेंक दिया। वह अत्यन्त खुश होकर वहाँ से चल दिया। रास्ते में उसे ध्यान आया कि कल उसने धन मिलने पर निर्मल जल में स्नान करके पूजा नहीं की थी, शायद इसीलिये उसका कल वाला धन खो गया।

यह सोचते ही वह सरोवर पर जा पहुँचा और हार को कुर्ते की जेब में भलीभाँति बाँध कर कपड़े जल के किनारे रख दिये और नहाने को घुस गया। जब वह सूर्य की ओर मुँह करके उसे जल दे रहा था, कपड़ों की ओर उसकी कमर थी। हार ज़रा-सा जेब में से चमक रहा था। मछली उसे कोई खाद्य वस्तु समझ चट से निगल गई। इधर बलराम स्नान से निवृत्त होकर आया तो हार को ग़ायब देखकर रोने लगा। सब जगह उसने हार ढूँढ़ा, पर वहाँ हार कहाँ। घर पहुँच कर उसने रोते-रोते अपनी पत्नी को सब हाल सुनाया, परन्तु उसने विश्वास करने की बजाय और उसे चार बातें सुना दीं।

अगले दिन बलराम फिर देवी के मन्दिर देर से पहुँचा। लक्ष्मी, सरस्वती से कह रही थीं—"देखो आज बलराम नहीं आयेगा। अब वह अमीर हो गया है। यह मनुष्य बड़े कृतघ्न होते हैं।"

परन्तु कुछ ही क्षण पश्चात् बलराम रोता हुआ आ पहुँचा और आकर सब हाल सुनाने लगा। देवी लक्ष्मी देवी सरस्वती से कहने लगी—"यह मनुष्य बड़ा मूर्ख मालूम देता है।"

सरस्वती बोली—"मूर्ख नहीं है। इसके बुरे कर्मों का चक्र अभी समाप्त नहीं हुआ है।"

लक्ष्मी चिढ़ कर बोली "फिर वही कर्म-चक्र। अच्छा अब के मैं इसको बड़ा कीमती एक छोटा-सा पत्थर दूँगी, देखूँ इसे कौन लेता है।" ऐसा कह कर उन्होंने एक छोटा मूल्यवान् पत्थर उसके आगे फैंक दिया। बलराम ने उसे तुरन्त उठा लिया और आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा। अब वह उसे मुट्ठी में दबाए घर की ओर भागा। उसे सुनीति के पास पहुँचाने की जल्दी थी। आधे रास्ते आकर वह मुट्ठी खोलकर देखने लगा कि कहीं अमूल्य पत्थर हाथ में से ग़ायब तो नहीं हो गया। पत्थर लाल-लाल चमकते देख कर एक चील उसे खाने की वस्तु समझ कर उससे एक ही झपाटे से छीन कर ले गई। अब तो बलराम सर पीट कर रह गया। उसने घर जाकर अपनी पत्नी को कुछ न बताया और चुपचाप जाकर लेट गया। उसे ऐसा लेटा देखकर सुनीति का हृदय भर आया, तथा वह उसे खोये हुए धन के लिए सांत्वना देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी। अगले दिन वह मन्दिर न जाकर मज़दूरी करने को चला गया क्योंकि सुनीति की ऐसी ही इच्छा थी।

उधर मंदिर में देवी लक्ष्मी कहने लगीं—"अब बलराम ज़रूर लखपती हो गया होगा। भला वह अब यहाँ क्यों आयेगा।" परन्तु सरस्वती बोली "नहीं बहिन ऐसा नहीं हुआ। वह अभी उतना ही ग़रीब है और शाम को उसके बुरे कर्मों का प्रभाव समाप्त होगा, तब वह अवश्य ही लखपती बनेगा।"



उधर सुनीति ने जब मछली काटी तो उसके पेट में से वह हार निकल पड़ा। घर आकर दोनों चकित रह गये क्योंकि उनकी तीनों चीज़ें मिल चुकी थीं।

शाम को बलराम को आठ आने मिले। उससे वह आटा, नमक, तेल तथा मछली आदि खरीद कर घर चला। उसकी पत्नी तथा बच्चे यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए। पत्नी ने घर में जाकर भोजन की तैयारी शुरू की और वह कुल्हाड़ी लेकर लकड़ी लेने चला। भाग्यवश वह उसी कीकर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालों को काटने लगा जिसमें उस चील का घोंसला था तथा वह मूल्यवान् पत्थर उसमें रखा था। उसको देखते ही वह खुशी के मारे लकड़ी और कुल्हाड़ी सब छोड़कर भागा घर की ओर। वह कहता जा रहा था, "सुनीति, चोर मिल गया! चोर मिल गया!"

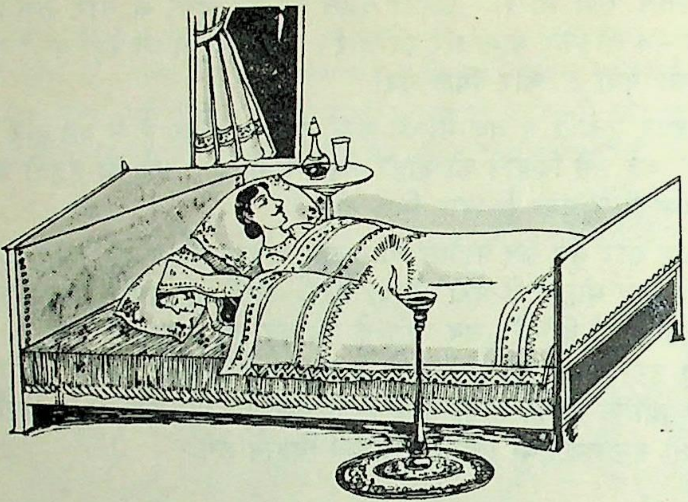
उधर सुनीति ने जब मछली काटी तो उसके पेट में से वह हार निकल पड़ा। वह उसे दिखाने को बाहर लेकर भागी। वह भी कहती जा रही थी, "चोर मिल गया! चोर मिल गया!"

यह शोर सुन कर पड़ोसी की कुबड़ी बुढ़िया घबरा गई, क्योंकि उसी ने पहले दिन वह मोहरों से भरी हंडिया चुराई थी। वह समझी शायद उसी की चोरी पकड़ी गई है, और अब उसी के घर वह उसे पकड़ने आ रहे हैं। वह चुपके से उस हंडिया को उसी कोने में रख आई। घर आकर दोनों चकित रह गये क्योंकि उनकी तीनों चीज़ें मिल चुकी थीं। अब वह लखपती क्या करोड़पती बन गये तथा सुखपूर्वक जीवन बिताने लगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दीपकदेव बोले—"रानी ! अगर तुमको मकान बनाते समय, राजगीरों की तसले ढो-ढो कर गिलावा और चूना देना पड़े तो कैसा लगेगा ?"

फूलों की सेज

भगवानचन्द्र गुप्त

एक नगर में एक राजा राज्य करता था। राजा की एक रानी थी। उस रानी को कपड़े और गहनों का बहुत अधिक शौक था। उसे कभी सोने का कर्णफूल चाहिए, कभी हीरे का हार तो कभी मोतियों की माला। कपड़ों की तो बात मत पूछिए। भागलपुरी टसर और ढाके की मलमल और रात को सोने के लिए फूलों की सेज। फूल भी खिले नहीं, वरन् अधखिली कलियाँ जो रातभर में धीरे-धीरे खिलें। रोज़ नौकर अधखिली कलियाँ चुन-चुन कर लाते, और दासी सेज लगाती। सो संयोग से एक दिन अधखिली कलियों के साथ कुछ खिली कलियाँ भी सेज पर आ गईं। अब तो रानी को भारी बेचैनी हुई।

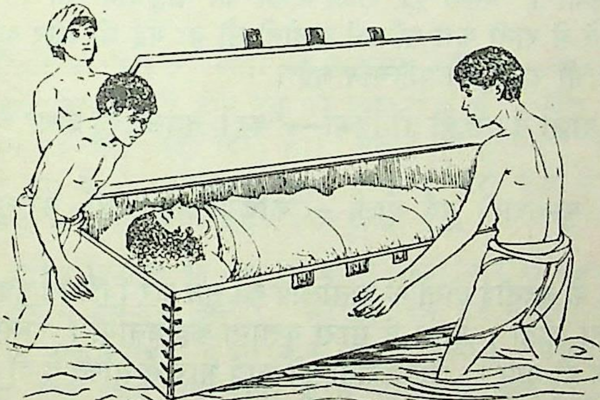
रानी को नींद कहाँ ? खिली कलियाँ जो गड़ रही थीं। दीपकदेव अपना प्रकाश फैला रहे थे। उनसे न रहा गया और वे बोले—"रानी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुमको मकान बनाते समय, राजगीरों को तसले ढो-ढो कर गिलावा और चूना देना पड़े तो कैसा लगेगा ? क्या तसलों का ढोना इन कलियों से भी अधिक अखरेगा ?" रानी ने सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। वह अवाक हो गई। परन्तु तब तक राजा जाग गये थे और उन्होंने सारी बातें सुन लीं।

राजा ने रानी से सवाल किया—"दीपकदेव के सवाल को आज़माइश करके देखो न ? उनकी आज्ञा को तोड़ना अच्छा नहीं।" रानी राज़ी हो गई। राजा ने काठ का एक कटघरा बनवाया। उसमें रानी को बन्द करवा दिया और पास बहने वाली नदी में बहा दिया। वह कटघरा बहते-बहते एक दूसरे रजवाड़े के किनारे जा लगा। वह राजा के बहनोई के राज्य में था। घटवारों ने कटघरे को पकड़ कर किनारे लगाया। खोला तो उसमें एक सुन्दरी निकली। रानी का ज़ेवर और क़ीमती वस्त्र पहले ही खोल लिया



घटवारों ने कटघरे को पकड़ कर किनारे लगाया। खोला तो उसमें एक सुन्दरी निकली।

गया था। वह साधारण मोटे, फटे चीथड़े कपड़े पहने हुए थी। पर सुन्दरता साथ थी। राजा उसको नहीं पहचान सका और न रानी ने ही अपना सही पता-निशान दिया, क्योंकि दीपकदेव की बात की परीक्षा जो लेनी थी। राजा का एक नया महल बन रहा था। सो राजा को मजदूरों की ज़रूरत थी। राजा ने पूछा—"तुम क्या चाहती हो ?"

10—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी ने अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए कहा—"मकान बनाने में तसला ढोने का काम।"

राजा ने उस रानी को तसला ढोने के काम पर बहाल किया। रानी दिन भर तसला ढोती और मज़दूरी के थोड़े पैसों से अपना जीवन-निर्वाह करती। दिन भर के कठिन परिश्रम के बाद जो रूखा-सूखा भोजन मिलता, वह बड़ा ही मधुर और स्वादिष्ट लगता और रात भर खुरदरी चटाई पर खर्राटे ले-ले कर रानी खूब सोती। मुँह अँधेरे उठ जाती और नित्य क्रिया से निवृत्त हो मन में उमंग और उत्साह के साथ अपने काम में जुट जाती।

इसी प्रकार रानी को काम करते-करते बहुत दिन बीत गये। एक बार रानी का राजा (पति) अपने बहनोई के यहाँ किसी काम से आया, विशेषकर दिल बहलाने के ख्याल से। क्योंकि बिना रानी के राजा क्या? अकेले राज-काज में उसका मन नहीं लगता था। सो राजा ने रानी को वहाँ अनायास देख लिया। देखते ही राजा रानी को पहिचान गये। हाँ, मेहनत मज़दूरी करने से रानी कुछ साँवली सलोनी-सी हो गई थी और कुछ हृष्ट-पुष्ट भी। रानी भी राजा को पहिचान गई।

फिर राजा ने पूछ ही तो लिया—"कहो, तसलों का ढोना कैसा लग रहा है?"

रानी मुस्कराती हुई बोली—"कलियाँ गड़ती थीं, परन्तु तसले नहीं गड़ते।"

राजा के बहनोई दोनों के वार्तालाप को सुन कर विस्मित हुए। उन्होंने रहस्य जानना चाहा। राजा ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। राजा का बहनोई सुन कर मुग्ध हो गया। उसने रानी को कार्य भार से मुक्ति दे दी और आराम से रहने, खाने-पीने का इन्तज़ाम कर दिया।

कुछ दिनों के बाद रानी से राजा ने पूछा—"कहो, अब कैसा लगता है?"

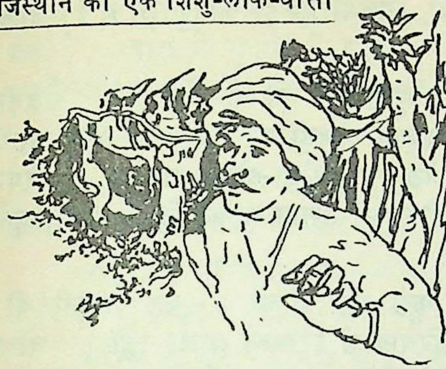
रानी ने कहा—"वह आनन्द कहाँ? आलस्य अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है। डर लगता है कि कहीं कलियाँ फिर से गड़ने न लग जायें।"

राजा ने अपनी राय प्रकट की—"तो, एक काम करो। हम दोनों मिल कर दिन भर मज़दूरी किया करें और रात को कलियों की सेज पर सोयें।"

रानी ने अपना अनुभव बतलाया—"तो, फिर कलियों की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जायगी। यों ही बेहिसाब नींद आ जाया करेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भूरिया ने कमेड़ी के पैरों को कस कर बाँधा और उसे उलटा लटका दिया, और कहने लगा—"ओ परिन्दे ! अब उड़ !"

टमरक-टूँ

अक्षयचन्द्र शर्मा

भरपूर चौमासे के दिन। खेतों की बात मत पूछो! बाजरी की हरी बालें, उनमें दूधिया दाने और उन पर सुनहरी कूँ-कूँ, जैसे मोतियों पर किसी ने सोने का पानी चढ़ा दिया है। मतीरे की हरी-हरी बेलों के नाल दूर-दूर पसरे हुए थे। नंग-धड़ंग रहने वाली सुनहरी बालू ने अभी अपने ऊपर जैसे हरित-वर्ण का झीना अंचल डाल लिया हो।

और भूरिये किसान का खेत तो सबसे बाज़ी मार ले गया। बाजरी के एक-एक बूटे में दस-दस बालें। भूरिया दिन भर नाचता-गाता खेत में काम करता। एक कमेड़ी* ने भूरिये के खेत को देखा। उसका मन ललचा गया। वह रोज़ सवेरे चूगा-पानी करने भूरिये के खेत पर पहुँच जाती, फुर-फुर उड़कर बाजरी पर बैठती, दाने चुगती और उड़ जाती। भूरिया पीपा बजाकर चिड़ियों को उड़ाता।

एक दिन भूरिये ने कमेड़ी से कहा—"तू मेरे खेत में मत आया कर, नहीं तो मैं तुझको पकड़ लूँगा।"

कमेड़ी ने कहा—"खेत तेरा अकेले का नहीं। मेरी माँ, मेरी दादी, मेरी पड़दादी यहीं दाने चुगती थीं। तू मुझे पकड़ेगा ? मैं फुर-फुर उड़ने

*कबूतर की जाति का एक कत्थई रंग का पक्षी, जिसको पिण्डुकी या पिडुकी भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वाला परिन्दा ! मेरी माँ कहती थी, आदमी हेकड़ी का पुतला है ! आज बात सच निकली ।"

भूरिया चुप रहा । दूसरे दिन भूरिया ने एक कुबध रची । खेजड़ी पर एक फंदा डाला । कमेड़ी उड़ती-उड़ती खेजड़ी पर बैठने आई और उसके पैर उलझ गये । भूरिया ताक में बैठा था, दौड़ा-दौड़ा आया । भूरिया ने कमेड़ी के पैरों को कस कर बाँधा और उसे उलटा लटका दिया, और कहने लगा—"ओ, परिन्दे ! अब उड़ ! !"

कमेड़ी बेचारी चुप ! वह कुछ नहीं बोली । वह जानती थी, भूरिये का दिल पत्थर है, वह दाद-फ़रियाद से पिघलने वाला नहीं । चोंच को थोड़ा तिरछा कर केवल उसने भूरिये को देखा, और भूरिया कहता गया—"ओ, परिन्दे ! अब उड़ ! !"

गायों का एक ग्वाला खेत की उगरी के पास से निकला । एक हाथ में लाठी और दूसरे में अलगोजा । गायों का झुण्ड पास ही चर रहा था । कमेड़ी ने रोते-रोते कहना शुरू किया :

गायाँ का गिवाल्य रे वीर ! टमरक-टूँ ।
बंधी कमेड़ी छुड़ाई म्हारा वीर ! टमरक-टूँ ।
डूँगर लारै बच्चा रे वीर ! टमरक-टूँ ।
लोड़ा-लोड़ा बच्चा रे वीर ! टमरक-टूँ ।
आँधीं सूँ उड़ जासी रे वीर ! टमरक-टूँ ।
मेहाँ सूँ गल जासी रे वीर ! टमरक-टूँ ।
लुँ आँ सूँ बल जासी रे वीर ! टमरक-टूँ ।
—'हे गायों के ग्वाले, हे मेरे भाई !
बँधी कमेड़ी को छुड़ाओ न भाई !
मेरे बच्चे पहाड़ी के पीछे हैं !
मेरे बच्चे छोटे-छोटे हैं !
वे आँधी से उड़ जावेंगे !
मेंह से गल जावेंगे !
लू से जल जावेंगे !'

कमेड़ी की आवाज़ में बेहद दुःख था, दर्द था । उसका दिल रो रहा था, तड़प रहा था । ग्वाला रुका, उसने खेजड़ी पर बँधी कमेड़ी को देखा । ग्वाले की आँखों में मोती की तरह बड़े-बड़े आंसू भर आये । वह बेचारा क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता। भूरिया से वह डरता था। भूरिया लड़ाईखोर, सोते नाग को कौन छेड़े? ग्वाले ने भूरिये से कहा—"भाई, भूरिया! मेरी एक अच्छी दूध वाली गाय ले लो और इस कमेड़ी को छोड़ दो।"

लेकिन भूरिये ने कहा—"ना भाई, ना!" ग्वाला बेचारा चलता बना।

इतने में ऊँटों का राइका (ऊँट चराने वाला) उधर से निकला। उसे सम्बोधन करके कमेड़ी ने फिर वही गीत गाया।

राइका ने भूरिये से कहा—"भाई। एक अच्छा सा ऊंट मेरे टोले (झुंड) से ले लो और इस कमेड़ी को छोड़ दो।"

भूरिये ने कहा—"ना, भाई, ना!" राइका बेचारा चलता बना।

इसी प्रकार बकरी-भेड़ को चराने वाला निकला। पर भूरिया टस से मस नहीं हुआ। इतने में ऊँदर (चूहा) बिल से निकला। ऊँदर ने कमेड़ी को आवाज़ लगाते हुए कहा—

"कमेड़ी बाई, नीचे आओ!
धूल में खेलो, गीत सुनाओ।"

पर कमेड़ी ने रोते-रोते कहा—ऊँदर भैया! देखते नहीं। भूरिया ने मुझे बाँध दिया है। मैं तो अब मर कर ही नीचे आऊँगी। मैं अब कभी नहीं गा सकूंगी। कभी नहीं खेल सकूंगी। मेरे छोटे-छोटे बच्चे, पहाड़ी के पीछे ..."

कहते-कहते कमेड़ी का गला भर आया। ऊँदर पूरा बाहर निकल देखने लगा। उसने मूँछों को हिलाते हुए कहा—"डरना मत, कमेड़ी बहिन! भूरिये का फन्दा तो क्या एक बार मौत के फन्दे से भी मैं तुम्हें छुड़ा सकूँगा।"

इतने में भूरिया आता दिखाई दिया ऊँदर ने भूरिये से कहा—"भूरिया! ओ, भूरिया! मेरे पास ज़मीन में सोने का ख़ज़ाना है। तुम कमेड़ी को छोड़ दो तो मैं तुम्हें निहाल कर दूँगा। तुम्हारा घर सोने से भर दूँगा।" भूरिया सोने का नाम सुन कर राज़ी हो गया। कहने लगा—"ऊँदर राज! तुम ज़मीन के राजा हो, तुम्हारी बात नहीं मानूँगा तो किसकी मानूँगा?" इतना कह कर भूरिया ने कमेड़ी की टाँगे खोल दीं। कमेड़ी फुर-फुर कर उड़ गई।

ऊँदर बिल में घुसते हुए कहने लगा—"सच, आदमी लालची भी है—टमरक-टूँ!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संतरी बोला, "भाई तुम्हें इन बातों से क्या लेना है ? अपना काम-धन्धा देखो ।"

सन्तरे की राजकुमारी

शिवनयना मेहता

किसी देश में एक बहुत बड़ा जंगल था। उस जंगल के बीचों-बीच एक संतरे का पेड़ था। उस पेड़ के नीचे एक संतरी पहरा दिया करता था। एक दिन दो शिकारी राजकुमार शिकार करते हुए उधर आ निकले। संतरे के पेड़ के नीचे खड़े उस संतरी को देख उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। कुछ देर तो वह दूर से खड़े उस संतरी की ओर देखते रहे, पर वे कुछ समझ न सके। फिर परस्पर कुछ सलाह करके वह आगे बढ़े और संतरी के निकट जा कर पूछा—"संतरी जी आप क्यों उस संतरे के पेड़ के नीचे पहरा दे रहे हो ?"

संतरी यह सुन हँस पड़ा और फिर कुछ देर बाद बोला—"भाई तुम्हें इन बातों से क्या लेना है ? अपना काम धन्धा देखो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन शिकारी और भी हैरान हुए और सोचने लगे कि 'ऐसी क्या बात है जो संतरी बताना नहीं चाहता।' उन्होंने फिर आग्रह से पूछा—"संतरी जी, हम तुम्हारे यहाँ पहरा देने का कारण जाने बिना यहाँ से नहीं जायेंगे।"

संतरी बोला, "कारण बताने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है, पर हाँ, तुम्हें जान कर केवल दुःख के और कुछ न प्राप्त होगा, इसीलिये मैं नहीं बताना चाहता।"

बड़ा राजकुमार बोला, "हम किसी प्रकार के दुःख अथवा संकट से नहीं घबराते; हम हर प्रकार के संकट का मुकाबला करेंगे और दुःख भोगने को तैयार हैं।"

छोटा राजकुमार अपने बड़े भाई से बोला, "भैया, चलो घर चलें, न जाने क्या मुसीबत आ जाएगी। यहाँ जंगल में तो कोई सहायक भी नहीं मिलेगा।"

बड़ा भाई—"डरने की क्या बात है। हम तो राजपूत हैं। यदि तुम्हें डर लगता है तो तुम सहर्ष घर लौट जाओ। मैं तो सारी बात की खोज करके ही चैन लूँगा।"

छोटा भाई—"ना भाई, मैं तुम्हें यहाँ अकेला छोड़ कर नहीं जाऊँगा। अकेले मैं पिता जी को क्या मुँह दिखाऊँगा, जैसा तुम कहो वैसा ही मैं करूंगा।"

संतरी बोला, "तो तुम लोग नहीं मानोगे कारण जाने बगैर। अच्छा, तो जैसे भगवान् की इच्छा। लो, बैठ जाओ उस पत्थर पर और ध्यान से सुनो।" इतना कह, वह संतरी भी वहीं एक पत्थर पर बैठ गया और कुछ देर सोच कर सिर खुजलाते हुए उसने कहना आरम्भ किया—

"इस संतरे के पेड़ का तना खोखला है। इसमें उतर कर अन्दर बड़ा सुन्दर, हीरे-जवाहरात से चमकता हुआ एक महल है जिसमें एक राजकुमारी रहती है। उस राजकुमारी के बराबर की सुन्दरी इस संसार में और कोई दूसरी नहीं है। वह राजकुमारी महीने में एक बार अपनी सखियों के साथ बाहर जंगल में घूमने निकलती है। पूर्णमासी की अर्द्धरात्रि को यहाँ जंगल में मंगल हो जाता है। बस, सबेरा होने से पहले ही राजकुमारी और उसकी मंडली वापस अपने महल में चली जाती है। मैं यहाँ उसी राजकुमारी के महल की रखवाली करता हूँ। इस तने के भीतर महल के चारों ओर और भी पहरे-दार हैं। यहाँ अनेक राजकुमार आ चुके हैं और राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा मन में लिये हुए ही मौत के मुँह में चले गए हैं। उनकी दशा देखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बहुत दया आती थी, पर वह भी तुम्हारी तरह ज़िद्दी थे। मेरे लाख मना करने पर भी वह नहीं माने।"

बड़ा शिकारी बोला, "भाई संतरी, मैं भी इस राजकुमारी को देखना अवश्य चाहता हूँ, भला ऐसी भी क्या बात है जो इतने लोग इसके पीछे अपने प्राणों के हाथ धो बैठे हैं।"

संतरी ने बहुत समझाया-बुझाया, पर जब वह नहीं माने तो उसने कहा, "अच्छा, पूर्णमासी की रात्रि को यहाँ आकर किसी झाड़ी में छुप कर बैठ जाना। जब अर्द्धरात्रि को राजकुमारी और उसकी सखियाँ बाहर निकलें तो उसे देख लेना। परन्तु याद रखना कि बिलकुल चुपचाप बैठना होगा, ज़रा भी आवाज़ आने पर खैर न होगी।" संतरी की बात सुन दोनों शिकारी राजकुमार अति प्रसन्न हुए, और पूर्णमाशी की रात्रि को फिर से वहाँ आने की ठान, वहाँ से अपने घर लौट गए।

जैसे-तैसे पूर्णमासी की प्रतीक्षा की और समय आने पर अपने पिता की आज्ञा ले दोनों राजकुमार शिकार को चल दिये। जंगल में पहुँच कर दिन भर विश्राम किया और रात्रि पड़ने पर संतरे के पेड़ के निकट एक झाड़ी में जा छुपे। आधी रात होने पर तने की खोल में थोड़ा प्रकाश दिखाई दिया। फिर एक अत्यन्त सुन्दर लड़की धीरे से बाहर निकली और चारों ओर देख कर घुस गई। पांच-दस मिनट के बाद आठ-दस लड़कियाँ बाहर निकलीं। सब की सब बड़ी सुन्दर थीं। फिर राजकुमारी धीरे-धीरे बाहर आई। उसके बाहर आते ही चन्द्रमा ने भी अपना मुख एक बादल की टुकड़ी में छुपा लिया। राजकुमारी की सुन्दरता देख दोनों राजकुमार होश खो बैठे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे एक अद्भुत स्वप्न देख रहे हों।

राजकुमारी और उसकी सखियाँ बड़ी देर तक वहां गाती-बजाती, नाचती और आँखमिचौनी खेलती रहीं, फिर घूम-फिर कर सवेरा होने से पहले ही सब वापस अपने महल में चली गईं। बड़े राजकुमार ने उनका पीछा करना चाहा, पर छोटे राजकुमार ने ज्यों-त्यों उसे रोक लिया। प्रातः संतरी को देखते ही बड़े राजकुमार ने राजकुमारी के महल में जाने की इच्छा प्रकट की, पर संतरी ने सिर हिला दिया और कहा—

"वहाँ पहुँचना असम्भव है राजकुमारी के ऊपर किसी ने जादू किया है, इसलिये उसके पास कोई नहीं जा सकता। हाँ, एक विधि है, जो कोई इस संतरे के पेड़ पर से दो फूल ला सकेगा, वही व्यक्ति राजकुमारी के महल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकेगा। परन्तु सन्तरे के पेड़ को छूना मना है और ज़मीन पर पड़े फूल हाथ उठाने से भी काम नहीं चलेगा। पेड़ पर लगे फूल हाथ से तोड़ना भी मना है। अब सोच लो, अगले महीने इस पेड़ पर फूल आएंगे।

सुनकर दोनों राजकुमार घर चले गए।



फिर राजकुमारी धीरे-धीरे बाहर आई। उसके बाहर आते ही चन्द्रमा ने भी अपना मुख एक बादल की टुकड़ी में छुपा लिया।

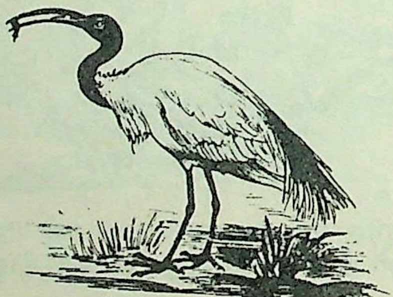
अगले महीने, दोनों राजकुमार शिकार का बहाना बना कर फिर उसी जंगल में पहुँचे। वे बड़े असमंजस में थे कि हाथ लगाए बिना संतरे के पेड़ से फूल कैसे तोड़े जाएँ। तीन दिन और रात वे प्रयत्न करते रहे, पर फूल हाथ न लगे। रात को थक कर उसी पेड़ के नीचे सो जाते बिचारे। चौथे दिन बड़े वेग से हवा चलने लगी और पेड़ पर से फूल ज़मीन पर गिरने लगे। यह देख बड़ा राजकुमार उठा और उसके दो फूल ज़मीन पर गिरने से पहले ही पकड़ लिए। एक फूल छोटे राजकुमार के हाथ भी लग गया। संतरी ने बड़े आदर-प्रेम से उन्हें नीचे महल में पहुँचा दिया। वहाँ धूमधाम से बड़े राजकुमार का विवाह संतरे की राजकुमारी के साथ हो गया और छोटे

11—6 PD (I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

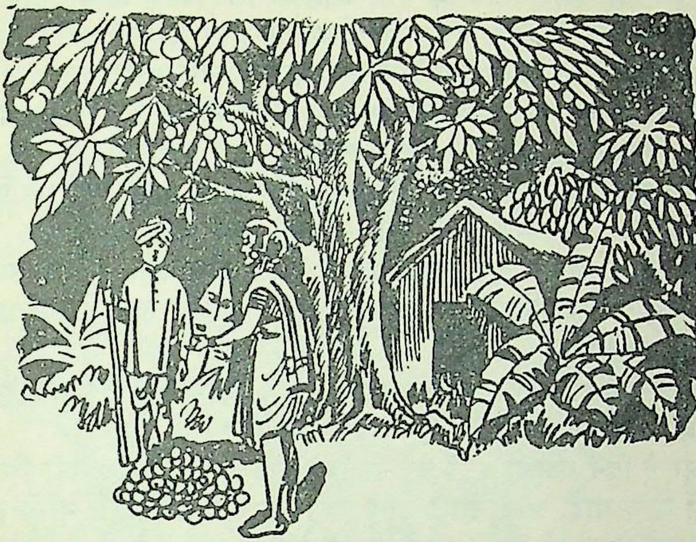
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार का राजकुमारी की सबसे प्यारी सखी के साथ । दोनों राजकुमार अपनी-अपनी पत्नी को साथ ले अपने पिता को प्रणाम करने पहुँचे, और उनका आशीर्वाद लिया । सारी राजधानी में बड़ी खुशी मनाई गई । बड़ा राजकुमार तो पिता के साथ राज-काज सम्हालने लगा और छोटा राजकुमार संतरे के महल में रहने लगा ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लड़के ने फ़ौरन कुछ नाशपातियाँ तोड़ीं, और कहा—"तुम मेरे हिस्से की नाशपातियाँ ले लो। मैं तुम्हें इससे अधिक नहीं दे सकता क्योंकि बाकी नाशपाती मेरे भाइयों की हैं।"

तीन भाई

मन्मथनाथ गुप्त

किसी गाँव में तीन भाई रहते थे। वे इतने ग़रीब थे कि उनके पास अपना कहने के लिए सिवाय एक नाशपाती के पेड़ के और कुछ नहीं था। वे जिस छोटी-सी झोंपड़ी में रहते थे, उसी के पास वह नाशपाती का पेड़ खड़ा था। उन्हें उस नाशपाती के पेड़ से बहुत प्रेम था। जब नाशपाती गदराने लगती थी, तो वे उस पर बारी-बारी से पहरा देते थे। एक न एक भाई हर समय नाशपाती के पेड़ के पास डटा रहता था। जिस समय एक भाई पहरे पर होता था, उस समय बाकी दो भाई खेतों में काम करने जाते थे। पर अधिक-से-अधिक काम करने पर भी वे किसी तरह अपना पेट न पाल पाते थे, यहाँ तक कि पहनने के लिए ढंग के कपड़े भी नहीं मिलते थे। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन एक दयालु परी उस रास्ते से निकली। उसने देखा कि ये तीन लड़के कितने अच्छे हैं, फिर भी इनके पास खाने के लिए कोई अच्छी चीज़ नहीं है, ये बहुत ग़रीब हैं। इस पर परी के मन में दया आ गई, और वह सोचने लगी कि किसी प्रकार इन लड़कों की सहायता करनी चाहिए।

बहुत सोचने पर उसके दिमाग़ में एक योजना आई। वह भेष बदल कर एक भिखमंगिन बन गई, और लंगड़ाती हुई नाशपाती के पेड़ के पास पहुँची। जब वह वहाँ पहुँची, तो उस समय सबसे बड़ा भाई पेड़ पर पहरा दे रहा था। भिखमंगिन ने कहा—"मुझे कुछ नाशपाती मिल जायें।"

लड़के ने फ़ौरन कुछ नाशपातियाँ तोड़ीं और कहा—"तुम मेरे हिस्से की सब नाशपातियाँ ले लो। मैं तुम्हें इससे अधिक नहीं दे सकता क्योंकि बाकी नाशपातियाँ मेरे भाइयों की हैं।"

बुढ़िया भिखमंगिन ने नाशपाती ले लीं, और बड़े भाई को आशीर्वाद देकर वहाँ से चली गई।

अगले दिन मंझला भाई पेड़ के पहरे पर था। दयालु परी भिखमंगिन के रूप में फिर आई, और उसने उसी प्रकार से कुछ नाशपाती माँगी। मंझले भाई ने अपने हिस्से की सारी नाशपातियाँ उस बुढ़िया को दे दीं। वह तो और भी देने के लिए तैयार था, पर छोटे भाई के हिस्से में वह हाथ लगाना उचित नहीं समझता था। उसके अगले दिन तीसरे भाई के पहरे की बारी आई। दयालु परी उसी प्रकार भिखमंगिन के भेष में आई, और उसने छोटे भाई से नाशपाती माँगी। छोटे भाई ने बाकी सब नाशपातियाँ दे दीं, इस प्रकार पेड़ में एक भी नाशपाती न रह गई।

अगले दिन प्रातःकाल तीनों लड़के खेत पर जाने की तैयारी में व्यस्त थे कि इतने में वह दयालु परी अपने असली रूप में उनके जंगले पर उड़कर बैठ गई और बोली—"लड़को, मैंने तुम में से हर एक की परीक्षा ली, और मैंने यह देखा कि जहाँ तक दयालु होने की बात है तुम में से कोई किसी से कम नहीं। मैं तुम लोगों पर प्रसन्न हूँ। अब तुम लोग मेरे साथ आओ, और मैं तुम्हें यह बताऊँगी कि किस प्रकार तुम अच्छा खाना और कपड़े पा सकते हो?"

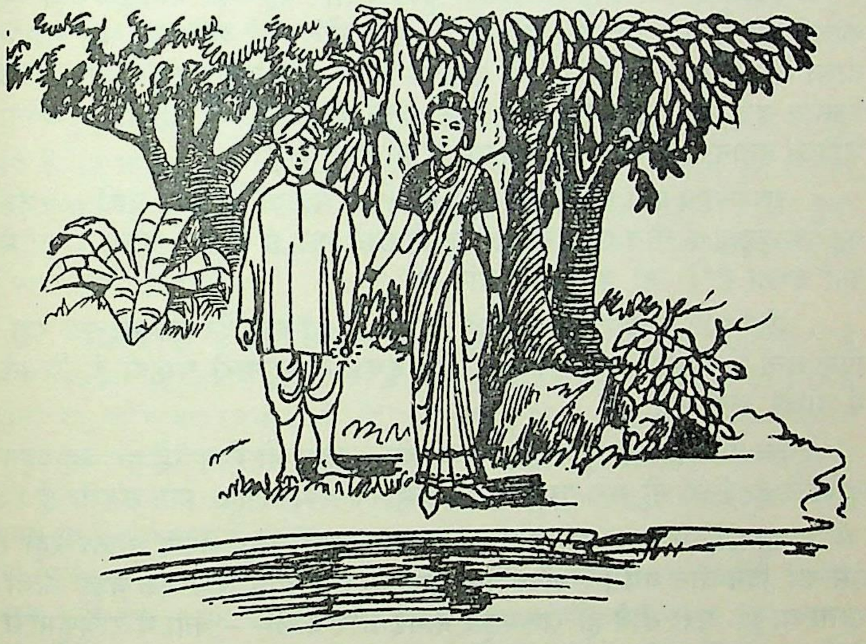
तीनों भाई उसके पीछे हो लिये। दयालु परी उन्हें एक जंगल में ले गई। उस जंगल में पेड़ इतने घने थे कि सूर्य की किरणें भी कभी ज़मीन पर नहीं पहुँच पाती थीं। परी उन्हें कभी पहाड़ पर चढ़ाती तो कभी घाटियों से ले जाती रही, और अन्त में वे एक बहुत बड़ी नदी के पास पहुँच गये, जो पहाड़ से उछलती-कूदती हुई मैदानों की ओर जा रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब लोग यहाँ आ गये तो परी खड़ी हो गई और उसने बोलना शुरू किया। पर नदी के स्रोत से इतनी आवाज़ आ रही थी कि उसकी एक बात किसी को भी सुनाई नहीं पड़ी, तब उसने हर एक के पास जा कर उसके कान में अपनी बात कही। बड़े लड़के से वह बोली—"यहाँ पर मैं तुम्हें जो तुम माँगोगे वह दूँगी। इसलिए कोई वर माँग लो।"

बड़ा भाई उस समय प्यास के मारे परेशान हो रहा था, उसने बिना कुछ सोचे-समझे कह दिया—"मैं यह चाहता हूँ कि यह पूरी नदी शर्बत बन जाय, और यह मेरी हो।"



उसने बिना सोचे-समझे कह दिया—"मैं यह चाहता हूँ कि यह पूरी नदी शर्बत बन जाय, और यह मेरी हो।"

परी ने अपनी जादू की लकड़ी घुमाई, और वह पहाड़ी नदी झागदार श्वेत जल-राशि से बदल कर लाल शर्बत के रूप में हो गई। जब ऐसा हो गया तो परी बोली—"तुमने जो माँगा, वह पूरा हो गया, अब इतनी बात याद रखना कि तुम इसका अच्छा इस्तेमाल करना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा भाई वहीं रह गया। परी छोटे दोनों भाइयों को एक हरे-भरे खेत के सामने ले गई। उस खेत के पास एक घास वाला मैदान था और उसमें सैकड़ों फाख्ते थे। यह फाख्ते बीज और कीड़े खोजने में व्यस्त थे। दयालु परी ने मंझले भाई से कहा—"अब तुम कोई वर मांग लो, पर सोच-समझ कर माँगना।"

मँझले भाई ने थोड़ी देर तक सोच कर कहा—"मैं यह चाहता हूँ कि मैं एक अच्छा किसान बन जाऊं, इसलिए आप इन फाख्तों को भेड़ बना दें और मैं उनका मालिक हो जाऊँ।"

दयालु परी ने जादू की लकड़ी घुमाई, और यह देखा गया कि वहाँ पर फाख्तों की बजाय भेड़ें चर रहीं हैं। परी बोली—"वह देखो, वह सामने वाला खेत तुम्हारा है, ये भेड़ें भी तुम्हारी हैं। यदि तुम चाहो तो एक अच्छे किसान बन सकते हो, और तुम्हें किसी बात की कमी नहीं रहेगी। अपना भविष्य बनाना या बिगाड़ना, यह तुम्हारे ही हाथ में है।"

इसके बाद परी सबसे छोटे भाई को लेकर पहाड़ों की ओर चली। जब वह एक पहाड़ के नीचे पहुँच गई, तो उसने छोटे भाई से पूछा—"तुम्हारे मन में क्या इच्छा है? जो वर चाहो मांग लो।"

छोटे भाई ने फ़ौरन उत्तर नहीं दिया। वह बड़ी देर तक सोचता रहा, फिर अन्त में बोला—"मैं एक सुन्दर-सी सुघड़ राजकुमारी चाहता हूँ, जिससे मैं शादी कर सकूँ।"

इस पर वह परी मुस्कराई। बोली—"तुम जो माँग रहे हो, वह बहुत मुश्किल है, फिर भी मेरे साथ आओ, देखूँ कि क्या किया जा सकता है।"

बहुत दिनों तक परी उस लड़के को अपने साथ लेकर घूमती रही। ऐसे कई दिन बीत गये। अन्त में वे एक शहर में आये जहाँ एक बड़ा राजा रहता था। परी सीधे ही राजमहल में गई और बोली—"क्या मैं राजकुमारी से मिल सकती हूँ? मैंने सुना है कि राजकुमारी बहुत अच्छी और सुन्दर है, अब यह देखना है कि वह है कैसी?"

परी को आज्ञा मिल गई, पर छोटा भाई मन ही मन घबड़ा रहा था कि मैं एक बहुत ही साधारण व्यक्ति हूँ, भला मेरी शादी एक राजकुमारी से कैसे हो सकती है। परी ने यह ताड़ लिया कि वह लड़का क्या सोच रहा है। वह उसका ढाढ़स बढ़ाती रही। इतने में वे राजमहल के बड़े दालान के अन्दर आ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वे वहाँ पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि उनसे पहले से बहुत से दूसरे लोग राजकुमारी से शादी करने की उम्मीदवारी में बैठे हैं। मालूम पड़ा कि इनमें से दो तो विशेष उम्मीदवार हैं। सामने ही वह सारा उपहार और सौगातें रखी हुई थीं, जो दूल्हे ले आये थे। परी ने उन चीज़ों के बगल में बेरों की वह टोकरी रख दी जिसे वे रास्ते में बटोर कर लाये थे।

छोटे भाई ने परी को जब ऐसा करते हुए देखा, उसे बड़ी शर्म आई और उसने उसे ऐसा करने से रोकना चाहा। उसने मन में यह सोचा कि यह लोग तो हीरा, सोना, चाँदी और न मालूम क्या-क्या लाये हैं, इनके बगल में बेरों की यह टोकरी होगी, तो उसमें काम तो कुछ बनेगा नहीं, केवल हँसी ही होगी। पर इस बात पर परी मुस्कराती रही, और मना करने पर भी उसने बेरों की टोकरी वहीं पर रहने दी।

इसके बाद ही दालान के लोगों में कुछ चहल-पहल सी मालूम पड़ी, सब के सब खड़े हो गये क्योंकि राजा इस समय राजकुमारी के साथ उस दालान में प्रवेश कर रहे थे। उनके लिए एक किनारे पर एक सिंहासन रखा हुआ था, वे उसी पर जाकर बैठ गये। जब वे बैठ गये तो तीनों उम्मीदवार सिर नीचा करके खड़े हो गये।

राजकुमारी ने जल्दी ही इस बात को ताड़ लिया कि यद्यपि छोटा भाई फटे कपड़ों में था फिर भी वह देखने में दूसरे उम्मीदवारों से अधिक सुन्दर मालूम होता था, और वह स्वभाव से भी अच्छा जान पड़ता था। दो उम्मीदवार में से एक अधेड़ और मोटा था, तथा दूसरा लम्बा और दुबला था। राजकुमारी को वे दोनों पसन्द नहीं आये। उसने अपने पिता से कहा कि वह उस फटे कपड़े वाले नौजवान से शादी करना पसन्द करेगी, पर राजा की यह इच्छा थी कि राजकुमारी बाकी उम्मीदवारों में से किसी से शादी करे क्योंकि वे सब बहुत धनी थे। पर राजा को साथ ही साथ अपनी लड़की का बहुत ख्याल था, इसलिए वह उसे दुःखी नहीं करना चाहते थे। राजा ने सोचा भला यह कैसे पता लगे कि इनमें से कौन सबसे अच्छा है ?

जब परी ने यह देखा कि राजा उधेड़बुन में पड़ा है, तो वह आगे बढ़ आई, बोली—"महाराज ! आप इस प्रकार से यह मामला तय करें। आप तीन अंगूर की नयी बेल इन तीनों को अपने महल में लगाने को दें। जिसकी बेल में लगाने के तीन दिन के अन्दर ही फल आ जावें, उसी से आप अपनी लड़की की शादी कर दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा ने मन ही मन सोचा कि यह तरीका अच्छा रहेगा क्योंकि न तो तीन दिन में किसी बेल में अंगूर लगेगा और न इनमें से किसी के साथ मेरी बेटी की शादी होगी। इसलिए राजा ने फ़ौरन हुक्म दे दिया और तीन अंगूर की नयी बेलें लाकर हाज़िर की गईं। उन बेलों पर उम्मीदवारों के नाम खोद दिये गये, और उन्हें राजमहल के बाग में लगा दिया गया।

राजकुमारी हर घंटे देखती रही कि किसी बेल में फल आता है कि नहीं, पर किसी में भी फल आता हुआ दिखाई नहीं पड़ा। जब दो दिन हो गये तो राजकुमारी बहुत निराश हुई, और वह समझ गई कि इनमें से किसी में फल नहीं आना है। वह मन ही मन चाह रही थी कि उस गरीब नौजवान के नाम से जो बेल लगाई गई थी, उसमें फल लगे जिससे कि उसके साथ शादी हो जाय।

तीसरे दिन राजकुमारी निराश होने पर भी अंगूर की बेल को देखने के लिए गई। रास्ते में वही ग़रीब नौजवान मिला। इस पर राजकुमारी ने यह समझा कि इतने बड़े राजमहल में शायद यह रास्ता भूल गया है, पर ग़रीब नौजवान भी अंगूर की बेल देखने ही जा रहा था। जब दोनों साथ ही साथ बेलों के पास पहुँचे तो उन्होंनें ने देखा कि एक बेल में बड़ा सुन्दर अंगूर लगा है। जब राजकुमारी ने यह देखा कि यह वही बेल थी जिस पर उस नौजवान का नाम लिखा था, तो वह इतनी खुश हुई कि तालियाँ पीटने लगी। नौजवान भी आनन्द से चिल्ला पड़ा। दोनों मिल कर राजा के पास पहुँचे। राजा इस बात पर बहुत खुश नहीं हुआ क्योंकि राजा का यह कहना था कि इतने ग़रीब नौजवान के साथ राजकुमारी का ब्याह हो नहीं सकता। पर वादा तो किया जा चुका था। पीछे लौटने का कोई रास्ता नहीं था। शादी हो गई और उसके बाद वह नौजवान अपनी दुलहिन को जंगल के अन्दर एक छोटे से मकान में ले गया। यह मकान उसे परी से मिला था। इसी छोटे-से मकान में वे लोग खुशी के साथ रहने लगे।

एक साल के अन्त में परी यह देखने के लिए निकली कि तीनों भाई किस प्रकार जीवन बिता रहे हैं। पहले वह बड़े भाई के पास गई। वहाँ उसने भिखमंगिन का रूप धर कर उससे एक प्याला शर्बत माँगा। जिन दिनों वह ग़रीब था, उन दिनों उसने भिखमंगिन को अपना सर्वस्व दे दिया था, पर अब जबकि उसके पास धन ही धन था तो एक प्याला शर्बत भी नहीं दिया! वह बोला—"इसी तरह मैं हर एक को शर्बत दिया करूँ, तो बस हो चुका। फिर तो मैं इसी काम भर का रह जाऊँगा। "परी लौट गई, और उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठ फेरते ही वह नदी शर्बत की नदी से बदल कर फिर से पानी की बन गई। बड़े भाई ने देखा कि उस पर क्या विपत्ति आई है, और वह परी की खुशामद करने लगा, पर परी ने सिर हिलाते हुए कहा—"जो जिस चीज़ के योग्य नहीं है, उसे वह चीज़ नहीं मिलनी चाहिए।"

अब परी मंझले भाई के पास पहुँची। वहाँ उसने खाना माँगा। इस पर मंझला भाई बोला—"मैं कभी भी मुफ़्त में कुछ नहीं देता। मेरी समझ में ऐसे देने का अर्थ है आलस्य को प्रोत्साहन देना।"

उसका ऐसा कहना था कि वह सारी खेती और भेड़ें सब वहाँ से गायब हो गईं। सामने एक उजड़ा हुआ मैदान दिखाई दिया जिसमें फ़ाख़्ताएं चर रही थीं। तब परी बोली—"जाकर उस नाशपाती के पेड़ के नीचे बैठो, और वहाँ पर बैठकर अपनी ग़लती पर गौर करो। याद रखो कि भगवान् ने यदि तुम्हें किसी योग्य बनाया है तो दूसरों की मदद करने से पीछे मत हटो।"

अब परी तीसरे भाई के यहाँ पहुँची। जिस समय वह उसके यहाँ पहुँची, उस समय छोटा भाई अपनी दुलहिन के साथ खाना खा रहा था। भिखमंगिन को सामने देखते ही उसे अपने पहले दिन याद आ गये और बिना कुछ कहे उसने कहा—"आओ, भीतर आओ, और हमारे साथ खाना खाओ।"

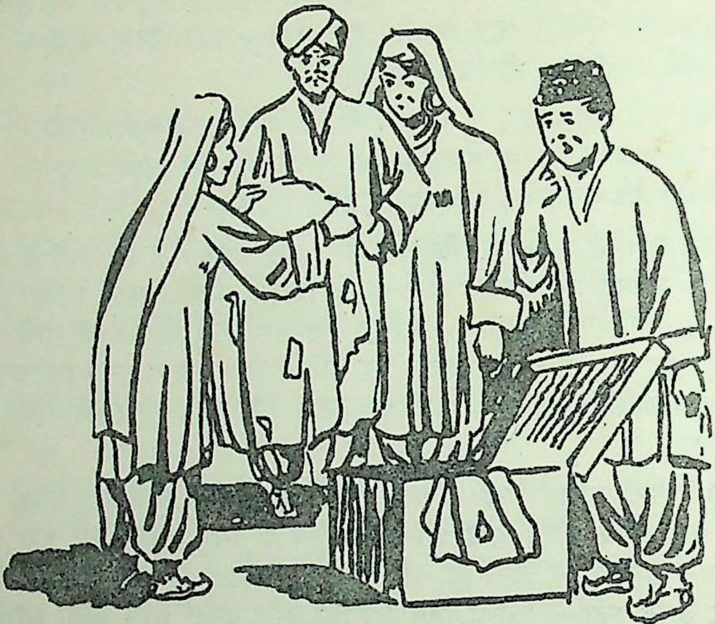
लेकिन परी ने जो दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि वहाँ रोटियाँ खत्म हो चुकी थीं, पर राजकुमारी बोली—"मैं अभी और रोटी पका कर लाती हूँ। आप तब तक बैठ कर सुस्तायें। जो कुछ रूखा-सूखा घर में है मैं जल्द ही तैयार करके लाती हूँ।"

राजकुमारी रोटी बनाने जुट गई और थोड़ी ही देर में रोटियाँ तैयार हो गईं। परी को भरपेट खाना खिलाया गया और इसके बाद जब वह जाने लगी तो राजकुमारी ने बड़े प्रेम से कहा—"माता जी, आज रात को आप इधर ही ठहर जायें।" इस पर परी ने अपनी जादू की लकड़ी घुमाई, और चारों तरफ बड़े ज़ोर शोर से गर्जन सुनाई पड़ने लगी। डर कर छोटे भाई तथा राजकुमारी ने आँखें बन्द कर लीं और वह ज़मीन पर लेट गये। जब शोर बन्द हुआ, और उन्होंने आँखें खोलीं, तो देखा कि वह छोटा मकान उड़ गया और उसकी जगह पर एक बड़ा भारी राजमहल खड़ा है। राजमहल इतना बड़ा था कि राजकुमारी के पिता के पास भी इतना बड़ा राजमहल नहीं था। अब वे उसी में चैन-सुख से रहने लगे, और वर्षों तक लोगों की भलाई करते रहे।

12—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसकी पत्नी ने सन्दूक का ढक्कन खोल कर वह कपड़े निकाल कर उसे दिखाये, पर मुंह से कुछ न कहा ।

लुहार की लड़की

नन्दलाल बत्ता

श्रीनगर में एक धनाढ्य सौदागर रहता था । उसके पास हर प्रकार के सुख की सामग्री थी, परन्तु उसे एक बात का बड़ा दु:ख था कि उसका एक ही पुत्र था, और वह भी महा मूर्ख । सौदागर यह सोच-सोच कर कि उसका नालायक बेटा उसके कमाये हुए धन का नाश करेगा, अत्यन्त चिन्तित रहता था । परन्तु सौदागर की पत्नी कुछ और ही सोचती थी । उसका ख्याल था कि उसका नालायक बेटा सुयोग्य पत्नी पाकर मूर्ख नहीं रह पायेगा । इस लिये वह प्रतिदिन अपने पति, सौदागर से कहती—"बेटा बड़ा हो गया है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका विवाह करना चाहिए जिससे हम भी घर में एक बहू लाकर अपने जीवन के शेष दिन सुख में बिता सकें ।"

सौदागर उत्तर में कहता—"विवाह करना तो ठीक है। पर क्यों किसी अबला को इस मूर्ख के पल्ले बाँधने को कहती हो। उस बेचारी का जीवन नष्ट हो जायेगा। बेटा सुधर नहीं सकता। मूर्ख है ही, और मूर्ख रहेगा भी। हमारा नाम डुबायेगा, इसलिए मुझ से इस बारे में कुछ भी न कहा करो।"

परन्तु पत्नी के बार-बार अनुरोध करने पर वह एक दिन राज़ी हो गया। पर एक शर्त तय हुई। वह यह थी कि सौदागर मूर्ख बेटे को एक बार फिर से आज़मायें। पत्नी ने यह शर्त स्वीकार कर ली।

सौदागर ने दूसरे दिन अपने पुत्र को पास बुला कर कहा—"बेटा यह लो तीन पैसे। इनको लेकर बाज़ार जाओ। एक पैसे में अपने लिए कुछ चबेना लो। दूसरे को पानी में डाल दो। तीसरे पैसे से पांच चीज़ें मोल लो, कुछ खाने की, कुछ पीने की, कुछ चबाने की, कुछ बाग में बोने की और कुछ गाय को खिलाने के लिए।"

सौदागर-पुत्र तीन पैसे लेकर बाज़ार गया। पहले पैसे में अपने लिए कुछ खाने की चीज़ें लीं, और नदी की ओर चला। नदी पर पहुँच कर वह सोचने लगा कि पैसा तो काम की चीज़ है, मैं इसे नदी में क्यों फैंक दूँ, पर पिता की आज्ञा को भी तो मानना ही है। यह सोचते सोचते उसने न तो नदी में पैसा फेंका, और न यह सोच सका कि क्या किया जाय। वह वहीं नदी किनारे बुत की तरह खड़ा हो गया। इतने में वहाँ एक नवयुवती आई। उसने जब सौदागर-पुत्र को इस प्रकार देखा, तो पास आकर बोली—"आप क्या सोच रहे हैं ?"

सौदागर-पुत्र ने सारी बात कह सुनाई तो वह बोली—"पैसा नदी में फैंकना मूर्खता है। यह तो पास रखने की चीज़ है, और एक पैसे में पांच चीज़ें मोल लेने से तुम्हारे पिता का अर्थ है कि तुम एक तरबूज मोल ले लो। उसमें ही पांचों चीज़ें हैं।"

यह नवयुवती वहाँ के लुहार की बुद्धिमान बेटी थी। सौदागर-पुत्र ने उसकी बात मान ली। वह बाज़ार से एक तरबूज़ मोल लेकर गया, और उसे अपने पिता के सामने रखा। उसका पिता यह देख हैरान हुआ कि उसका मूर्ख पुत्र एकदम बुद्धिमान कैसे हो गया। इस पर उसने उससे पूछा—"बेटा, सच बताओ तुम्हें यह वस्तु मोल लेने में किसने मदद दी ? यह तो तुम्हारी बुद्धि से बाहर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे ने झट से सारी बात कह दी। सौदागर ने लुहार की लड़की की बुद्धिमत्ता की दाद दी और मन में निश्चय कर लिया कि यदि बेटे का विवाह करना ही है, तो इसी लड़की से होना चाहिये। उसने यह बात अपनी पत्नी से भी कह दी। उसे भी यह बात बहुत पसन्द आई।

दिन बीतते गये। एक दिन सौदागर लुहार के घर इस ख्याल से गया कि उसकी लड़की से बेटे के विवाह की बात पक्की कर दे। परन्तु उस समय न तो लुहार ही घर में मौजूद था, और न उसकी पत्नी ही। लुहार की बेटी ने धनवान् मेहमान को सादर आसन दिया, और चाय बनाई। सौदागर ने चाय का प्याला पीते हुए कहा—"बेटी तुम्हारे माता-पिता कहाँ गये हैं ?"

चतुर बालिका ने कहा—"मेरे पिता जी तो बाज़ार एक कौड़ी का हीरा मोल लाने और माता जी एक के घर कुछ बातें बेचने गई हैं।"

सौदागर ने लाख कोशिश की कि इस बात को समझ लें, पर समझ न सका। सो उसने फिर कहा—"बेटी, मैं तुम्हारी बातें नहीं समझ सका, कृपा करके मुझे समझा दो।"

यह सुन वह बोली—"मेरे पिता जी तो दीवे के लिए एक कौड़ी का तेल लाने गये हैं। मेरी माता जी किसी का विवाह निश्चित करने के लिए गई हैं। यही इसका अर्थ है।"

इतनी देर में लुहार और उसकी पत्नी भी आ गई। सौदागर ने उनको अपने आने का कारण कह सुनाया। वह इस बात को मान गये और मूर्ख सौदागर-पुत्र का विवाह चतुर लुहार-पुत्री से होना पक्का हो गया।

दूसरे दिन ही सारे शहर में यह खबर फैल गई कि सौदागर अपने पुत्र का विवाह एक लुहार की पुत्री से करने जा रहा है। शहर में तरह-तरह की बातें होने लगीं। बहुत से दुष्टों को जलन भी हुई कि एक ग़रीब बाप की बेटी बड़े सौदागर की बहू हो जायेगी। वह इसको सहन न कर सके और एक दिन सौदागर-पुत्र से जाकर बोले—"देखो जी तुम अमीर हो। इस पत्नी से, जो कि तुम जानते हो ग़रीब बाप की बेटी है, तुम दुःख पाओगे। इसलिए उसे काबू में रखने के लिए उसकी प्रतिरात जूतों से मरम्मत करते रहना, नहीं तो अन्त में वह सिर पर सवार हो जायेगी।" मित्रों की यह बात उस मूर्ख ने मान ली।

जब इस बात का पता लुहार को चला तो उसने अपनी पुत्री को इस बात पर मजबूर करना चाहा कि वह ऐसे मूर्ख से विवाह न करे। पर उसने कहा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं विवाह करूँगी और इसी सौदागर-पुत्र से ही करूँगी।" फिर समझा कर बोली—

"आप कोई चिन्ता न करें, वह जो कुछ कहता है, वैसा कभी नहीं होगा और मैं अपनी बुद्धि से सब के जीवन को सुखी बना लूँगी।"

कुछ दिनों बाद बड़ी धूम-धाम के साथ उनका विवाह रचा गया। पहली रात को ही मूर्ख सौदागर-पुत्र ने अपने दुष्ट मित्रों की शिक्षा पर चलने के इरादे से जूता उठा लिया और यह सोचकर कि उसकी पत्नी सोई हुई है, उसने उसको जूता से मारने की कोशिश की पर उसने हाथ पकड़ते हुए कहा—"देवता, सुहागरात को ऐसा नहीं होना चाहिए, यह बुरी बात है।"

उसका पति, सौदागर-पुत्र, मान गया। इस प्रकार वह प्रति रात उसको कुछ न कुछ कह कर टालती रही। सात दिन के बाद बहू अपने मैके चली गई। यार लोगों को जब सौदागर-पुत्र से पता चला कि उसने उनके कहने पर अमल नहीं किया है तो बोले—"तुम तो डरपोक ही निकले। अब देखना तुम्हारी बीबी तुमको कैसा नाच नचायेगी।"

बहू तो मैके गई, और इधर सौदागर ने अपने पुत्र को बहुत सा धन, माल, नौकर-चाकर, सवारी इत्यादि देकर बाहर के देश में व्यापार करने को भेजा। सौदागर का विचार था कि इससे उसका पुत्र कुछ तजर्बा प्राप्त करेगा। सौदागर-पुत्र विदेश जाते हुए एक दिन शहर में पहुँचा। वहाँ उसने एक विशाल महल की एक खिड़की से एक सुन्दर युवती को झाँकते हुए देखा। महल के चारों ओर एक ऊँची दीवार थी और इसके चारों ओर सेव, नाशपाती और बादामों का एक बड़ा बाग था। उस सुन्दर स्त्री ने सौदागर-पुत्र को महल में आने का संकेत किया। सौदागर-पुत्र महल के अन्दर अपने सब नौकर-चाकर और माल इत्यादि लेकर गया। कुछ मीठी-मीठी बातें करने के बाद युवती ने उसे नर्द (काशमीर में एक विशेष प्रकार का शतरंज) खेलने को कहा। उसने खेलना स्वीकार कर लिया। पर सौदागर-पुत्र नर्द खेलना तो जानता ही न था, और वह युवती इसमें सिद्धहस्त थी। कुछ ही खेलों के बाद सौदागर-पुत्र अपना सब कुछ और अपने आप को भी हार गया। उस युवती ने उसका माल-दौलत अपने कोष में जमा करवाया और उसको उसके नौकरों सहित जेल में बन्द कर दिया। जेल में उसके साथ बुरा व्यवहार होने लगा और वह बहुत दुबला हो गया।

जेल के सीखचों में से उसने एक दिन एक राह चलते से विनय की कि वह उसकी बात सुन ले। पथिक के यह कहने पर कि वह श्रीनगर का रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वाला, सौदागर-पुत्र ने उसको पत्र ले जाने को कहा। पथिक ने उस पर दया करके उसको कलम, दवात और कागज़ लाकर दिया, और उसने दो पत्र लिख कर उसको दिये। एक पत्र तो उसने अपने पिता को लिखा, जिसमें उसने सब हाल सच-सच लिख दिया और दूसरा अपनी पत्नी के लिए, जिसमें उसने लिखा, "मैं अब बहुत धनवान् हो गया हूँ और अब जल्दी आकर तुम्हें खूब जूते मारूँगा।" पथिक दोनों पत्र लेकर विदा हुआ।

वह बेचारा अनपढ़ था। शहर में आकर उसने पिता के नाम का पत्र लुहार की लड़की को दिया और उसका पत्र सौदागर को। लुहार की लड़की ने पत्र देखा तो बहुत दुखित हुई, और झट सौदागर के पास गई। उसने भी अपना पत्र दिखाया। योग्य बहू ने सौदागर से माल-दौलत माँग कर उसी प्रकार शहर से विदेश के लिए प्रस्थान किया और अपना रूप एक सौदागर का बना कर वह भी उसी महल के पास आई। महल में जाकर उसने उस स्त्री को नर्द खेलने के लिए ललकारा। युवती ने नौकरों को प्रलोभन देकर उसने अपने पक्ष में पहले ही कर लिया और उस युवती के हर बार जीतने का भेद भी जान लिया। दूसरे दिन उसने नर्द की सब बाज़ियाँ जीत कर उस युवती तक को जीत लिया और उसको अपना कैदी बनाया। उसी क्षण उसने अपने पति को जेल से बाहर निकाल कर और उसके कपड़े बदलवाये। पर वह उसे न पहचान सका।

अगले दिन लुहार-पुत्री ने अपने शहर के लिए प्रस्थान किया। उस हारी हुई युवती का सब माल भी ऊँटों और घोड़ों पर लाद लिया और अपने पति के जेल की पोशाक को एक सन्दूक में बन्द करवा कर उसको अपने पास ही रख लिया। शहर के बाहर पहुँचते ही उसने अपने पति को सब माल लेकर घर जाने को कहा और बोली—"आप घर जाइये और मैं भी जल्दी ही आपसे मिलने आती हूँ।"

घर लौटने पर सौदागर-पुत्र का स्वागत बहुत अच्छी तरह हुआ। उसके माता-पिता के सुख का अन्त न रहा। कुछ समय के बाद उसकी पत्नी भी वहाँ आई। मूर्ख सौदागर-पुत्र यह सोचकर कि वह अब बहुत मालदार है एकदम से उठा, अपने पाँव से जूता उतारा और अपनी पत्नी को पीटने पर उतारू हुआ। उसकी पत्नी ने उसके जेल की निशानी, कपड़ों का सन्दूक, जो साथ लाई थी, मँगवाई। उसने उसका ढक्कन खोलकर वह कपड़े निकाल कर उसको दिखाये पर मुँह से कुछ न कहा। सौदागर-पुत्र यह देखकर हैरान हुआ और सब बात समझ गया कि उसको छुड़ाने वाला उसकी बुद्धिमती पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सिवा और कोई नहीं था। वह बड़ा लज्जित हुआ, और उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई और उससे माफ़ी माँग ली। इसके बाद वह दोनों सुख से जीवन बिताने लगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देखने वाले भी अधड़े को देख कर तरस खाते, पर सब भाई उसकी हंसी उड़ाते और नौकर-चाकर अकेले में चिढ़ाते।

लोककथा के आधार पर

अधड़ा

श्रीमती शान्ति गुप्ता

एक देश में एक राजा रहता था। उसके सात बेटे थे। उनमें से छः बेटे लम्बे-चौड़े और खूब हृष्ट-पुष्ट थे। लेकिन सबसे छोटा बेटा आधे शरीर का था। उसके एक हाथ था, एक पैर, एक आँख, एक कान, आधी नाक, और आधा सिर था। इसलिये सब उसे अधड़ा कह कर पुकारते थे। अधड़ा कद का छोटा था। उसकी आँख बिलकुल छोटी-सी थी। जब वह कोई चीज़ देखता, तो अपनी आँख जल्दी-जल्दी घुमाता। उसका कान भी छोटा सा था, जब वह कुछ सुनने की कोशिश करता तो कान पर हाथ लगा लिया करता। ये सब तो था ही, उसकी चाल सबसे बढ़िया थी। एक टाँग से मुर्गे की तरह अकड़-अकड़ कर चलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधड़े की माँ उसे अपाहिज जान कर उसका सबसे अधिक ध्यान रखती। उसका लाड़-प्यार अधड़े पर ही रहता। देखने वाले भी अधड़े को देखकर तरस खाते, पर सब भाई उसकी हँसी उड़ाते और नौकर-चाकर अकेले में चिढ़ाते। अधड़ा उन सब की शिकायत माँ से करता, तो उन्हें खूब डाँट पड़ती। लाड़-प्यार से धीरे-धीरे अधड़े का स्वभाव बिगड़ गया। वह सबसे अकड़ कर बोलता, कभी किसी की सहायता न करता और न किसी के दुःख-दर्द के काम आता। वह घंमडी भी हो गया, और अपने आप को बहुत चतुर समझने लगा।

धीरे-धीरे अधड़ा बड़ा हुआ। अब उसे दुनियाँ देखने की इच्छा हुई। उसने अपनी इच्छा माँ से कही। माँ ने उसको बहुत समझाया कि बाहर जाकर बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। और तिस पर वह तो अधड़ा था, कहीं मुसीबत में पड़ जाय, तो बचना भी मुश्किल। माँ के बहुत मना करने पर भी भला अधड़ा कहाँ रुकने वाला था। उसकी तो आदत थी कि जब कभी कोई धुन समा जाती, तो अवश्य उस काम को करके छोड़ता। जब अधड़ा किसी तरह नहीं माना तो माँ ने उसके साथ कुछ जरूरी सामान रख दिया और चलते वक्त बोली—"बेटा एक बात याद रखना—जो कोई तुमसे सहायता माँगे, उसकी सहायता अवश्य करना और सबसे नरमी का बर्ताव करना। जाओ, भगवान् तुम्हारी रक्षा करे।" माँ की बात सुनकर अधड़ा घर से चल दिया।

अपने शहर से निकल कर अधड़ा एक जंगल में आ पहुँचा। वहाँ एक पेड़ की छाया में बैठकर सुस्ताने लगा। इतने में उसे कहीं से एक नन्हीं-सी आवाज़ सुनाई दी—'मेरी सहायता करो।' अधड़े ने अपनी छोटी-सी आँख घुमा-घुमा कर चारों ओर देखा और कान लगा कर सुना। यह आवाज़ पास बहते हुए झरने में से आ रही थी। झरना अधड़े से प्रार्थना करने लगा, बोला "महाशय, घास और पत्तियों ने अटक कर मेरा रास्ता रोक दिया है। मैं आगे बह नहीं सकता, दया करके मेरा रास्ता साफ़ कर दीजिये।"

अधड़ा अकड़ कर बोला—"हूँ, मैं कोई भंगी जमादार हूँ, जो तुम्हारा कूड़ा-करकट निकालूँ। सड़ते रहो, वहीं पड़े। मुझे बहुत दूर जाना है।" यह कह कर वह अकड़ कर चल दिया।"

आगे चल कर रास्ते में राख का ढेर मिला। अधड़े को एक नन्हीं-सी आवाज़ सुनाई दी—"मेरी सहायता करो।" अधड़े ने अपनी छोटी-सी आँख घुमा-घुमा कर चारों तरफ़ देखा और कान लगाकर सुना। यह आवाज़

13-6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राख के ढेर में से आ रही थी। राख के ढेर में भी दबी हुई आग अधड़े से प्रार्थना करने लगी, बोली—"महाशय मेरे ऊपर थोड़ी-सी घास-फूंस डाल दीजिए। मैं बुझी जा रही हूँ। मेरी सहायता करिये।"



झरना अधड़े से प्रार्थना करने लगा,—"महाशय, घास और पत्तियों ने अटक कर मेरा रास्ता रोक दिया है। मैं आगे बह नहीं सकता, दया करके मेरा रास्ता साफ कर दीजिये।"

यह सुन कर अधड़ा अकड़ कर बोला—"मैं कोई भाड़ झोकने वाला हूँ, जो तुम्हारे ऊपर घास-फूंस डालूँ। पड़ी बुझती रहो। मुझे बहुत दूर जाना है।" यह कह कर मुर्गे की तरह अकड़ कर वह आगे बढ़ा।

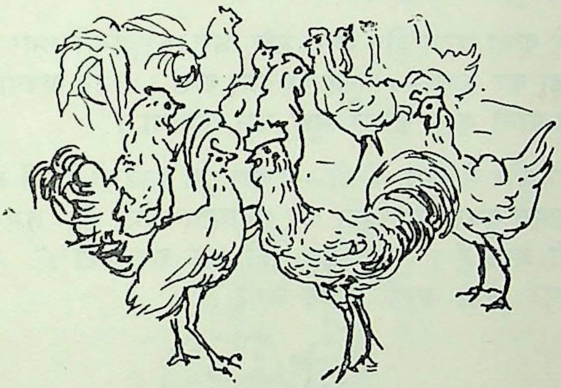
चलते-चलते कुछ झाड़ियाँ मिलीं। अधड़े को फिर एक नन्हीं-सी आवाज़ आई—"मेरी सहायता करो।" उसने अपनी छोटी-सी आँख घुमा-घुमा कर चारों तरफ़ देखा और कान लगा कर सुना। झाड़ियों में से हवा अधड़े से गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करने लगी, बोली—"महाशय, कृपा करके मुझे इन झाड़ियों में से निकाल दीजिये, मैं यहाँ फँसी पड़ी हूँ। यहाँ से छुटकारा पाऊँ तो आसमान की सैर करूँ।"

अधड़े ने अकड़ कर कहा—"मैं कोई धौंकनी हूँ, जो तुम्हें फूँक मार कर वहाँ से छुड़ा दूँ। वहीं बँधी पड़ी रहो, मुझे बहुत दूर जाना है।" यह कह कर अधड़ा मुर्गे की तरह अकड़ता हुआ फिर आगे को बढ़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल पार करके अधड़ा एक शहर में आ पहुँचा। शहर में वह जहाँ भी जाता, उसे सब आँख फाड़-फाड़ कर देखते। एक-दूसरा अधड़े को दिखा कर कहता—"अरे देख! क्या अजब जानवर है! हमने तो आज तक कभी ऐसा देखा ही नहीं। न जाने कौन से देश से आया है।" और जब अधड़ा अकड़ कर आगे बढ़ जाता, तो लोग खूब हँसते, बच्चे तालियाँ पीटते। वह किसी की परवाह न करता हुआ सारे शहर में घूम आया। वहाँ उसे कहीं ठहरने की जगह न मिली। थक कर एक पेड़ के नीचे सो गया। जाड़े का मौसम था, और उसके पास ओढ़ने लायक कोई कपड़ा भी नहीं था। रात



बेवक्त की बांग सुन कर सब मुर्गे-मुर्गी उसकी तरफ देखने लगे और घेर कर खड़े हो गये। अधड़े ने सबको अपने चारों ओर देखा तो शान के मारे अकड़ गया।

को उसे सपने में झाड़ियों में फँसी हुई हवा दिखाई दी। वह कह रही थी—"उस दिन तुमने मेरी सहायता नहीं की। अब मेरी ताकत देखना।" रात भर ठंडी हवा चलती रही और अधड़ा वहीं पड़ा हुआ हवा के थपेड़े खाता रहा। वह जाड़े के मारे मुर्गा बना पड़ा रहा। सूरज निकलने पर वह जागा तो उसने अपने को सचमुच का मुर्गा बना पाया। अधड़ा मुर्गा होकर भी आधा ही रहा। वही एक आँख, आधा सिर, आधा पेट और एक टांग। बेचारा बड़ा दुःखी हुआ।

फुदकता-फुदकता शहर की तरफ़ दाने की तलाश मे निकला। चलता चलता राजा के मुर्गीखाने में जा पहुँचा और लगा ज़ोर से बांग लगाने। बेवक्त की बांग सुनकर सब मुर्गे-मुर्गी उसकी तरफ़ देखने लगे और घेर कर खड़े हो गये। अधड़े ने उसको अपने चारों ओर देखा तो शान के मारे अकड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कुड़क-कुड़क करता हुआ दाना चुगने लगा। इतने में राजा का रसोइया मुर्गी लेने आया। उसकी निगाह अधड़े पर पड़ी। बस उसने उसे टांग पकड़ कर उठा लिया और रसोई में ले जा कर पानी के बर्तन में डाल दिया। बर्तन आग पर रख दिया। अधड़ा पानी से गिड़गिड़ा कर कहने लगा—"मुझे दया करके बाहर निकाल दो, नहीं तो मैं मर जाऊँगा।" पानी हँस कर बोला—"क्या तुम घास और पत्तियों से अटके हुए पानी के झरने को भूल गये? मैं वही हूँ। तुमने मेरी जैसी मदद की थी, वैसे ही मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" अधड़ा अपना सा मुँह लेकर रह गया।

धीरे-धीरे पानी गरम होने लगा और अधड़ा झुलसने लगा। तब वह आग से गिड़गिड़ा कर बोला—"मुझ पर दया करो। तुम अपनी लपटें नीची रक्खो, नहीं तो पानी गरम होकर मुझे मार डालेगा।"

आग बड़ी ज़ोर से हँसी, बोली—"क्या तुम राख के ढेर में दबी आग को भूल गये, जब उसने तुमसे गिड़गिड़ा कर सहायता माँगी थी, तुमने कुछ किया था? मैं वही आग हूँ। अब तुम यहीं जल कर मरो।" यह कह कर आग अपनी लपटें ऊँची करके जलने लगी।



लोग कहते हैं कि वह हवा की दिशा बताने वाला यंत्र है।

अब तो अधड़े की जान पर बन आई। उसने बहुत हाथ-पैर मारे और बर्तन का ढकना हटा लिया, फुदक कर बाहर आया और खिड़की में जा बैठा। इतने ही में बड़े जोर की हवा चली और गीले अधड़े को ऊपर उड़ा कर ले गई। अधड़ा नीचे आने की कोशिश करता और हवा उसे ऊपर उठाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुई उसे आसमान में बहुत उँचाई पर ले गई और वहाँ से उसे एक दम नीचे पटक दिया। अधड़ा एक ऊँचे बुर्ज पर लगी हुई लोहे की कील पर आकर अटक गया। वहाँ से वह लाख कोशिश करने पर भी अपने को न छुड़ा सका और अब वह वहाँ पर अभी तक अटका हुआ है। हवा उसे खूब नचाया करती है।

लोग कहते हैं कि वह हवा की दिशा बताने वाला यन्त्र है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसी लच्छी

हंसराज रहबर

किसी गाँव में एक लड़की रहती थी, जिसका नाम था लच्छी । एक दिन वह अपनी सखियों के साथ कुएँ पर पानी भरने गई। वहाँ सब लड़कियाँ अपने सगाई-ब्याह की बातें कर रही थीं । एक सहेली जिसका नाम बनतो था, बोली—"मेरे पिता ने मेरे ब्याह के लिए कीमती वस्त्र खरीद रखे हैं ।"

दूसरी ने कहा—"मेरे लिए ससुराल में मखमल की सुन्दर वरी (दुलहन के ब्याह के वस्त्र) तैयार हो रही है ।" यों सब लड़कियाँ बातें कर रही थीं । कोई अपने भाई की बात कहती थी और कोई मामू की ।

लच्छो बेचारी सखियों की बातें चुपचाप सुन रही थी । उसके पास कहने को कोई बात नहीं थी । बहुत दिन हुए उसके माता-पिता मर चुके थे और वे उसके लिए कोई धन-दौलत भी नहीं छोड़ गये थे । कोई दूसरा सगा-सम्बन्धी भी नहीं था, जिसका सहारा लेती । बेचारी अकेली थी और ग़रीबी में दिन काट रही थी । उसके ब्याह का प्रबन्ध कौन करता । लेकिन जी चाहता था कि वह भी सखियों की बातचीत में हिस्सा ले, इसलिए उसने यों ही एक बात बनाई और कहा—"मेरा चाचा भी परदेश से आ रहा है, वह मेरे लिए बहुत से ज़ेवर, गहने और कीमती कपड़े लायेगा ।"

एक बिसाती, जो गाँव में अपना सामान बेचने आया था, कहीं पास ही बैठा लड़कियों की ये बातें सुन रहा था । वह बिसाती एक चालाक ठग था और सामान बेचने के बहाने लोगों के भेद मालूम किया करता था । जब उसका दाँव लगता था, लोगों को लूट लेता था ।

लच्छो की बात सुनकर वह मन ही मन प्रसन्न हुआ और दूसरे दिन भेस बदल कर उसके घर चला गया । वह अपने साथ कीमती वस्त्र और भूषण भी लाया था । उसने लच्छो से कहा—"मैं तुम्हारा चाचा हूँ । कई साल परदेश में रहकर बहुत सा धन कमाकर लौटा हूँ । मैं तुम्हारा ब्याह अपने एक धनी मित्र के बेटे से करना चाहता हूँ ।" लच्छो भोली-भाली सरल स्वभाव की लड़की थी । उसने ठग की बातों का सहज में विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया। उसने घर का सारा सामान बांधा और ठग के साथ चल पड़ी। जब वे दोनों ठग के घर की ओर चले जा रहे थे, एक चिड़िया ने चीं-चीं करते हुए कहा :

'वाह नी लच्छो, अक्लों घुत्थी
ठग नाल ठगी गई।'

(वाहरी लच्छो, तेरी अक्ल कहाँ खो गई जो तू एक ठग से ठगी गई।)



चिड़िया ने चीं-चीं करते हुए कहा: "वाह नी लच्छो, अक्लों घुत्थी, ठग नाल ठगी गई।"

लच्छो पक्षियों की भाषा समझती थी। उसने अपने चाचा से पूछा—"यह चिड़िया क्या कह रही है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठग ने उत्तर दिया—"चीं-चीं करना और शोर मचाना इन चिड़ियों की आदत है। हमें इससे क्या मतलब ?" थोड़ी दूर आगे बढ़े तो उन्हें एक मोर मिला, उसने भी वही बात कही।

फिर एक गीदड़ मिला, उसने भी यही बात दोहराई। लच्छो के पूछने पर ठग हर बार कह देता था कि शोर मचाना इन पशुओं और पक्षियों की आदत है, हमें इससे क्या मतलब ?

वह ठग लच्छो को साथ लिए अपने घर पहुँचा और घर पहुँचते उसने सारा भेद अपने आप खोल दिया और लच्छो से कहा—"मैं तुम्हारा चचा या कोई दूसरा सगा-सम्बन्धी नहीं हूँ। मैं तो तुम्हारी सुन्दरता पर मुग्ध हूँ और तुम्हारे साथ ब्याह करने के लिए तुम्हें यहाँ लाया हूँ।"

लच्छो सुन कर बहुत रोई लेकिन अब क्या हो सकता था। उसके लिए अब वहाँ से भाग जाना भी सम्भव नहीं था। उसे मार्ग के पशु-पक्षियों की बातें याद आईं और यह अफसोस हुआ कि उसने उस पर ध्यान क्यों नहीं दिया। वह वाकई ठग से ठगी गई थी।

ठग जब चोरी और ठगई के लिए बाहर जाता तो लच्छो को अपनी माँ के सुपुर्द कर जाता कि वह उस पर कड़ी निगरानी रखे और उसे कहीं बाहर न जाने दें। ठग की माँ बहुत बूढ़ी थी। उसके मुख पर झुर्रियाँ थीं, गालों का माँस लटक गया था और सिर गंजा था।

लच्छो के बाल बहुत लम्बे थे—काले और सुन्दर। नागिन की तरह लहराते हुए। बुढ़िया को लच्छो के यह बाल बहुत पसन्द थे। एक दिन जब उसका बेटा ठग घर से बाहर गया हुआ था तो उसने लच्छो से पूछा—"तुम्हें यह सुन्दर बाल कहाँ से मिले हैं ?"

लच्छो ने एकदम बात बनाई, बोली—"यह सब मेरी माँ की कृपा है। उसने एक दिन मेरा सिर ओखली में रखकर ऊपर से मूसल मारे। जैसे-जैसे मूसल पड़ते थे, मेरे बाल लम्बे होते जाते थे। हमारे गाँव में बाल बढ़ाने का यह पुराना रिवाज है।"

बुढ़िया बोली—"मेरा सिर तो गंजा है। ओखली में सिर देकर और ऊपर से मूसल मार कर क्या मेरे बाल भी लम्बे हो जायेंगे ?"

लच्छो ने झट उत्तर दिया—"क्यों नहीं ? ज़रूर हो जायेंगे।"

बुढ़िया बाल उगाने की खुशी में ओखली में सिर देने के लिए तैयार हो गई। दूसरे दिन ठग जब काम से बाहर गया, बुढ़िया ने लच्छो से अपने बाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ाने को कहा। लच्छो ने ओखली में उसका सिर रखकर ऊपर से धड़ाधड़ मूसल मारना शुरू किया। मूसल की चोटों के नीचे बुढ़िया तड़पने लगी, और पांच-सात चोटों ही से वह मर गई। लच्छो ने बुढ़िया को विवाह के वस्त्र पहनाये और घूँघट निकाल कर दीवार के सहारे एक कोने में बिठा दिया। इसके बाद लच्छो नें घर का थोड़ा धन और सामान समेटा और वहाँ से भाग खड़ी हुई।

रास्ते में उसे ठग मिला। वह कहीं से चक्की के दो पाट चुरा कर लौट रहा था। लच्छो उसे देखते ही एक झाड़ी में छिप गई। ठग ने लच्छो को देख तो लिया, मगर पहचाना नहीं। वह समझा कि कोई औरत किसी काम से घर आई है और इस ख्याल से कि कहीं वह चोरी का माल देखकर शोर न मचादे, वह खुद छिपता हुआ अपनी राह चलता रहा। जब वह बहुत दूर चला गया तो लच्छो झाड़ी की ओट से बाहर निकली और अपने गाँव को चल पड़ी।

ठग जब घर पहुँचा तो उसने लच्छो को आवाज़ दी। उसे कोई उत्तर नहीं मिला। जब बार-बार पुकारने पर लच्छो न बोली, तो उसे क्रोध आ गया, और उसने चक्की के पाट बुढ़िया के सिर पर दे मारे। वह नये वस्त्रों में बुढ़िया को लच्छो समझ रहा था। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि वह लच्छो नहीं उसकी माँ है तो वह फफक-फफक कर रोने लगा। उसने समझा कि उसकी माँ चक्की के पाटों ही से मरी है। ठग ने मन ही मन में निश्चय किया कि वह लच्छो को वापस लाकर ही दम लेगा।

लच्छो गाँव में लौट कर आई तो ठग के डर से अपनी एक सखी के घर रहने लगी। जब एक महीना इसी प्रकार बीत गया तो उसने सोचा कि ठग अब नहीं आयेगा तो वह अपने घर में रहने लगी। जब रात को सोती तो अपनी रक्षा के लिए एक तेज़ खंजर अपने सिरहाने रख लेती।

एक रात जब वह गहरी नींद में सोई पड़ी थी, ठग आया। उसके साथ तीन ठग और भी थे। उन्होंने सोई हुई लच्छो को चारपाई के साथ बांध दिया, और उठा कर चलते बने। लच्छो की आँख खुल गई थी, लेकिन वह चुपचाप लेटी रही। जब वह जंगल में पहुँचे तो लच्छो ने धीरे से खंजर निकाला और पिछले दो आदमियों के सिर काट डाले, और फिर तीसरे आदमी का भी सफाया कर दिया। लेकिन ठग जान बचाकर पेड़ पर चढ़ गया। लच्छो ने पेड़ को आग लगा दी। ठग उसके साथ ही जल कर राख का ढेर हो गया।

14-6 PD(L&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों लच्छो ने अपनी वीरता और साहस से ठग पर विजय पाई। वह उसके घर गई और उसका सारा धन और सामान छकड़े पर लाद कर अपने घर ले आई। आसपास के देहात में उसकी वीरता की चर्चा होने लगी। बहुत से नौजवान उसके साथ ब्याह करने को तैयार थे। लच्छो ने अपनी पसन्द के एक लड़के से ब्याह कर लिया और वे दोनों सुख और आनन्द से एक साथ रहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्म जामुन

टी० एन० एस० सीतारामन

बहुत दिनों की बात है तमिलनाड में एक बुढ़िया रहती थी। उसका नाम औवैयार था। वह बहुत सुन्दर कविता रचती थी। उसकी कविताओं से मुग्ध होकर बड़े-बड़े राजा लोग भी उसका आदर करते थे। राजदरबार में भी उसकी जोड़ का कोई दूसरा कवि न था। इस कारण उसे बहुत घमंड हो गया।

एक रोज वह कहीं जा रही थी। सड़क के किनारे जामुन के पेड़ थे। काले-काले जामुन पेड़ों की डालियों पर लटक रहे थे। जामुन को देख-कर औवैयार के मुँह में पानी भर आया। पर पेड़ बहुत ऊँचे थे। बेचारी बुढ़िया क्या कर सकती थी? बुढ़िया ने एक पेड़ के नीचे आकर ऊपर देखा। पेड़ के ऊपर एक चरवाहे का लड़का डाल पर बैठकर जामुन खा रहा था। लड़के को देख कर बुढ़िया ने उससे कहा, "बेटा, मैं भूखी हूँ, मुझे भी कुछ जामुन खिलाओ।"

यह सुन कर लड़के ने बुढ़िया से पूछा, "नानी, तुमको गरम-गरम जामुन चाहिएँ या ठंडे-ठंडे?"

यह सुन कर बुढ़िया पशोपेश में पड़ गई और उसने लड़के से पूछा, "बेटा, तुम पागल तो नहीं हो? कहीं जामुन भी गरम या ठंडे हो सकते हैं? नहीं, नहीं यह तुम्हारा भ्रम मात्र है।"

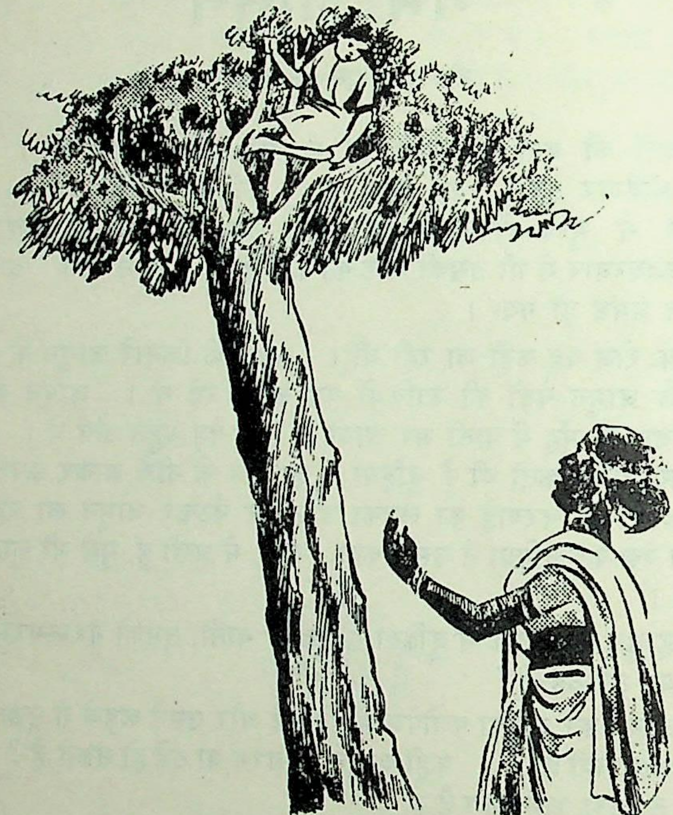
लड़के ने फिर कहा, "अजी औवैयार जी! आप तो विदुषी हैं, आपका नाम सुनते ही तमिलनाड में बड़े बड़े विद्वान लोग भी झुकते हैं। फिर यह छोटी सी बात भी आप नहीं समझती तो यह आपकी ही कमी है। मैं पागल थोड़े ही हूँ। अच्छा अब आप कहिये कि आप गरम-गरम जामुन खायेंगी या ठंडे-ठंडे।"

लड़के की बातें सुन कर औवैयार बिलकुल अचंभे में आ गई। उसकी समझ में यह नहीं आया कि जामुन गरम कैसे हो सकते हैं। फिर भी वह इस रहस्य को समझने के लिए आतुर थी। उसने लड़के से कहा, "बेटा, तुम मुझे गरम-गरम जामुन ही खिलाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का हंस कर बोला, "अच्छी बात है, बूढ़ी नानी, यह लो मैं तुमको गरम-गरम जामुन खिलाऊँगा।" यह कह कर लड़के ने एक डाल को ज़ोर से



यह सुन कर लड़के ने बुढ़िया से पूछा "नानी, तुमको गरम-गरम जामुन चाहिएं या ठंडे-ठंडे?"

हिलाया। खूब पक्के हुए काले-काले जामुन जमीन पर धूल में बिछ गये। बुढ़िया उन्हें उठा-उठा कर धूल फूँक-फूँक कर खाने लगी। यह देख कर लड़के ने पूछा, "क्यों नानी, जामुन तो काफ़ी गरम हैं न?"

औवैयार ने उत्तर दिया, "बेटा, कहाँ? ये तो ठंडे हैं।"

लड़के ने फिर पूछा—"अच्छा नानी, आप तो कहती हैं ये गरम नहीं हैं। फिर आप इन्हें फूँक-फूँक कर क्यों खा रही हैं?" कह कर लड़का हँस पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औवैयार नानी को अब अपनी भूल मालूम हुई और वह बहुत शर्मिन्दा भी हो गई। एक चरवाहे के लड़के के आगे वह हार गई थी। वह यों ही बिना बोले चलती बनी। लड़का खूब हँसता रहा।

औवैयार ने अपनी इस हार के बारे में कहा—

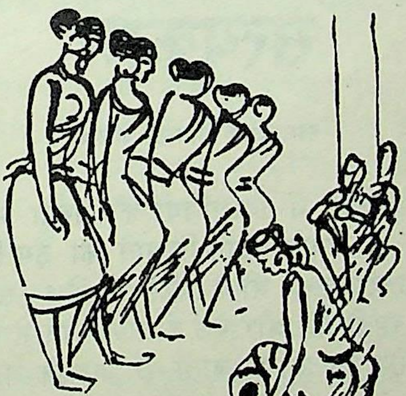
करूंगाली कट्टैक्कु नाणाक्कोडाली,

इरूंकदली तंडक्कु नाणुम-पेरूंगानिल।

कारेरूमै मेटंक्कुम कालैक्कुयान,

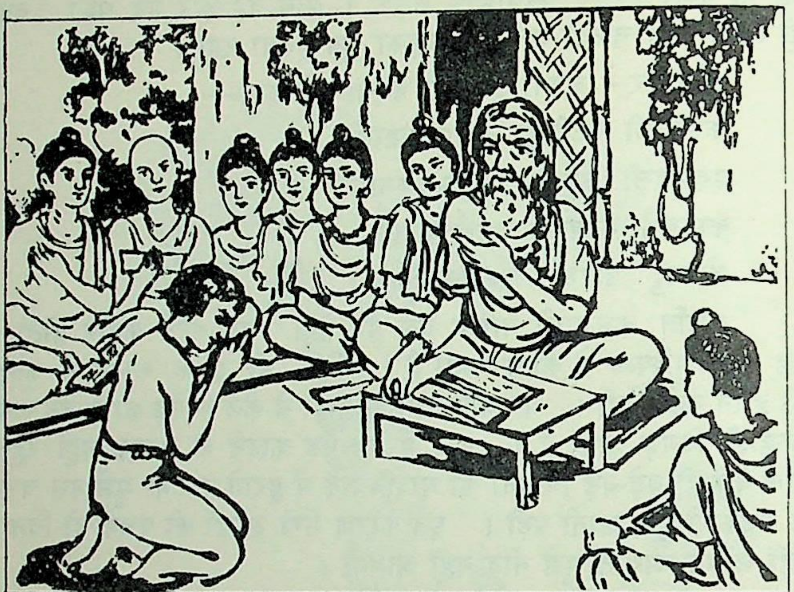
तोररदु ईरिखुं तुंजादेन कण।

अर्थात्, करूंगाली नामक एक पेड़ है। वह बहुत कठोर होता है। वह बहुत मुश्किल से काटा जाता है। फिर भी इसके काटने से कुल्हाड़ी की हानि नहीं होती। पर यदि उसी कुल्हाड़ी से केले के पेड़ को काटने लगे तो कुल्हाड़ी बिगड़ जाती है। बाद में वह पेड़ काटने के लायक नहीं रहती। ठीक वैसे ही बड़े-बड़े विद्वानों को वादविवाद में हराने पर भी मुझे इस चरवाहे के लड़के से हार खानी पड़ी। इस कारण मेरी आँखों की पलकें दो दिन तक नहीं लगेंगी, अर्थात् मुझे नींद नहीं आयेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"पूज्य गुरुदेव ! मैं आप के गुरुकुल में अध्ययन करने के लिए आया हूँ।"

सत्यकाम

रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री

गौतम ऋषि के आश्रम में विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। इसका कारण यह था कि उनके पढ़ाने-लिखाने का ढंग जितना आकर्षक था, उतनी ही सुन्दर लोक जीवन की भी वे शिक्षा देते थे। समूचे देश में गौतम के विद्यार्थियों की धाक रहती थी, और देश के कोने-कोने से उस समय विद्यार्थियों के प्रवेश करने की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी, जब कि अध्ययन का नया वर्ष चालू होता था।

एक वर्ष जब प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की भीड़ कम हो गई और अध्ययन का क्रम चलने लगा, तब एक दस वर्ष के सुन्दर तथा स्वस्थ बालक ने आकर गौतम के चरण स्पर्श किये। उसके हाथ में न समिधा थी और न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर में मूंज की मेखला। मृगचर्म और जनेऊ भी उसने नहीं धारण किया था। विद्यार्थियों से घिरे हुए गौतम का चरणस्पर्श उसने जिस साहस से किया, उसी साहस से विनयपूर्वक उसने निवेदन भी किया। उसने कहा—

"पूज्य गुरुदेव। मैं आपके गुरुकुल में अध्ययन करने के लिए आया हूँ। मैं आपकी आज्ञा के अनुसार ही चलूँगा और गुरुकुल के नियमों का विधिवत् पालन करूँगा। मैं आपकी शरण में हूँ, मुझे स्वीकार करें, गुरुदेव।"

सीधे-सादे और सरल प्रकृति वाले बालक के इन निश्छल शब्दों से गौतम का हृदय द्रवित हो गया, और उधर आश्रम के विद्यार्थियों में फुसफुसाहट शुरू हो गई।

गौतम ने प्यार भरे स्वर में पूछा—"बेटा! तेरा नाम क्या है? तेरा गोत्र क्या है? और क्या तेरे पिता जी नहीं हैं, जो तू यहाँ अकेले ही आया?"

विद्यार्थियों का समूह, चित्र लिखे की भाँति उस बालक की ओर देखने लगा। बालक ने विनय भरी वाणी में हाथ जोड़ कर कहा—"पूज्य गुरुदेव! अभी मेरा नामकरण संस्कार भी नहीं हुआ है और न मुझे अपने गोत्र तथा पिता जी के बारे में ही कुछ मालूम है। अपनी माता जी से पूछ कर मैं आपको यह सब बता सकता हूँ। किन्तु भगवन्! मैं आपकी शरण में हूँ और प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं गुरुकुल के सभी नियमों का पालन करूँगा। आप मुझे अस्वीकार न करें गुरुदेव!"

बालक के इस उत्तर से शिष्य-मंडली दंग रह गई। एक ने अपने साथी के कान में कहा—"भाई, विचित्र विद्यार्थी है! देखो न, इसे अपना नाम और गोत्र भी नहीं मालूम है। इतना ही नहीं, अपने पिता को भी यह नहीं जानता! किन्तु भाई, है बड़ा ढीठ और सरल। इसे देख कर न जाने क्यों मुझे भीतर से बड़ा स्नेह हो रहा है।"

साथी ने कहा—"चलो मित्र! अरे! यह किसी शूद्र का बालक है। अपने को छिपाने के लिए यह सब बातें बना रहा है।"

एक दूसरे छात्र ने धीरे से कहा—"भाई! गुरुदेव इससे बड़े प्रभावित दिखाई पड़ रहे हैं। चलो, ठीक है, बेचारा पढ़-लिख लेगा, आदमी बन जायगा।"

एक काने छात्र ने अपने ऐंचाताने साथी को झकझोरते हुए धीरे से कहा—"यार! गुरुदेव यह क्या कर रहे हैं? क्या अब ऐसे वर्णसंकर छात्र भी गुरुकुल में लिये जायेंगे? अन्धेर हो जायगा!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐंचाताना व्यंग कसते हुए बोला—"भाई ! क्या ठिकाना है। देखो न, दस बरस का हो गया, अभी तक इसका जनेऊ भी नहीं हुआ है।"

नये बालक ने विद्यार्थियों की यह कानाफूसी सुनी, किन्तु वह बराबर गौतम के मुँह की ओर ही देखता रहा। थोड़ी देर बाद गौतम ने सस्नेह कहा—"बेटा ! तुम जाकर अपनी माता से अपने गोत्र तथा पिता का नाम पूछ आओ। मैं तुम्हें अवश्य अपने आश्रम में प्रविष्ट करूँगा।"

बालक गौतम के चरणों पर गिर पड़ा और कृतज्ञता से भरे गद्गद् कंठ से बोला—"गुरुदेव ! मैं ऐसा ही करूँगा।"

बालक चुपचाप अपने निवासस्थान की ओर वापस चला गया।

पांच छः दिनों बाद सायंकाल में जब गौतम शिष्यों समेत सन्ध्या-वन्दनादि से निवृत्त होकर बैठे थे, वह बालक आया। आते ही उसने गुरुदेव के चरणस्पर्श कर समस्त छात्रमंडली का अभिवादन किया। गौतम ने पूछा—"बेटा ! क्या अपनी माता से सब पूछ कर आ गये ?"

बालक ने सविनय उत्तर दिया—"हाँ महाराज ! मैं पूछ कर आ गया हूँ। मेरी माँ ने कहा है कि वह मेरा गोत्र नहीं बता सकती, और न मेरे पिता का नाम ही उसे मालूम है। अपनी युवावस्था में वह साधु-सन्तों की सेवा में रहती थी, उन्हीं दिनों मेरा जन्म हुआ था। हाँ, मेरी माँ का नाम है जबाला। यदि उसके नाम से मेरा काम बनता हो, तो मुझे अपने चरणों में ले लीजिये गुरुदेव।" बालक यह कह कर फिर गौतम के चरणों में गिर कर सिसकियाँ भरने लगा।

छात्रमंडली स्तब्ध रह गई। गौतम के आश्रम में इस प्रकार की यह पहली घटना थी, जब किसी छात्र के पिता और गोत्र का भी पता नहीं लगा था।

गौतम उठे, और उन्होंने उस सुन्दर एवं निर्भीक बालक को उठा कर अपनी छाती से लगा लिया और गद्गद् कंठ से कहा—"वत्स ! तुम्हारी सत्यता तथा सरलता ने मुझे बाँध लिया है। तुम मेरे आश्रम में निर्भय होकर रहो, मैं तुम्हें सभी शास्त्रों की विधिवत् शिक्षा दूँगा। मैं तुम्हारी सत्यप्रियता के कारण तुम्हारा नाम 'सत्यकाम' रखता हूँ, और तुम्हारी माता के नाम पर तुम्हारा 'जबाला' नाम भी होगा। मैं तुम्हें ब्राह्मण घोषित करता हूँ, क्योंकि सच्चे ब्राह्मण के सिवा आचरण की ऐसी शुद्धता अन्यत्र नहीं मिलती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक कृतार्थ हो गया। कृतज्ञता के आँसुओं से उसका दमकता हुआ चेहरा भीग गया। उधर छात्रमंडली चुपचाप गौतम की इस अपूर्व घोषणा पर विचार करती रही।

गौतम ने अपने ही उपकरणों से सत्यकाम का उपनयन संस्कार किया और पाँच कुलपतियों की उपस्थिति में उसे बटु का वेश प्रदान किया। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भाँति सत्यकाम की निष्ठा, योग्यता और व्यक्तित्व का मनोरम विकास होने लगा। थोड़े ही दिनों में वह गुरुकुल का सर्वप्रिय छात्र बन गया, किन्तु अभी तक आचार्य ने उसकी विद्या का श्रीगणेश नहीं किया था। सत्यकाम को इसकी चिन्ता भी नहीं थी।

एक दिन आचार्य ने सत्यकाम को बुला कर सभी छात्रों की उपस्थिति में कहा--"बेटा! मैं तुम्हें एक कठिन काम से आश्रम के बाहर भेजना चाहता हूँ। ये सामने चार सौ बूढ़ी मरियल गौएं खड़ी हैं, इन्हें तुम लेकर दूर जंगल में चले जाओ और जब ये चार हज़ार हो जायें तब इन्हें वापस लौटा लाना।"

सत्यकाम निहाल हो गया। गद्‌गद् वाणी से बोला—"गुरुदेव की आज्ञा को मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ। मैं ऐसा ही करूँगा भगवन्।"

देखने वाले छात्रों की आँखों में आँसू छलक आये, जब सत्यकाम उन मरियल बूढ़ी गौओं को लेकर अकेले ही सघन बन की ओर चला। किन्तु सत्यकाम की खुशी का पारावार नहीं था। वह आनन्द-समुद्र की लहरों पर उछलता हुआ गौवों को हाँकते हुए इस प्रकार चला जा रहा था, जैसे सम्पूर्ण विद्या की समाप्ति कर अपनी माँ के पास वापस जा रहा हो।

सत्यकाम ने उन बूढ़ी मरियल गौओं की ऐसी निष्ठा से सेवा की, ऐसा पालन-पोषण किया कि वे सब सुख से खा-पीकर जवान बन गईं, और सात वर्षों के भीतर उनकी संख्या चार हज़ार तक पहुँच गई। एक दिन प्रातःकाल सत्यकाम जब सन्ध्या-वन्दन में तल्लीन था, गौओं के समूह में से एक महान् वृषभ के मुँह से उसे मानव बोली सुनाई पड़ी। घनघोर जंगल के बीच वर्षों बाद मानव का प्यार भरा स्वर सुन कर सत्यकाम का ध्यान स्थिर नहीं रह सका। उसने आँखें खोल कर जब देखा तो वह महान् वृषभ उसके सामने खड़ा होकर कह रहा था—"आयुष्मान! अब हमारी संख्या चार हज़ार हो गई है, हमें गुरु के आश्रम में वापस ले चलो, किन्तु आश्रम जाने के पूर्व मैं तुम्हें कुछ उपदेश भी करना चाहता हूँ, तुम मेरी ओर देखो।"

15-6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् वृषभ की अपूर्व एवं प्रेमभरी मानव-वाणी के हृदय में हर्ष का समुद्र उमड़ा दिया। वह गद्गद् कंठ से हाथ जोड़कर बोला—"मैं इसके लिए प्रस्तुत हूँ भगवन्।"

महान् वृषभ ने सत्यकाम को सेवाव्रत का उपदेश देकर कहा—"इसके अनन्तर तुम्हें क्रमशः अग्नि, हंस और जल कुक्कुट के द्वारा उपदेश मिलेगा और तदन्तर तुम्हारे गुरुदेव तुम्हें लौकिक विद्याओं का दान करेंगे।"

सत्यकाम कृतार्थ हो गया। चार हज़ार गौओं के साथ वह अग्नि, हंस और जल कुक्कुट के अलौकिक उपदेशों को प्राप्त कर जब गौतम के आश्रम में पहुँचा तो वहाँ प्रसन्नता का पारावार न रहा। सभी छात्रों समेत आचार्य गौतम ने देखा सत्यकाम का तेजस्वी शरीर ब्रह्मतेज की अलौकिक आभा से चमक रहा था। उसके दमकते चेहरे पर सूर्य का तेज और चन्द्रमा की कांति थी, अंगों-अंगों से शोभा और संतोष का स्रोत फूट रहा था। समूचे आश्रम ने चकित नेत्रों से सत्यकाम की शोभा और सन्तोष श्री का पान किया। चार हज़ार सुन्दर, स्वस्थ, नीरोग और दूध देनेवाली गौओं से गौतम का आश्रम स्वर्ग बन गया।

तदन्तर सत्यकाम ने गुरु के चरणों में बैठ कर, उन लौकिक विद्याओं को बहुत थोड़े ही समय में प्राप्त कर लिया, जिनके लिए अन्य ब्रह्मचारियों को अपनी लम्बी आयु बितानी पड़ती थी। निरभिमानिता, परदुःखकातरता, सेवापरायणता तथा निष्ठा ने उसकी लौकिक एवं पारलौकिक विद्याओं को इतना चमका दिया कि गौतम के आश्रम में ही वह एक महान् पंडित के रूप में विख्यात् हो गया और चारों ओर उसकी यश चन्द्रिका छिटक गई।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारह सिरों का नाग

चोला विष्णु

एक राजा था। एक रानी थी। कुछ दिन बाद रानी गुज़र गई किन्तु दो सन्तान छोड़ गई—एक लड़का, एक लड़की।

बाद में राजा ने दूसरा विवाह कर लिया। किन्तु यह नई रानी पहली रानी की दोनों सन्तानों को बिलकुल नहीं चाहती थी। सदा इसी सोच में रहती थी कि किसी न किसी तरह इन दोनों को मार दिया जाय। एक बार लड़की को प्यास लगी। बाल सुलभ स्वभाव से उसने विमाता से कहा, "अम्मा प्यास लग रही है, छाछ पिला दे।" यही समय उपयुक्त समझ कर विमाता ने एक छोटे-से सांप के बच्चे को छाछ में डाला और उसे ही लड़की को पिला दिया। विमाता सोचती थी कि इससे यह लड़की मर जायगी। लेकिन परिणाम उलटा हुआ। लड़की मरी नही। उसके पेट में सांप दिन-दिन बढ़ने लगा जिससे लड़की का पेट फूलने लगा। विमाता को चिन्ता होने लगी कि लड़की मरी क्यों नहीं? और दिन-दिन इसका पेट बढ़ने क्यों लगा? ऐसी दशा में उसे एक शरारत सूझी। लड़की व लड़के, दोनों पर चारित्रिक दोष का आरोप लगाया गया। इतना ही नहीं वरन् विमाता अड़ोस-पड़ोस के लोगों में इसका प्रचार भी करने लगी। इससे वे दोनों भाई-बहन चिन्ता में पड़ गये। सोचते-सोचते एक दिन लज्जा के मारे घर से निकल गये और एक घने जंगल में जा पहुँचे। बेचारे चलते-चलते थक भी बहुत गये थे। लड़की को प्यास लगी। भाई से कहा, "भाई! प्यास लग रही है, पानी पिलाओ।" आस-पास कहीं पानी नहीं मिला। मिलता भी कहाँ? वह जंगल जो ठहरा। उसे लड़के ने एक पेड़ पर चढ़ कर चारों ओर देखा कि कहीं पानी है या नहीं। पानी तो नज़र नहीं आया, किन्तु दूर पर एक बड़ा नगर दिखाई दिया। बस, उसकी जान में जान आ गई। दोनों भाई-बहन वहाँ पहुँच गये।

उस शहर में एक बुढ़िया—जिसका नाम पेदरासि पेद्दमा था, रहती थी उसके कोई सन्तान नहीं थी। किन्तु ज़मीन-जायदाद खूब थी। ढोर-डंगर भी बहुत थे। इनके साथ ही साथ उस बुढ़िया ने एक बन्दरी और एक बन्दर भी पाल रखा था। बन्दर रोज़ ढोर-डंगर चरा लाता, दूध दुह कर घर में रखता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती-बाड़ी आदि बाहर का सारा काम सम्भालता था। बन्दरी दूध गर्म करती, जमाती, बिलोती, छाछ बेचती। घर के भीतर का सारा काम सम्भालती थी। इसलिए वह बुढ़िया इस बन्दर-बन्दरी को ही लड़का-लड़की समझती थी। ये दोनों उस बुढ़िया के अवलम्ब थे।

संयोगवश पेदरासि पेद्दमा के घर वे भाई-बहन पहुँच गये। वे जंगल में घूमते-घूमते बहुत थक गये थे। देखने में किसी राज-परिवार के लगते थे। उस बुढ़िया ने दूध आदि पिला कर उन्हें आश्रय दिया। उसी दिन से ये दोनों भाई-बहन भी उस बुढ़िया के अवलम्ब बन गये। बुढ़िया भी उन्हें अपनी लड़की व लड़का मानने लगी। कुछ दिन इस तरह सुख-चैन के साथ बीत गये।

उस बुढ़िया के घर रोज़ सात घड़े दूध होता था। इसे गर्म करना, जमाना आदि भारी काम था। उसे बन्दरी सम्भालती थी। एक दिन दूध गर्म हो रहा था। सहसा बन्दरी उसमें गिर पड़ी। बस क्या था, उसकी तुरन्त मृत्यु हो गई। इससे बन्दर को भारी दुःख हुआ। जोड़े के बिना उससे रहा नहीं गया। अकेला रहना व्यर्थ समझ कर उसी गर्म दूध में पड़ कर बन्दर भी बन्दरी के पास पहुँच गया। इन दोनों की मृत्यु से बुढ़िया को काफ़ी दुःख हुआ। लड़की और लड़के के सहारे वह जीवित रह सकी अन्यथा वह भी मर जाती। दोनों की श्राद्ध-क्रिया यथाविधि की गई। कुछ दिन के बाद पेदरासि पेद्दमा की भी मृत्यु हो गई। उसकी भी श्राद्ध-क्रिया विधिपूर्वक भाई-बहन ने कर दी।

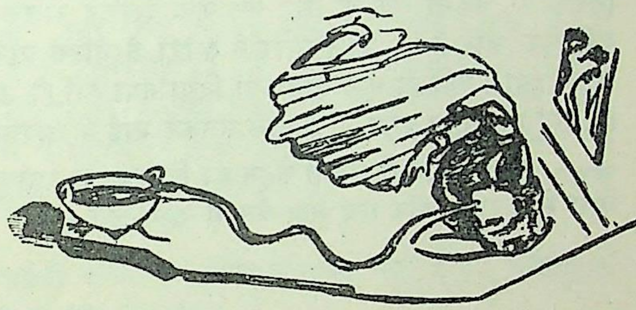
अब ये भाई-बहन उस बुढ़िया की सम्पत्ति के मालिक बन गये। भाई रोज़ गायें चराता था और दूध दुह कर घर में रखता था। बहन दूध गरम करती, जमाती, बिलोती। बहन को एक आदत सी पड़ गई थी कि वह दूध गर्म करती-करती सो जाती थी। ठीक उसी समय उसके मुँह से वह साँप—जो उसके पेट में बढ़ रहा था—निकलता, इन सात बर्तनों का दूध पी जाता और लौट कर लड़की के पेट में चला जाता। लड़की जब नींद से उठ कर देखती तो दूध की एक भी बूँद नहीं मिलती। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। भाई को भी यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यह सारा का सारा दूध कहाँ चला जाता है? आखिर अपनी बहन पर भी सन्देह हुआ कि कहीं यह पी तो नहीं लेती? परन्तु इस बात पर भी उसको पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ। वह सोचने लगा कि भला अकेली लड़की सात बर्तनों का दूध कैसे पी सकती है? खैर, कुछ भी हो, भाई ने निश्चय कर लिया कि इसका पता चलाना ही चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन यथा-समय सुबह-सुबह सारी गायों का दूध निकाला गया और सात बर्तनों में भर कर रख दिया गया। उस दिन भाई गायें चराने नहीं गया। वह दूध के गायब होने का पता लगाना चाहता था। अतः घर के एक कोने में छिप कर बैठा रहा।

रोज़ की तरह बहन ने सात बर्तनों का दूध सात चूल्हों पर चढ़ाया और स्वयं लेट गई। बस, लेटने की देर थी कि उसके मुँह से भारी साँप निकल आया और सातों बर्तनों का दूध एक क्षण में पी गया। यह तमाशा भाई छिप कर देख रहा था। ज्यों ही वह साँप लौट कर बहन के मुँह में घुसने लगा, त्यों ही उसे तलवार से काट कर उसके तीन टुकड़े कर दिये। उन टुकड़ों को नगर के दक्षिण की ओर दूर ले जाकर फेंक दिया। पीछे से जब बहन अंगड़ाई लेती हुई-सी जागी तो सुस्ती का अनुभव करने लगी। इतने में भाई आया और बहन से बोला, "देखो बहन, यदि तुम्हें नगर के बाहर जाना हो तो उत्तर, पश्चिम तथा पूर्व की ओर जाओ, किन्तु दक्षिण की ओर मत जाना।" अब बहन के मन में यह जिज्ञासा पैदा हो गई कि भाई ने दक्षिण जाने से क्यों रोका है? यह वह जानना चाहती थी। उसके लिए दक्षिण दिशा स्वयं एक प्रश्न-चिन्ह बन गई। वह अपने मन को रोक न सकी।



बस, लेटने की देरी थी कि उसके मुँह से भारी साँप निकल आया और सातों बर्तनों का दूध एक क्षण में पी गया।

एक दिन सुबह-सुबह वह दक्षिण की ओर चल ही पड़ी। वहाँ साँप के जो तीन टुकड़े फेंके गये थे, वे तीन फूल के पेड़ बने हुए थे उन पर सुन्दर लुभावने फूल खिले हुए थे। वह लड़की जो ठहरी, देखते ही उसका मन उन पर मुग्ध हो गया। उन्हें तोड़ लाई। उन फूलों को खुशी-खुशी उसने अपने भाई के जूड़े में खोंस दिये। ज्यों ही जूड़े में खोंसा, त्यों ही उसका भाई बारह सिरों वाला नाग बन कर भाग निकला और पास के एक बिल में घुस गया। सहसा लड़की आश्चर्य में पड़ गई। वह अकेली रह गई और रोने लगी। इतने में एक राजकुमार घोड़े पर सवार होकर उस रास्ते से आ निकला।

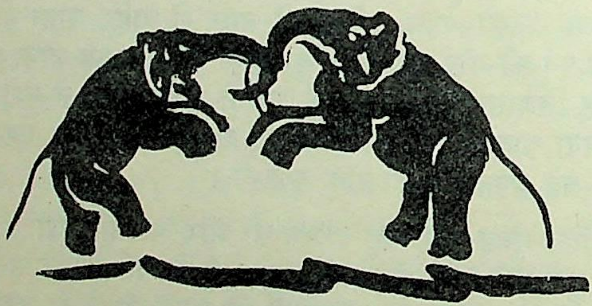
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने रोती हुई लड़की को देखा और उससे रोने का कारण पूछा। लड़की ने सारा हाल कह सुनाया। सारा हाल सुनकर राजकुमार ने कहा—"हे राजकुमारी! तुम्हारे भाई को मैं वापस ला दूँगा। किन्तु एक शर्त है कि तुम्हें मुझसे शादी करनी होगी।" बेचारी लड़की मजबूर थी, करती क्या? उसने राजकुमार की शर्त मान ली।

राजकुमार ने बहुत से सपेरों को बुलाया और वह बाम्बी—जिसमें बारह सिरों वाला नाग बड़ गया था—खुदवाई। उसमें से सहस्त्रों साँप निकले। किन्तु एक के सिर पर फूल देखकर राजकुमारी चिल्ला उठी कि यही मेरा भाई है। राजकुमार ने सपेरों के ज़रिये साँप के सिर से फूल निकलवा दिया। ज्यों ही फूल निकलवा दिया गया त्यों ही उसका भाई सामने खड़ा हो गया। बहन द्वारा सारा हाल सुनकर भाई के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

बाद में भाई ने अपनी बहन का विवाह उस राजकुमार के साथ बड़े धूम-धाम से कराया और सब सुख-चैन से रहने लगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा का पुरस्कार

कुमारी उर्मिला

किसी नगर में एक राजा राज्य करता था। उसकी दो अत्यन्त सुन्दर राजकुमारियाँ थीं। इसी नगर में एक साधु नित्य-प्रति भिक्षा के हेतु आया करता था। दोनों राजकुमारियाँ उसे भिक्षा देने के लिये जाती थीं। साधु बड़ी राजकुमारी को तो यह आशीर्वाद देता कि 'सदा सौभाग्यवती रहो', किन्तु छोटी राजकुमारी से कहता कि 'सदैव प्रसन्न रहो'। रानी ने जब कई दिनों तक ऐसी बात सुनी तब उन्होंने साधु को बुलाया और इसका कारण पूछा।

साधु ने कहा, "छोटी कन्या का सौभाग्य अचल नहीं है। विवाह के एक वर्ष पश्चात् ही वह विधवा हो जायगी।"

यह सुनकर रानी अत्यन्त दुखी हुई और उसने साधु से इसका उपाय पूछा। बहुत अनुनय-विनय के पश्चात् उस साधु ने बताया कि यहाँ से सात समुद्र पार एक छोटा सा द्वीप है। वह एक अत्यन्त शानदार चमकीला भवन है, जिसमें एक बुढ़िया रहती है। उसके सात पुत्र और सात पुत्रवधुएं हैं। राजकुमारी वहाँ जाकर एक वर्ष तक बुढ़िया की खूब सेवा करे जिससे बुढ़िया प्रसन्न होगी। तब राजकुमारी उसे राज्य में ले आवे। उसी के हाथों से राजकुमारी की मांग में सिंदूर डलवाने से वह अखण्ड सौभाग्यवती हो सकती है।

यह बात सुनकर रानी ने राजा को बुलवाया और सारी बातें राजा से कहीं। राजा सोच में पड़ गया कि राजकुमारी उस द्वीप तक कैसे पहुँच सकती है तथा वहाँ वह किस ढंग से रह कर बुढ़िया की सेवा करेगी? उस ज़माने में स्टीमर आदि तो थे नहीं जिनके द्वारा राजकुमारी सात समुद्र को पार करती। अतः दूसरे दिन साधु ज़ब भिक्षा माँगने आया तब राजा ने उसे अपने महल में बुलवाया और उस द्वीप तक पहुँचने का उपाय पूछा। तब साधु ने राजा को सात मोती दिये और कहा—"हर एक समुद्र में एक मोती डाल देने से समुद्र में कमर तक पानी हो जायगा और राजकुमारी समुद्र पार कर लेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद साधु ने उसे एक सुपारी दी और कहा—"इस सुपारी को मुँह में डाल लेने से राजकुमारी अदृश्य हो जायगी। वह सबको देख सकेगी किन्तु उसे कोई नहीं देख सकेगा। इस प्रकार वह बुढ़िया के भवन में अदृश्य होकर रहकर उसकी सेवा कर सकेगी।" राजा साधु से बहुत प्रसन्न हुआ और उसका बहुत स्वागत-सत्कार किया।

इसके दूसरे दिन शुभ मुहूर्त में राजकुमारी सेवकों सहित रथ पर बैठकर द्वीप की ओर चल पड़ी। बहुत दूर चलने के उपरान्त उसे एक समुद्र मिला। समुद्र के किनारे पहुँच कर वह रथ से उतर पड़ी और रथ तथा सेवकों को वापस भेज दिया।

तब राजकुमारी ने एक मोती समुद्र में डाल दिया। ऐसा करने से खूब जोरों की आँधी आई और समुद्र का पानी धीरे-धीरे घटने लगा। घट कर वह राजकुमारी की कमर तक आ गया और तब आँधी भी शान्त हो गई। राजकुमारी ने बड़ी आसानी से समुद्र को पार किया। इसी तरह उसने सातों समुद्र पार कर लिये और वह उस द्वीप के बिलकुल निकट पहुँच गई। कुछ दूर चलने के पश्चात् उसे एक चमकीला भवन दिखाई पड़ने लगा। उसे देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुई और शीघ्र ही उसके निकट पहुँच गई। उसने साधु की दी हुई सुपारी को मुँह में रख लिया जिससे वह अदृश्य हो गई। तत्पश्चात् उसने महल में प्रवेश किया। वह महल अन्दर से भी बड़ा शानदार था।

पहले दिन तो राजकुमारी ने कुछ नहीं किया। उसने सभी कुछ भली भाँति देख-सुन लिया। उसने देखा कि बुढ़िया की बहुओं में काम करते समय बहुत लड़ाई-झगड़ा होता है जिससे बुढ़िया उन सब से बहुत रुष्ट तथा दुखी रहती है। यह देखकर राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मेरे लिए बहुत अच्छा अवसर है। दूसरे दिन से वह छिप कर सभी काम समाप्त कर देती और किसी को कुछ पता भी न चल पाता था कि किसने ऐसा किया। बुढ़िया का भी सारा काम वह बड़े अच्छे ढंग से कर देती थी। इस तरह एक वर्ष तक उसने बुढ़िया की खूब सेवा की। अन्तिम दिन जब वह भोजन बनाने लगी तब उसने खीर में चीनी के स्थान पर नमक डाल दिया तथा दाल एवं तरकारी में चीनी डाल दी। इस तरह उसने सभी कुछ उल्टा बना कर परोस दिया। जब बुढ़िया खाने बैठी तब वह बहुत क्रोधित हुई। उसने सभी से पूछा कि "आज किसने भोजन बनाया है? एक वर्ष तक किसने मेरी इतनी सेवा की है?" सभी ने कह दिया कि हमने एक वर्ष तक कुछ भी काम नहीं किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और न आज ही कुछ किया है। बुढ़िया बहुत चकित हुई और उसने कहा—"जो मेरी इतने दिनों तक सेवा करता रहा हो वह सामने आ जावे। मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ। वह जो वर चाहे माँग सकता है।"

इस पर राजकुमारी ने मुँह से सुपारी निकाल ली और वह बुढ़िया के सामने आ गई। उसने कहा—"मैं चाहती हूँ कि मेरा सौभाग्य सदा अचल



इस पर राजकुमारी ने कहा—"मैं चाहती हूँ कि मेरा सौभाग्य सदा अचल रहे।"

16–6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे।" तब बुढ़िया ने उसे आशीर्वाद दिया और उसकी बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया। वह राजकुमारी के साथ उसके राज्य में गई। वहाँ पहुँचने पर सारे राज्य में खूब खुशियाँ मनाई गईं। बड़ी धूम-धाम से राजा ने राजकुमारी का विवाह किया और बुढ़िया ने उसकी माँग में पहले सिंदूर डाल दिया जिससे वह सदा के लिए सौभाग्यवती हो गई।

जिस द्वीप में पहले बुढ़िया रहती थी वहाँ पहले अन्य कोई नहीं था केवल बुढ़िया का ही परिवार था। किन्तु बुढ़िया राजकुमार एवं राजकुमारी को उस द्वीप में ले गई और उनको एक सुन्दर महल रहने को दिया। कुछ ही वर्षों में वहाँ बहुत से लोग रहने लगे और कुछ ही दिनों में वह द्वीप बहुत उन्नति कर गया।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ जी की सलाह दरवाज़े तक

लेखक : नटवरलाल मालवी

सवाइचन्द सेठ एक बड़े व्यापारी थे। देश-देश में उनका व्यापार फैला हुआ था। कुछ सामान जहाज़ों से भी आता-जाता था और कुछ सामान गधे पर भी लाद कर ले जाते थे। सेठजी धान, कपड़ा, सोना, चांदी और ज़ेवरात के व्यापारी थे। इतना बड़ा व्यापार चलाने के लिए कई गुमास्ते और मुनीम रखे गये थे। सबसे बड़े मुनीमजी का नाम था डाह्यालाल।

एक बार ऐसा हुआ कि पड़ौसी राजा के घर शादी होने वाली थी। उसने सवाइचन्द सेठ के यहाँ कीमती ज़ेवरों के लिए आर्डर भेजा। सेठजी ने अपने पास जो कीमती से कीमती जेवर थे, वे सब दिखाये पर राजा को सन्तोष नहीं हुआ। राजा ने सोचा दिल्ली के बादशाह के घर में जैसे ज़ेवर होते हैं, ऐसे ज़ेवर चाहिए। राजा ने अपने दीवान से सेठजी को संदेशा भेजा कि आप हमारे लिए खास ज़ेवर दिल्ली से मंगवा सकें तो मंगवा दें, नहीं तो हमें कोई खास आदमी दिल्ली भेजना पड़ेगा।

सेठजी बोले:—"अररर! आपने यह क्या ठानी? मैं खुद अपने बड़े मुनीम को आज ही दिल्ली भेजूंगा और अच्छी से अच्छी चीज़ें मंगवा दूंगा।" दीवान ने कहा—"शादी को केवल दो महीने ही रह गए हैं। हमें सब सामान एक महीने पहले चाहिए। देर होवेगी तो काम नहीं चलेगा।"

सवाइचन्द सेठ हंस पड़े और बोले—"मैं अभी बड़े मुनीमजी को भेजने का इन्तज़ाम करता हूँ और बड़ी तेज़ भागने वाली ऊँटनी पर तो वह बीस दिन में सारा सामान लेकर वापस लौट आयेंगे। महीने की आखीर में सब ज़ेवर तैयार भी हो जायेंगे। इस बात से आप बेफ़िक्र रहें।"

बाद में सेठजी ने मुनीमजी को बुला कर सारी बात बताई और बोले—"डाह्यालाल जी आप आज ही दिल्ली जाने की तैयारी करो। अच्छे से अच्छा ज़ेवरात लाना है। राजा जी को २॥ लाख का माल चाहिए, लेकिन आप पांच लाख का माल ले आना, पसंद आयेगा तो वे तीन साढ़े तीन लाख का माल खरीद लेंगे। बाकी का माल फिर बेचा जायगा। लेकिन माल अच्छा लाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाह्यालाल ने जवाब दिया—"अच्छा जी मैं घर जाकर तैयार हो जाऊँ, इतने में आप ऊँटनी का इंतज़ाम करें। सिर्फ़ दो घंटे में चल पड़ूँगा।"

मुनीमजी घर जाकर कपड़े लत्ते की गठरी लेकर तैयार होकर आये। उतने में इधर ऊँटनी भी तैयार थी। मुनीमजी सवार हुए और ऊँटनी आगे बढ़ने लगी। सेठजी गली तक साथ चले और ठहर कर कहने लगे—"डाह्यालाल जी, चीज़ें खरीदने में खूब ध्यान रखना। हीरे एकदम खालिस चाहिएं, यानी खूब चमकीले चाहिएं और माणिक रंगदार चाहिएं और साथ में एक बात का और ध्यान रखना कि माल खरीदने में उत्सुकता नहीं दिखानी चाहिए, नहीं तो चीज़ के दुगुने दाम बैठ जायेंगे। माल तुलाने से पहले तराज़ू बट्टे भी देख लेना। नहीं तो भारी घाटा पड़ जायगा। यह मेरी सलाह ध्यान में रखना।"

मुनीमजी ज़रा हंसे और बोले—"अच्छा अच्छा, लेकिन सेठजी की सलाह तो दरवाज़ा तक ही होती है आगे नहीं। चलो अब तो राम राम।" इतने में तो ऊंटनी मुनीमजी ने तेज़ भगाई।

सेठजी जरा सोच में पड़ गये। मुनीम के आखिरी शब्दों से उन्हें बड़ा ही दुःख हुआ और इसमें उन्होंने अपना अपमान समझा। वह मन ही मन सोचने लगे क्या सेठजी की सलाह दरवाज़े तक ही होती है? उसका अर्थ तो यह हुआ कि मेरे शब्दों की मुनीमजी को कोई कीमत नहीं है। मुनीमजी अपने आप को मेरे से भी अधिक चतुर समझते हैं। और उनको अपनी चतुराई का नशा चढ़ा हुआ है। वह नशा भी उतारना पड़ेगा।"

सेठजी मन में ही जलने लगे। मुनीमजी को विदा करके लौटते ही उनको एक तरीका सूझा ... और हँस पड़े। घर पहुँच कर नाई को बुला कर मुंडन करवाया। नाई का नाम था भगारात। नाई से सेठजी बोले—"भगारात, ये मेरे कटे हुए बाल इधर ही रखना, ले मत जाना। मुझे उसकी ज़रूरत है।"

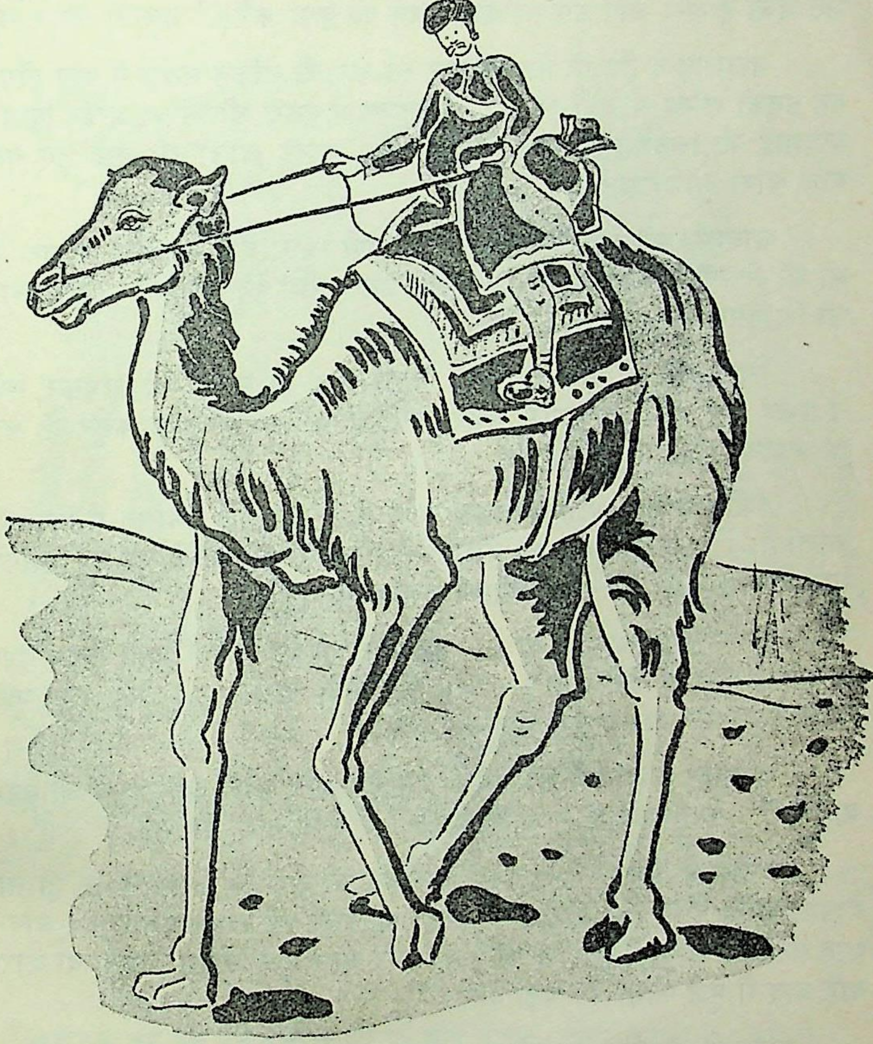
जब नाई चला गया तो सेठजी ने सारे बाल इकट्ठे कर लिये और अपनी पत्नी को देकर कहा—"इन बालों को बहुत ही सुन्दर बेल बूटे वाले कपड़े में रख कर सी दो, गठरी सी बना दो। चारों ओर गोटा किनारा और सलमा-सितारा भी लगाना।"

सेठानी ने गठरी सी दी। ऊपर कढ़ाई बेल-बूटे निकाले और जरीयानी झालर और सितारे लगाकर गठरी को अजीब रूप दे दिया। गठरी तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते ही सेठजी ने दूसरी उँटनी मंगवा कर दूसरे सवार के साथ गठरी डाह्या-लाल को भेजी और कहा कि सेठजी की तरफ़ से ये गठरी दिल्ली के बादशाह को भेंट देना।



"चलो, अब तो राम! राम!" इतने में तो ऊंटनी मुनीमजी ने तेज़ भगाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़े ही दिनों में मुनीम दिल्ली पहुँच गये और ज़ेवर खरीदने में लग गये। एक रोज़ दिल्ली के बादशाह को मिल कर गठरी भेंट करने का इंतज़ाम भी कर लिया। एक चांदी के थाल में रेशमी रूमाल से ढक कर बादशाह के चरणों में गठरी रख दी और बोले—"हमारे सेठजी ने जहाँपनाह की सेवा में यह तुच्छ भेंट भेजी है और आप इसे स्वीकार करने की कृपा करें।"

बादशाह ने हँस के भेंट स्वीकार तो कर ली लेकिन गठरी में क्या होगा, यह उनकी समझ में नहीं आया। कुतूहल में गठरी खोलने का आर्डर दिया। बादशाह की खिदमत में रहने वालों ने जब गठरी खोली तो कटे हुए सूखे बाल चारों ओर उड़ने लगे।

बादशाह यह देख कर गुस्से में आ गये और बोले—"ऐसी मज़ाक ! सो भी दिल्ली के बादशाह से ! पकड़ो इस मुनीम को और सौंप दो जल्लाद को कि इसको फांसी पर चढ़ा दे।"

सिपाहियों को पीछे दौड़ाया। रास्ते में से ही मुनीम को बांधकर, गले से पकड़ कर लाये। मुनीम घबरा गया बोला—"मेरा क्या कसूर है, वह तो बताओ।"

वज़ीर बोला—"अबे बेवकूफ़ के बच्चे ! बादशाह सलामत से दिल्लगी करता है। तेरी हिमाकत तो देखो, कटे हुए बालों की भेंट दे रहा है ! तुझको मार डालना है। तेरे को फांसी की सज़ा होगी।"

मुनीम बहुत चालाक था। वह थोड़ी सी देर में सारी बात समझ गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा—"ओ मेरे प्यारे बाल...। मेरे बाल मुझे वापस दे दो और बाद में मुझे चाहे मार डालो।"

बादशाह के आदमी आश्चर्य में डूब गये और कहने लगे—"अबे ओ क्या बात है ? क्या बकता है ? रोता क्यों है ? कुछ बता तो सही ?"

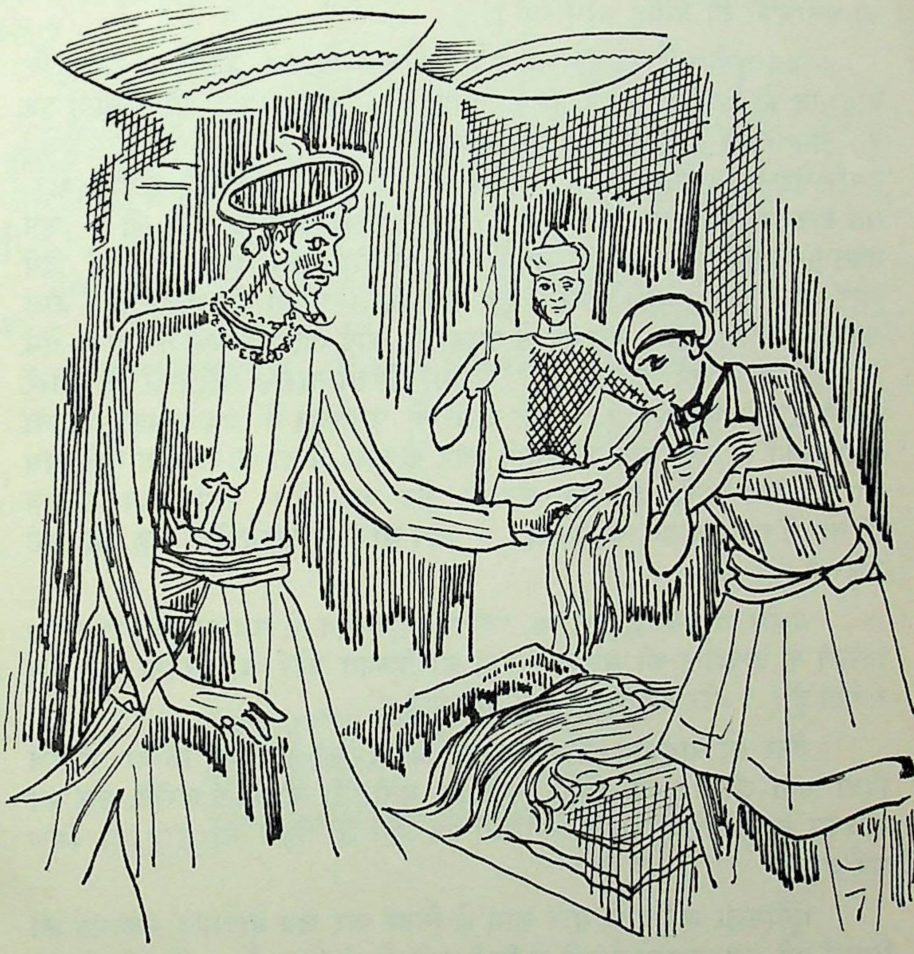
मुनीम ने कहा—"बादशाह सलामत को अगर बाल पसन्द न हों तो वापस करो। फिर मुझे मारो। मैं बालों को छाती पर रख कर मरूंगा। बादशाह सलामत के पास मुझे ले चलो और मेरे बाल मुझे वापस दिलवा दो और चाहे बाद में मुझे फांसी पर चढ़ा देना।"

राजा के आदमियों ने सोचा—ज़रूर इसमें कोई भेद होगा। वह मुनीम को राजा के पास ले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीमजी वहाँ जाकर रोते-चिल्लाते बादशाह को कहने लगे—"आपको हमारे सेठजी की भेंट पसन्द न आई तो कोई हर्ज़ नहीं। मुझे गठरी वापस करवा दीजिये। इसमें से आधे बाल मैं अपने लड़के को भेजूँगा और आधे को छाती पर बाँधकर मरूँगा। मुझे खुशी से फाँसी दे दे, लेकिन मेरे बाल मुझे वापस दिलवा दें।"



बादशाह यह देख कर गुस्से में आ गये और बोले—"ऐसी मज़ाक ! सो भी दिल्ली के बादशाह से ! पकड़ो इस मुनीम को और सौंप दो जल्लाद को कि इसको फांसी पर चढ़ा दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनकर बादशाह को ताज्जुब हुआ और पूछने लगे—"यह बाल किस के हैं और बालों में ऐसा क्या है जो तू वापस मांग रहा है ?"

मुनीमजी ने अब बात गंभीर होकर कही। "जहांपनाह ! बात जाने दें। आप से इतनी प्रार्थना है कि मुझे बालों के साथ मरने दें।"

बादशाह की उत्सुकता और भी जाग उठी और वह बालों का भेद समझाने का मुनीमजी को आग्रह करने लगे।

अब मुनीमजी को हौसला आया, बोले—"हमारे सेठजी ने सोचा कि बादशाह को किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। हाथी, घोड़ा सोना-चाँदी सब है। सेठजी की सबसे प्यारी चीज़ बाल थे इसीलिये उन्होंने अपने बाल भेजे। हमारे सेठजी गीरनार की यात्रा करने को गये थे। वहाँ कोई इल्मी फ़कीर-संत बाबा से मुलाकात हुई। सेठजी ने संत बाबा की बड़ी सेवा की। उस वक्त संत बाबा ने खुश होकर अपनी दाढ़ी के थोड़े बाल कतर कर उन्हें दिये और कहा कि यह बाल अपने सन्दूक में रखना। सेठजी की आज्ञानुसार बाल सन्दूक में रखा दिये। बस तब से उनको भी कोई बात की कमी न रही। ऐसे चमत्कारिक अजीब ये बाल हैं ! सेठानी जी तो नाराज़ थीं, फिर भी हमारे सेठ ने आपके लिये भेजे हैं। इन बालों के चमत्कार से अब आपका खज़ाना भरा रहेगा। एक बाल भी किसी दूसरे के हाथ में ना जाये, ऐसा मुझे हुक्म था, इसीलिये गठरी ही मैंने आपको भेंट कर दी। अगर आप नाराज़ हों तो मैं गठरी वापस ले जाऊँगा। आप जो सजा फरमायेंगे, वह भी मुझे मंज़ूर है।"

वज़ीर भी वहाँ हाज़िर था, "बोला हुज़ूर बात तो सच मालूम हो रही है। दिल्ली के बादशाह की मज़ाक उड़ाने की हिम्मत कोई बहादुर भी नहीं कर सकता है। और यह तो फिर भी बनिया है।"

फिर तो बादशाह के हुक्म से बालों को सोने के डिब्बा में रख दिया गया और हुक्म दिया गया कि मुनीमजी जो माल खरीदें, उस पर राजकर न लिया जाये और मुनीमजी घर जाने से पहले बादशाह को मिल कर जायें।

मुनीमजी खरीद के सारे काम से निबट कर जब बादशाह सलामत को मिलने गये, तब उन्होंने सेठजी के लिये जरी की पोशाक और मुनीमजी को एक रूपहली पोशाक और गरम शाल और एक हज़ार नकद और घर तक सही सलामत पहुंचाने के लिये २० सिपाही साथ में भेज दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीमजी तो सिपाहियों के साथ आगे बढ़े और जब एक माह बाद, पहुंचने के दो तीन मील बाकी रहे, तब एक आदमी जल्दी दौड़ा कर मुनीम के आने की खबर भेजी ।

सेठजी तो सोचते थे कि मुनीमजी को फांसी या कैद की सज़ा मिली होगी। सेठजी ने तो मुनीम का घमंड उतारने की तरकीब की थी, फिर भी मुनीमजी का आने का समाचार सुन के मुनीम को लेने को गये और सबको धूमधाम से घर लाये ।

खाना खाने के बाद मुनीम ने सेठजी को जरी की पोशाक और टैक्स माफ़ी की बात बताई और साथ में यह भी कहा कि सेठजी की सलाह तो दरवाज़े तक ही होती है। सेठ सब बात जानकर बड़े खुश हुए और मुनीमजी की होशियारी की तारीफ़ करके बोले कि सच है कि सेठ जी की सलाह तो दरवाज़े तक ही होती है। समय पर तो अपनी अकल ही काम आती है।

बाद में सिपाहियों को इनाम देकर विदा दी और मुनीमजी का मान बढ़ा दिया।

तब से यह कहावत शुरू हुई है कि "सेठजी की सलाह दरवाज़े तक"।

—अनुवादक-सरोज भट्ट



17-6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल्हारी की बानू

लेखक: डा० सरोजनी बाबर

देखा जाए तो कहानी बहुत पुरानी है। कई पीढ़ियों की सुनी। लाख जबानों की सुनाई। आसमान के देव-दरबारों की। इन्द्रदेव और उसकी छोटी लड़की की।

एक बार की बात है कि इन्द्रदेव ने अपनी सातों लड़कियों को अपने पास बुलाया और पास में बिठा कर हर एक से पूछा—"क्यों री बिटिया, तेरा जीना किसके बल-भरोसे है?" प्रश्न के पूछे जाते ही पहली छहों छबीलियों ने अपनी पारी आते जवाब में कह सुनाया, "बाबा·····बाबा, और किसके? तुम्हारे ही तो बल-भरोसे हम सभी खेलेंगी, गायेंगी।" लेकिन सातवीं छोटी लड़की को खुशामद पसन्द नहीं थी —वह झट बोल उठी, "ना···ना, मैं क्यों किसी के बल-भरोसे जिऊंगी? मैं आप अकेली जिऊंगी। खुद अपने बल-भरोसे जिऊंगी।"

छोटी लड़की की ये बातें इन्द्रदेव के दिल को जा चुभीं। वह जल-भुन कर रह गया। गुस्से के मारे उनका दिमाग़ भड़क गया। उसका शरीर थर-थर कांपने लगा। उसने तड़ाक से उसको एक तमाचा जड़ दिया और बोला, "कृतघ्न कहीं की! अकेली जिएगी क्या?" और दांत पीसते, हाथ मलते उसने उसे शाप दिया। यकायक आसमान गरज उठा, बिजली कड़क उठी, तारकाएं दमक उठीं। छोटी लड़की चार महीनों की बालिका बन गई। खड़ी थी कि अचानक हाथ की मुट्ठी चूसती हुई झूले में जा गिरी। टुकुर-टुकुर ताकने लगी।

इन्द्रदेव को इससे भी सन्तोष नहीं हुआ। चार महीने की इस अबोध बालिका को उसने एक सन्दूक में बन्द कर दिया। सन्दूक में अपनी मोहर लगवा दी। जासूस को आज्ञा दी कि इसे मृत्यु-लोक में चन्दनपुर के जंगल में छोड़ देना। सुनकर जासूस तो घबड़ा गया। लेकिन करे भी तो क्या? हुक्म की तामीली जो करनी थी। वह बिना चूं-चुपड़ किये उस मोहरबन्द सन्दूक को उठा कर चल पड़ा। बादलों की लाखों सीढ़ियों की नसेनी से उतर कर धरती पर पहुँचा। सात सागर पार किये। जंगल एक-एक कर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लांघे और बीहड़ बन के चन्दनपुर वाले हिस्से को उसने ढूंढ़ लिया। उसने सोचा ऐसी छोटी मासूम बच्ची को इस तरह के बियाबान जंगल में भला कैसे छोड़ दिया जाए। उसका मन ममता के जाल में उलझता ही रहा। उस सन्दूक की ओर वह देखता ही रह गया। इसी दौरान में उसे किसी आदमी की आहट मिली। अपना दिल उसने कड़ा किया और सन्दूक को बहुत ही हिफ़ाज़त से नीचे उतार कर रखा। "जुग-जुग जिओ, बेटी" आशीष दी। और अनिच्छा तथा उद्विग्नता से वहां से अपनी वापसी राह ली।

इधर तब तक चरवाहे भेड़ों को चराने वहाँ पहुँच गये। "ब्याँ·· ब्याँ····"—मिमियाती, इधर-उधर मनमाना चरती भेड़ों को उन्होंने अपने-अपने झुंडों में इकट्ठा कर लिया। और अब निश्चित चरागाहों में उन्हें चरने देने और खुद किसी पेड़ के तले विश्राम करने की वे सोच ही रहे थे कि उनमें से एक को वह सन्दूक दिखाई पड़ा। अब क्या था। अपने साथियों को पुकार कर उसने तमाम लोगों को वहाँ इकट्ठा कर लिया। उस स्थान पर एक सन्दूक को देखकर सभी हैरान थे। उनका कुतूहल बढ़ा। "हां" "ना" करते शंका-कुशंकाओं को उठाते आखिर सन्दूक को उठा लाये। भगवान् का नाम लेकर मोहर तोड़ दी। खोलकर देखा तो भीतर एक सोने-सी प्यारी, मखमल-सी मुलायम, मक्खन-मिश्री-सी मोहिनी बच्ची अंगूठा चूसती हुई खेल रही थी। उसकी अनूठी आभा आंखों में नहीं समाती थी। पहले तो सभी "यह क्या चमत्कार?" कहने और एक दूसरे की तरफ हैरानी से देखने लगे। लेकिन बच्ची को पाकर सभी बड़े प्रसन्न थे। बालिका के रूप में भगवान् की दया का साक्षात् हुआ। मन ही मन सभी बहुत ही आनन्दित हुए। वे उस बच्ची को लेकर गाजे-बाजे के साथ, ढोल पीटते, नाचते कूदते अपने मुखिया के दरवाज़े पहुँचे। मुखिया निस्सन्तान था। इस बच्ची को पाकर उसके मन की मुराद पूरी हुई। उसने उसे अपनी बेटी मान लिया। धूमधाम से समारोह मनाया गया। भरपेट भोजनादि के कार्यक्रम हुए।

होते-होते बालिका छोटी से बड़ी हुई। उसकी ज्योति को सरसाने सभी अपना-अपना स्नेह उढेलते। सब की आंख की पुतली हो गई वह। उन्होंने इस बच्ची का नाम रखा बानू। कलेजे के टुकड़े-सी सब ने उसकी देख-भाल की।

और फिर एक दिन बानू बड़ी हो गई। तब उसके ब्याह की चिन्ता सब को सताने लगी। हर कोई अपनी जान-पहचान में उसके योग्य वर को ढूंढ़ने लगे। एक बार तो उन्होंने भगवान का सामूहिक "सुमिरन" व्रत ही कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपना दिल उसने कड़ा किया और सन्दूक को बहुत ही हिफ़ाज़त से नीचे उतार कर रखा। "जुग-जुग जिओ, बेटी" आशिष दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। रातभर ढोल-मजीरे बजे। "बीरबा" देवता से मिन्नत की गई कि "इसे सुयोग्य वर मिले।" लेकिन बानू एक ही चतुर। सब को बुला कर बोली—"तुम मेरी यहां तक फ़िक्र न करो। मेरा ब्याह आपसे आप हो जाएगा। समय आने दो। तब तक मैं भगवान् शंकर की पूजा करती हूँ।" लोग चुप हो गये क्योंकि उस पर सब को बड़ा भरोसा था।

अनन्तर पूरे बारह बरस तो ऐसे ही आए और बीत गए। बानू की शिव-आराधना चालू रही। पर इसके अगले ही साल भगवान् शंकर बानू पर प्रसन्न हुए। मनुष्य के रूप में वे उसके सामने प्रगट हुए। उसने भगवान् के दर्शन किए। वह हर्षित हुई। देह की सुध-बुध भूल बैठी। भगवान् के चरणों में लोट गई। भगवान् बोले, "वर मांग, तेरी इच्छा पूरी होगी।"

उस पर वह बोली, "योग्य पति की प्राप्ति हो। गुणों में सात्विक, मन में सद्भावी, रूप में सुन्दर, सभी बातों में पूर्ण, ऐसा पति मुझे प्राप्त हो।"

भगवान् बोले, "तथास्तु। तेरी कामना पूरी होगी।" और फिर एक जोड़ी अपनी खड़ाऊं देकर बोले—"सामने की खड़ाऊं पर खड़ी हो जा। मेरा नाम लेना। खड़ाऊं तुझे इच्छित स्थान पर पहुंचा देंगी।"

भगवान् शंकर के कहे अनुसार ही हुआ। बानू खड़ाऊँ पर खड़ी रही। उसने भगवान् का नाम लिया। मन ही मन कुछ बोली। खड़ाऊँ ने उसे अचानक उठाया। आसमान पहुंचाया। सात बनों को लांघा। सात सरिताओं को पार किया। और उसे जेजुरी (महाराष्ट्र का एक तीर्थ-स्थान) पहुंचवा दिया।

उस समय मल्हारी और देवी म्हालसा* अपने रंग-महल में सोए थे। बानू ने वह सब देखा। सोच-विचार किया। घड़ी भर वहीं खड़ी रही। साड़ी का सफ़ेद छोर फाड़ा। छोटी उंगली से आंख का काजल निकाला। मल्हारी के लिए संदेश लिखा कि अमुक स्थान पर मुझे मिलना। फिर चढ़ कर लौट आई।

इधर तब तक मल्हारी की आंख खुल गई। बानू की पत्रिका उसके हाथ में पड़ी। उसने वह देखी, पढ़ी। पढ़ कर फूला न समाया। मोती-सा अक्षर। मन-लुभाने वाली भाषा। इतना बड़ा जेजुरी का देव, पर बानू के पीछे बावरा हो गया। "बानू-बानू" करता रहा। उसने सोचा कि इस म्हालसा की आंख बचाकर कोई जाए भी तो कैसे? आखिर एक

---

* महाराष्ट्र में देव मल्हारी और महालसा शिव-पार्वती का ही रूप माने जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरकीब निकल आई। चौपड़ खेलने का बहाना उसने रचा। और म्हालसा से शर्त बद कर बोला, "मेरे अनुकूल अगर पांसे पड़ते हैं, तो तू बारह साल मेरे घर कच्चे घड़े से पानी भरेगी। और तेरे अनुकूल अगर पांसे पड़े तो मैं बारह साल बनवास भोगूंगा। जंगल चला जाऊंगा।" म्हालसा चौपड़ खेलने में एक ही थी। हर वक्त पांसे अनुकूल ही पड़ते गये।

मल्हारी हार गया और शर्त पूरी करने के लिए वह बारह साल बनवास को चला गया। म्हालसा को बड़ा दुःख हुआ। लेकिन मल्हारी को अपार हर्ष क्योंकि वह बानू से मिलने जो उत्सुक था। उसकी मनचाही बात बन आई।

बनवास भोगने मल्हारी निकला तो रास्ते में भुलेश्वर भगवान् के दर्शन मिले। रुका। उसने भुलेश्वर को दंडवत प्रणाम किया। भुलेश्वर क्या थे, वे देवों के गुरु थे। उसकी उपेक्षा कर मल्हारी आगे बढ़ कैसे रुकता? दिल की बात बग़ैर बताए रह कैसे सकता? भुलेश्वर भगवान् ने इसकी बात सुन ली। आशीर्वाद दिया। बोले, "इस राजसी वेश-भूषा को त्याग दे। चालीस-पैंतालिस साल का हो जा। चरवाहे के यहां नौकरी कर ले। ईमानदारी से चल। तेरी मनोकामना पूरी होगी।"

मल्हारी ने भुलेश्वर महादेव की बात मानी। वह तुरन्त चन्दनपुर पहुँच गया और उसने चरवाहे के यहाँ नौकरी स्वीकार कर ली। वहां नित्य वह सात सौ भेड़ें व सात सौ बकरियां चराने ले जाता था। उन भेड़-बकरियों की मालकिन बानू थी। जो वह चाहता था, वह उसे मिल गया। मानों अन्धे को दो आंखे मिल गई। अपने दैवी चमत्कार से वह सबको चकित करने लगा। उसने बानू को प्रसन्न करने के लिए कोई कोर-कसर नहीं रखी। वह बड़े-सा-बड़ा काम अकेला ही पूरा कर लेता था। देखकर सभी दांतों तले उंगली दबाते। लेकिन कोई भी इस रहस्य को न समझ सका, न कोई बूझ पाया।

होते-होते, एक दिन की बात, मल्हारी भेड़-बकरियों के भारी झुंड को लेकर नहलाने नदी पर गया। वहाँ एक के दो, दो के चार, संख्या बढ़ते-बढ़ते नौ लाख भेड़ें इकट्ठा हो गईं। मल्हारी ने उन सबको ज़िन्दा उधेड़ दिया। माँस अलग किया। खून अलग किया। हड्डियां का एक ढेर अलग लगा दिया।

बानू पर जब यह बात प्रगट हुई, वह बहुत ही गुस्से में आकर वहाँ पहुँची। उसने मल्हारी को खूब आड़े हाथों लिया और भला-बुरा कहा। गुस्से के मारे वह थर-थर कांपने लगी। देखकर मल्हारी उससे बोला—"तेरा सब पहले-जैसा था, ठीक वैसा ही किये देता हूँ, यदि तुझे मेरी शर्त मन्ज़ूर हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर में वह बोली—"कौन-सी शर्त ?"

वह बोला—"मुझ से ब्याह कर।" सुनते ही बानू सोच में पड़ गई कि किसी गैर-अजनबी से वह ब्याह करे कैसे ?

लेकिन बहुतों ने सलाह दी कि इतना भारी नुकसान उठाने के बदले वह उस शर्त को मान जाए। और साथियों ने बानू के कान में धीमें से मंत्र फूँक दिया—"इस समय तो हाँ भर दे। भेड़ों के वापस मिलते ही उसे मार कर भगा देंगे।"

आखिरी में बानू ने मल्हारी की शर्त मंज़ूर की। तब आनन-फानन में भेड़ें ज्यों की त्यों बिलकुल निगली-उगली, पहले जैसी हो गईं। फिर तुरन्त मल्हारी ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, "अब चल मेरे साथ।" बानू ने उसे



आखिर में बानू ने मल्हारी की शर्त मंज़ूर की। तब आनन-फानन में भेड़ें ज्यों की त्यों बिलकुल निगली-उगली, पहले जैसी हो गईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह-तरह से समझाया। लेकिन उसकी एक न चली। आखिर उसे विवश होना पड़ा। उसके साथ चलने वह राज़ी हो गई।

और क्या ही चमत्कार! मल्हारी ने अपना असल रूप प्रगट करके जब बानू को अपने घोड़े पर उठा लिया तब तो उसके आनन्द की सीमा न रही। सभी चरवाहों को बुला उसने ब्याह की तैयारी क़रने को कहा। जिस भवन में वह रह रही थी, उसी भवन में राजी-खुशी मल्हारी से ब्याह करवा लिया। ब्याह धूम-धाम से मनाया गया। उनकी माला और धान के अक्षत के साथ देवों के समक्ष मंगल विवाह संपन्न हुआ।

अनन्तर कुछ दिनों बाद मल्हारी बानू को पहले-पहल भुलेश्वर लिवा लाया और पश्चात् जेजुरी पहुँच गया। मल्हारी को देखकर म्हालसा हर्षित हुई। पंचारती उतारने दौड़ी। लेकिन घोड़े पर मल्हारी के पीछे सटी बैठी बानू को देखकर वह ठिठकी। उसके हाथ से आरती का थाल गिर पड़ा। देखकर मल्हारी बोला, "यह मेरी पत्नी, तेरी सौत साथ में है।" म्हालसा आग-बबूला हो गई। गुस्से से अंगारा हो गई। और पहाड़ पर जाकर प्रचंड शिला-खंड हो गिरी। मल्हारी ने उसे समझाने की लाख कोशिश की, लेकिन सब फिजूल। आखिर उसने उसे आधे पहाड़ की स्वामिनी बनाया। आधा पहाड़ बानू को सौंपा। और खुद ऊपर मंदिर में रहा। दोनों पर अपना भंडार (बभूत) उसने उड़ाया। और बानू की प्राप्ति के आनन्द में उसने उसके साथ सुख का संसार चलाया।

खत्म कहानी हमारी। मिटी भूख-प्यास तुम्हारी।

Gurukula Library



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पुस्तक के लेखक

मुबारक अली—उदीयमान मुस्लिम लेखक, आपकी भाषा बहुत ही मुहावरेदार और शैली सरल है। बाल साहित्य में विशेष रुचि रखते हैं।

सावित्रीदेवी वर्मा—बाल-मनोविज्ञान पर 'आपका मुन्ना' (३ भाग) पुस्तक की लेखिका। बाल साहित्य में कथा-भारती, जंगल-ज्योति, शेक्सपियर की कहानियाँ, कथा-कहानी (बाल-पंचतंत्र) और उत्तर प्रदेश की लोककथाएं आदि पुस्तकें प्रकाशित। इनके अतिरिक्त आपकी निम्नलिखित पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुई हैं—नारी का रूप शृंगार, भारतीय भोजन विज्ञान, पारिवारिक समस्याएं, आदर्श माता-पिता, कैसे पकायें क्या खायें, बीमार की सेवा। आपकी कई पुस्तकें राज्यों द्वारा पुरस्कृत भी हुई हैं।

रामचन्द्र शर्मा—आप हिन्दी के उदीयमान लेखक हैं। आपकी कई एक कहानियाँ "बाल भारती" में छप चुकी हैं। इस समय आप भारत सरकार के "पत्र सूचना कार्यालय" में काम कर रहे हैं।

मन्मथनाथ गुप्त—'बाल भारती' के भूतपूर्व सम्पादक—अनेक पुस्तकों के लेखक जिनमें लगभग एक दर्जन उपन्यास हैं। बाल साहित्य में ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं: (१) फ्रांस की लोककथाएँ (२) बंगाल की लोककथाएँ (३) आदमी का जन्म।

शचीरानी गुर्टू—प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका। आपको 'साहित्य दर्शन' नामक पुस्तक पर भारत सरकार से पुरस्कार मिला है। आपकी अन्य पुस्तकें—विश्व की महान् महिलाएँ, महादेवी वर्मा आदि हैं।

चन्द्रकिरण सोनरेक्सा—हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी लेखिका। साहित्य सम्मेलन का पुरस्कार प्राप्त। आपके कई एक कहानी संग्रह निकले हैं।

बीरेन्द्र गोपाल—हिन्दी के उदीयमान लेखक।

जहूर बख्श—हिन्दी के पुराने, ख्याति प्राप्त मुस्लिम लेखक। आपकी शैली बहुत ही सधी हुई तथा भाषा मुहावरेदार होती है। 'बाल भारती' में आपकी कई एक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

भीष्म साहनी—हिन्दी के एक ख्याति प्राप्त कथाकार।

युधिष्ठिर कुमार—हिन्दी के उदीयमान लेखक। आकाशवाणी के दिल्ली स्टेशन में बहुत दिनों तक 'स्कूल बाईज़ प्रोग्राम' के इंचार्ज रहे।

भगवानचन्द्र गुप्त—हिन्दी लेखक।

अक्षयचन्द्र शर्मा—राजस्थान के एक उदीयमान लेखक।

शिवनयना मेहता—हिन्दी की उदीयमान लेखिका। आप बच्चों के साहित्य में विशेष रुचि रखती हैं।

18—6 PD(I&B)/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दलाल चत्ता—हिन्दी के उदीयमान लेखक। बाल साहित्य में आप की ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—'कश्मीर की लोककथाएँ' 'वीर बालक' (बाल एकाँकी संग्रह), 'रामराज्य के पथ पर।'

शान्ति गुप्ता—हिन्दी की उदीयमान लेखिका। आप दिल्ली की एक ख्याति-प्राप्त सफल महिला-वकील हैं।

हंसराज रहबर—उर्दू तथा हिन्दी के सफल लेखक। प्रेमचन्द जी पर आपकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। आपके कई एक उपन्यास और कहानी संग्रह भी निकले हैं।

टी० एन० एस० सीतारामन्—आप तमिल भाषी हैं परन्तु हिन्दी के बड़े प्रेमी हैं और बाल साहित्य में विशेष रुचि रखते हैं। 'बाल भारती' में आपकी कई एक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

रामप्रताप त्रिपाठी—संस्कृत के एक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान लेखक, साहित्य सम्मेलन के पुराने कार्यकर्त्ता। आपने संस्कृत की कई एक पुस्तकों का हिन्दी में सफल अनुवाद किया है।

चोला विष्णु—आपकी मातृभाषा तेलुगु है। हिन्दी में भी लिखना शुरू किया है। आप एक हरिजन कार्यकर्ता भी हैं।

उर्मिला कुमारी—'बाल भारती' की एक बाल लेखिका।

नटवरलाल मालवी—एक ख्याति प्राप्त गुजराती कथाकार।

डा० सरोजनी बाबर—आपने मराठी साहित्य में ख्याति प्राप्त की है। लोककथा संग्रह में विशेष रुचि रखती हैं।

मा०स०मु०ना०—फो०लि०वि०— ६ पी० डी० (प्राई० एण्ड बी०)/६१—८-८-६२—५०,०००.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar